यूनियन धारा
Union Dhara

जिल्द 41, सं. Vol. XXXXI, No.2, मुंबई अप्रैल – जून 2016

गृहपत्रिका • HOUSE MAGAZINE OF यूनियन बैंक ऑफ इंडिया Union Bank of India

अनुक्रमणिका Contents

यूनियन धारा UNION DHARA

अप्रैल – जून, 2016 April – June, 2016

प्रकाशन तिथि : 12.08.2016

महाप्रबंधक (मा.सं.)

आर. आर. मोहंती

General Manager (HR)

R. R. Mohanty

संपादक

सविता शर्मा

Editor

Savita Sharma

संपादकीय सलाहकार

देबज्योति गुप्ता

एच.एन. सक्सेना

केशव बैजल

राम गोपाल सागर

Editorial Advisors

Debjyoti Gupta

H. N. Saxena

Keshav Baijal

Ram Gopal Sagar

Printed and published by Savita Sharma on behalf of Union Bank of India and printed at SAP Print Solutions Pvt. Ltd. Lower Parel, Mumbai-400013 and published at Union Bank Bhavan, 239, Vidhan Bhawan Marg, Nariman Point, Mumbai-400021. Editor -Savita Sharma.

E-mail: savita.sharma@unionbankofindia.com

Our Address : Union Dhara, 11th Floor, Union Bank Bhavan, 239, Vidhan Bhavan Marg, Nariman Point, Mumbai - 400 021.

E-mail: uniondhara@unionbankofindia.com

Mob. No. 9920037916

Tel.: 22020853 / 22896545 / 22896590

Editorial 5

सभ्यता और संस्कृति 6

Unusual Folk Festivals of India 8

पश्चिम ओड़िशा के लोक महोत्सव 10

यह है लोक संस्कृति की शान 11

साहित्य जगत से... 12

'सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं' 14

हमारी योजनाएं 15

Uni One Diary 16

The lores and lures of Kannur 17

सांस्कृतिक समन्वय एवं विविधता का केन्द्र मध्य प्रदेश 18

Android likely to get a Kerala delicacy name Neyyappam! 21

"Madhubani" – The Portrait of Mithila . 22

बधाई 23

विधि–विधान 24

Goa 25

शिखर की ओर 26

बुंदेलखंड 27

Songs of the Soil 28

महान माँ 29

पुरस्कार और सम्मान 30

YAKSHAGANA 31

Bal Pratibha 33

सप्तधारा 34

कला–संस्कृति की धरोहर. 36

Overseas Activities at a Glance 37

लोक संस्कृति 38

कठपुतली कला 40

स्मृतियाँ–छत्तीसगढ़ की 42

करमा 44

हमें गर्व है 45

Sportingly Yours 46

Important Instruction Circulars 47

रज–संक्रांति 48

शुभमस्तु 49

राजस्थान की संस्कृति 50

जगन्नाथ पुरी रथ यात्रा 52

Project Utkarsh 54

यूनियन धारा – वार्षिक प्रतियोगिताएं 56

निवृत जीवन से..... 58

हेल्थ टिप्स..... 59

छठ पर्व..... 60

Face in the UBI Crowd 62

CROSSWORD 64

Know our Products 65

केंद्रीयकृत समाचार 67

समाचार दिर्घा 68

ग्राहक संबंध 70

कारोबार और समीक्षा 71

आयोजन और उत्सव 72

नये कदम 73

व्यंजन 74

आपकी पाती 75

इस पत्रिका में व्यक्त विचारों से प्रबंधन का सहमत होना अनिवार्य नहीं है.

Designed and Printed at **SAP Print Solutions Pvt. Ltd.**, Lower Parel, Mumbai - 400 013.

परिदृश्य Perspective

प्रिय साथियो,

यूनियन धारा का हर अंक एक नए कलेवर के साथ आप तक पहुंचता है. मुझे यह जानकर खुशी हुई कि इस बार भारत की लोक संस्कृति को केंद्र में रखकर इसे प्रस्तुत किया जा रहा है.

भारत विश्व के उन देशों में से है जिसका इतिहास विभिन्न संस्कृतियों के संघर्ष और समन्वय की झांकी प्रस्तुत करता है. लोक संस्कृति हमारे नागरिकों के परस्पर जुड़ाव की एक मजबूत कड़ी है, तभी तो देश के हर इलाके के त्योहार, पर्व, मान्यताएँ समूचे भारत में पूरी श्रद्धा व विश्वास के साथ मनाए जाते हैं. विविधताओं से भरपूर व एकता के सूत्र में बंधे देश में हमें विभिन्न जाति, धर्म, भाषा, रीति–रिवाजों का एक अनूठा संगम देखने को मिलता है. विभिन्न राज्य, जलवायु, रहन–सहन, खान–पान और सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से पृथक–पृथक होने के बावजूद भारत सदैव ही 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना को अपनाता चला है. यही इस राष्ट्र की सांस्कृतिक धरोहर है जो इस राष्ट्र में प्रेम, करुणा, सहानुभूति जैसे उदात्त भावों में निरंतर संचारित होती रहती है.

हम भारत के लोग जहां भी रहें अपनी लोक संस्कृति की जीवन शैली नहीं त्यागते. आधुनिकता को अपनाते हुए भी हम अपने संस्कार, मान्यताएं और रीति–रिवाज आदि को संजोये रखते हैं. विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित व प्रचलित सुसंस्कृत प्रथाएँ आज भी जीवंत हैं. चाहे वे खान–पान के मधुर व्यंजन हों, आकर्षक परिधान हों, कलात्मक चित्रकारी या शिल्पकारी हो, गीत–संगीत, नृत्य हो, धार्मिक सामाजिक उत्सव व मनोरंजन के पारंपरिक तरीके हों. सब में लोक संस्कृति की छाप स्वतः झलकती है और ऐसी ख्यात विधाओं के नाम स्थान विशेष से जुड़ जाते हैं.

हमारे देश से बड़ी संख्या में लोग एनआरआई के रूप में विदेशों में बसे व कार्यरत हैं. अपने देश में उनका निवेश व धनप्रेषण मात्र धनोपार्जन नहीं बल्कि उनके अपनों की समृद्धि व संस्कृतियों को सम्पन्न रखने का एक उद्देश्य भी है. इस लोक संस्कृति के आकर्षण ने देश को सदा मजबूती से जोड़ रखा है और ये क्षेत्रीय लोक संस्कृतियाँ भारतीय संस्कृति को वृहद रूप देती हैं. तभी तो देश से बाहर हमारी पहचान स्थानीय न होकर 'भारतीय संस्कृति' के रूप में प्रतिष्ठित होती है.

इन लोक संस्कृतियों को उन्नत बनाए रखने में हमारा बैंक भी अच्छा भागीदार बना है. मैं चाहूँगा कि हम ग्रामीण अंचल के हुनर, कला व कौशल को बढ़ावा देने हेतु आर्थिक मदद दें. सुदूर क्षेत्रों में कार्यरत हमारी शाखाएँ सामाजिक व सांस्कृतिक उत्थान के महत्व के कार्यों में भाग लें. इससे रोजगार के अवसर बढ़ेंगे व बचत को अच्छा आधार मिलेगा.

मेरा यही संदेश है कि हम देश की लोक संस्कृतियों के उज्ज्वल स्वरूप से जुड़कर देश के विकास में अच्छे मददगार की भूमिका निभाते रहें.

शुभकामनाओं सहित,
भवदीय,

प्रतिवारी..

अरुण तिवारी
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

Dear Unionites,

Every issue of 'Union Dhara' reaches you with a new flavour. This issue, I'm happy to learn, has its focus on 'Indian folk culture'.

India is among a few countries whose history exemplifies confluence of varied cultures and their harmonious integration. The 'folk culture' cultivates stronger bonding among fellow citizens, which reflect in collective celebration of various festivals and beliefs across the country. One witnesses a harmonious co-existence of varied castes, creeds, languages and rituals in our country known for 'unity amid diversity'. Variances across states - social, religious and cultural, including that of food and attire- notwithstanding, India has lived by the philosophy of 'vasudhaiv kutumbkam', seeing the whole world as one family. This indeed is the cultural heritage of the country that reverberates with noble feelings of love, compassion and empathy.

We, the Indians, wherever may be living, do not relinquish our 'way of life'. We indeed treasure our beliefs and practices while embracing modernity. Cultural norms and traditions are celebrated across geographies, through food & beverages, apparel, various art forms like painting, sculpture, music, dance, etc.; the folk culture manifest spontaneously in various religious festivities and popular entertainment. Regions often derive their distinguished fame through such artistic endeavours.

India has a large Diaspora, which remit their earnings back home, with a deep desire to help their dear ones and culture prosper. This cultural connect has ever strengthened the national unity and integrity. In fact, folk culture has helped broaden the horizons of India's cultural influence. In doing so, our cultural identity transcends the regional arena, and acquires a national character.

Our bank has been a proud stakeholder in enriching the folk cultures. I would like us to continue promoting rural crafts and skills with requisite financial assistance. Our branches should participate in socio-cultural initiatives, enabling job creation and promote savings.

Let us enable holistic development by associating with the brighter aspects of folk culture.

With warm regards,

Yours,

Tiwari

Arun Tiwari
Chairman & Managing Director

प्रस्तुत फोटो में (बाएं से दाएं) श्रीमती सविता शर्मा, संपादक, यूनियन धारा; श्री एस. एस. यादव, मुख्य प्रबंधक (रा.भा.); श्री अनूप कुमार श्रीवास्तव, भा.प्र.से., सचिव (रा.भा.) राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार; श्री विनोद कथूरिया, कार्यपालक निदेशक, यूनियन बैंक; डॉ. रघुराम जी. राजन, गवर्नर, भारतीय रिज़र्व बैंक; श्री एस. एस. मूंदड़ा, उप गवर्नर, भारतीय रिज़र्व बैंक; श्री केशव बैजल, महाप्रबंधक; श्री रामगोपाल सागर, सहायक महाप्रबंधक (रा.भा.) तथा श्री एन. के. दीक्षित, संपादक यूनियन सृजन, यूनियन बैंक.

ALVIDA

UNION DHARA WISHES HIM A VERY HAPPY AND ACTIVE RETIREMENT!

Shri RAKESH SETHI, Executive Director, retired from the services of our Bank on 30.06.2016 on attaining the age of superannuation. A grand function was organized on the day to bid a fond farewell to Shri Sethi. In his parting message, Shri Sethi expressed, "It has been a wonderful journey as we have together added strengths to the Bank amidst challenging times. Though it was only about three years for me at Union Bank, I have no hesitation in terming the same as my exciting and enjoyable years of professional life. The camaraderie of Unionites and a continuous aspiration for a better tomorrow is unmatched. With concerted efforts of everyone, the Bank could record improvement in efficiency & profitability of our ATMs. Digital reach per se increased significantly with more than two-third of transactions now happening through non-branch channels. The Bank has embarked upon a transformational journey under project "Utkarsh" aiming at digitally-enabled public sector bank with improved profitability and high customer centricity. Within a year of its implementation, I am happy to share that the results are very encouraging. Union Bank is on journey of 'Transform to Outperform' and I am sure, each one of you will play an important role in this drive. As regulatory and government policy shifts, I see Union Bank amongst few large banks that would shape growth of our economy. My advice to the youngsters of our Bank is to 'Dream Big'. You have the capacity to go ahead, spread your wings and fly high always carrying along your humility, honesty and willingness to help the customers."

संपादकीय Editorial

यूनियन धारा का यह अंक भारतीय लोक संस्कृति की छोटी–सी झलक है.जहाँ तक लोक–संस्कृति का प्रश्न है, यह मिट्टी से जुड़ी समाज की मौलिकता का पर्याय है. लोक–संस्कृति में रीतिरिवाज, परम्पराएँ, पर्व, जीने का सलीका सम्मिलित है.

एक ओर संस्कृति मानव के क्रमिक विकास की साक्षी है तो दूसरी ओर समाज के बीच प्रचलित धारणाओं का दर्पण भी है. लोक–संस्कृति हमारे पुरातन से जुड़ी विधा है और पीढ़ी दर पीढ़ी विरासत से अंतरित होती रहती है. कार्य–प्रणाली, नैतिक आदर्श एवं मूल्य–ये सभी हमारी लोक–संस्कृति का हिस्सा होते हैं. यहाँ तक, कि जीविकोपार्जन के लिए हम जिस संस्था में काम करते हैं, वहाँ भी हमारी मानसिक सोच व इससे प्रभावित हमारी कार्यप्रणाली से एक विशिष्ट संस्कृति बन जाती है.

इस अंक हेतु हमें बड़ी संख्या में रचनाएँ प्राप्त हुईं. संवाददाताओं और स्टाफ सदस्यों का भरपूर सहयोग मिला. कहना पड़ेगा, कि जितनी वैविध्यपूर्ण हमारी संस्कृति है, उतनी ही वैविध्यपूर्ण हमारे लेखकों की लेखनी भी है. सभी क्षेत्रीय कार्यालयों, शाखाओं से रचनाएँ प्राप्त हुईं हैं किंतु जहां से शत–प्रतिशत रचनात्मक सहयोग प्राप्त हुआ है– वह है हमारा स्टाफ प्रशिक्षण केंद्र, भोपाल. वहाँ से सभी स्टाफ सदस्यों ने रोचक और गुणवत्तापूर्ण सहयोग किया है. उनके इस सृजनात्मक सहयोग के लिए यूनियन धारा की ओर से साधुवाद एवं भविष्य की सृजनात्मकता के लिए ढेरों शुभकामनाएँ.

शेष कार्यालयों और संवाददाताओं से अनुरोध है कि वे भी रचनात्मकता की इस प्रतिस्पर्धा में स्वस्थ भावना से अधिक से अधिक प्रतिभागिता करें .

शुभकामनाओं सहित,

सविता शर्मा
संपादक

The issue of Union Dhara in your hand is a snapshot of Indian folk culture. As far as folk culture is related, it is equivalent to the life style of Indians which is deeply rooted in its soil. It also consists of traditions, customs, festivals and way of living.

Culture witnesses the chronological evolvement of human race as well as it is a reflection of the age old traditions and concepts. Folk culture is an element which has deep roots in our old age traditions. It penetrates into future generations automatically. Our working style, moral ideals and values- all are parts of our culture. Even a specific culture develops at our work place also according to our thinking and working style.

For this issue, we received a good many qualitative write-ups. There was remarkable co-operation from all the staff members as well as correspondents. Out and out, it has been underlined that our contributors are having very sharp and qualitative writing skill which is as vivid as our culture. However, contribution from all offices was good but I am proud to bring into your notice that our Staff Training Centre, Bhopal has contributed its 100%. Each and every staff member of this centre has contributed interesting, unusual and qualitative write-ups. Union Dhara salutes their endeavor and our best wishes for future contribution with the same zeal and sharpness of writing skill.

All our offices and correspondents are requested to participate in this creative race with healthy sense of competition.

With Best Wishes,

Savita Sharma
Editor

सभ्यता और संस्कृति

मनुष्य स्वभावतः प्रगतिशील प्राणी है. इसलिए वह बुद्धि के प्रयोग से अपने चारो ओर की परिस्थिति को निरंतर सुधारता रहता है. ऐसी प्रत्येक जीवन-पद्धति, रीति-रिवाज, रहन-सहन, आचार-विचार, नवीन अनुसंधान और आविष्कार, जिससे मनुष्य पशुओं और जंगलियों के दर्जे से ऊँचा उठता है तथा सभ्य बनता है, सभ्यता और संस्कृति का अंग हैं.

संस्कृति की अवधारणा: संस्कृति जीवन की विधि है. जो भोजन हम खाते हैं, जो कपड़े पहनते हैं, जो भाषा बोलते हैं और जिस भगवान की पूजा करते हैं, ये सभी संस्कृति के पक्ष हैं. सरल शब्दों में हम कह सकते हैं कि संस्कृति उस विधि का प्रतीक है जिसमें हम सोचते हैं और कार्य करते हैं. इसमें वे चीजें भी सम्मिलित हैं जो हमने एक समाज के सदस्य के नाते उत्तराधिकार में प्राप्त की हैं. एक सामाजिक सदस्य के रूप में मानव की सभी उपलब्धियाँ संस्कृति कही जा सकती हैं. कला, संगीत, साहित्य, वास्तु विज्ञान, शिल्प कला, दर्शन, धर्म और विज्ञान-सभी संस्कृति के पक्ष हैं, तथापि संस्कृति में रीति-रिवाज, परंपराएँ, पर्व, जीने के तरीके और जीवन के विभिन्न पक्षों पर व्यक्ति विशेष का अपना दृष्टिकोण भी सम्मिलित रूप धारण कर लिया है.

संस्कृति एक स्थान से दूसरे स्थान तथा एक देश से दूसरे देश में बदलती रहती है. इसका विकास स्थानीय, क्षेत्रीय अथवा राष्ट्रीय संदर्भ में होता है. उदाहरण के लिए हमारे अभिवादन की विधियों, खाने की आदतों में, सामाजिक और धार्मिक रीति-रिवाजों और मान्यताओं में पश्चिम से भिन्नता है. दूसरे शब्दों में, किसी भी देश के लोग अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक परम्पराओं के द्वारा पहचाने जाते हैं.

एक व्यक्ति जो निर्धन है, सस्ते वस्त्र पहने है. वह गरीब तो कहा जा सकता है परन्तु वह सबसे अधिक सुसंस्कृत व्यक्ति भी कहा जा सकता है. वह व्यक्ति, जिसके पास बहुत धन है, वह धनी तो हो सकता है पर आवश्यक नहीं कि वह सुसंस्कृत भी हो. अतः जब हम संस्कृति के विषय में विचार करते हैं तो हमें यह समझना चाहिए कि यह सभ्यता से अलग है. संस्कृति मानव के अन्तर्मन का उच्चतम स्तर है. मानव केवल शरीर-मात्र नहीं है. वह

है. संस्कृति हमारे जीने और सोचने की विधि में हमारी प्रकृति की अभिव्यक्ति है. यह हमारे साहित्य, धार्मिक कार्यों, मनोरंजन और आनन्द प्राप्त करने के तरीकों में भी देखी जा सकती है. संस्कृति के दो भिन्न उप-विभाग होते हैं- भौतिक और अभौतिक. भौतिक संस्कृति उन विषयों से जुड़ी है जो हमारे जीवन के भौतिक पक्षों से सम्बद्ध हैं: जैसे हमारी वेशभूषा, भोजन, घरेलू सामान आदि. अभौतिक संस्कृति का संबंध विचारों, आदर्शों, भावनाओं और विश्वासों से है.

संस्कृति का अर्थ: 'संस्कृति' शब्द संस्कृत भाषा की धातु 'कृ' (करना) से बना है. इस धातु से तीन शब्द बनते हैं 'प्रकृति'(मूल स्थिति), 'संस्कृति' (परिष्कृत स्थिति) और 'विकृति'(बिगड़ी स्थिति). जब 'प्राकृत' या कच्चा माल परिष्कृत किया जाता है तो वह 'संस्कृत' हो जाता है और जब यह बिगड़ जाता है तो 'विकृत' हो जाता है. अंग्रेजी में संस्कृति के लिये 'कल्चर' शब्द का प्रयोग किया जाता है जो लैटिन भाषा के 'कल्ट या कल्टस' से लिया गया है, जिसका अर्थ है जोतना, विकसित करना या परिष्कृत करना और पूजा करना. संक्षेप में, किसी वस्तु को इस तरह संस्कारित या परिष्कृत करना, कि इसका अंतिम उत्पाद हमारी प्रशंसा और सम्मान प्राप्त कर सके. यह ठीक उसी तरह है जैसे संस्कृत भाषा का शब्द 'संस्कृति'.

संस्कृति की तुलना आस्ट्रेलिया के निकट समुद्र में पाई जाने वाली मूंगे की भीमकाय चट्टानों से की जा सकती है. मूंगे के असंख्य कीड़े अपने छोटे घर बनाकर समाप्त हो गए. फिर नए कीड़ों ने घर बनाये, उनका भी अन्त हो गया. इसके बाद उनकी अगली पीढ़ी ने भी यही किया और यह क्रम हजारों वर्ष तक निरन्तर चलता रहा. आज उन सब मूंगों के नन्हें-नन्हें घरों ने परस्पर जुड़ते हुए विशाल चट्टानों का तीन स्तरों पर जीता है और व्यवहार करता है-भौतिक, मानसिक और आध्यात्मिक.

सांस्कृतिक विकास एक निरंतर प्रक्रिया है. हमारे पूर्वजों ने बहुत सी बातें अपने पुरखों से सीखी हैं. समय के साथ उन्होंने अपने अनुभवों से उसमें और वृद्धि की. जो अनावश्यक था, उसको उन्होंने छोड़ दिया. हमने भी अपने पूर्वजों से बहुत कुछ सीखा. जैसे-जैसे समय बीतता है, हम उनमें नए विचार, नई भावनाएँ जोड़ते चले जाते हैं और इसी प्रकार जो हम उपयोगी नहीं समझते, उसे छोड़ते जाते हैं. इस प्रकार संस्कृति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक अंतरित होती जाती है. जो संस्कृति हम अपने पूर्वजों से प्राप्त करते हैं उसे सांस्कृतिक विरासत कहते हैं. यह विरासत कई स्तरों पर विद्यमान होती है. मानव ने सम्पूर्ण रूप में जिस संस्कृति को विरासत के रूप में अपनाया उसे 'मानवता की विरासत' कहते हैं . एक राष्ट्र भी संस्कृति को विरासत के रूप में प्राप्त करता है जिसे 'राष्ट्रीय सांस्कृतिक विरासत' कहते हैं. सांस्कृतिक विरासत में वे सभी पक्ष या मूल्य सम्मिलित हैं जो मनुष्यों को पीढ़ी दर पीढ़ी अपने पूर्वजों से प्राप्त हुए हैं. वे मूल्य पूजे जाते हैं, संरक्षित किए जाते हैं और निरंतरता से सुरक्षित रखे जाते हैं तथा आने वाली पीढ़ियाँ इस पर गर्व करती हैं.

सत्य, शिव और सुन्दर ये तीनों शाश्वत मूल्य हैं जो संस्कृति से गहरे जुड़े हैं. यह संस्कृति ही है जो हमें दर्शन और धर्म के माध्यम से सत्य के निकट लाती है. यह हमारे जीवन में कलाओं के माध्यम से सौन्दर्य प्रदान करती है और सौन्दर्यानुभूतिपरक मानव बनाती है. यह संस्कृति ही है जो हमें नैतिक मानव

बनाती है और दूसरे प्रणियों के निकट सम्पर्क में लाती है और साथ ही हमें प्रेम, सहिष्णुता और शान्ति का पाठ पढ़ाती है.

मनुष्य की जिज्ञासा का परिणाम धर्म और दर्शन होते हैं. सौन्दर्य की खोज करते हुए वह संगीत, साहित्य, मूर्ति, चित्र और वास्तु आदि अनेक कलाओं को उन्नत करता है. सुखपूर्वक निवास के लिए सामाजिक और राजनैतिक संगठनों का निर्माण करता है. इस प्रकार मानसिक क्षेत्र में उन्नति की सूचक उसकी प्रत्येक सम्यक् कृति 'संस्कृति' का अंग बनती है. इनमें प्रधान रूप से धर्म, दर्शन, सभी ज्ञान–विज्ञानों और कलाओं, सामाजिक तथा राजनीतिक संस्थाओं और प्रथाओं का समावेश होता है. सभ्यता से मनुष्य के भौतिक क्षेत्र की प्रगति का ज्ञान होता है जबकि संस्कृति से मानसिक क्षेत्र की प्रगति प्रदर्शित होती है. मनुष्य केवल भौतिक परिस्थितियों में सुधार करके ही सन्तुष्ट नहीं हो जाता. वह भोजन से ही नहीं जीता, शरीर के साथ मन और आत्मा भी है. भौतिक उन्नति से शरीर की भूख मिट सकती है, किन्तु इसके बावजूद मन और आत्मा तो अतृप्त ही बने रहते हैं. इन्हें सन्तुष्ट करने के लिए मनुष्य अपना जो विकास और उन्नति करता है,

उसे संस्कृति कहते हैं.

सभ्यता का विकास: प्रारम्भ में मनुष्य आँधी–पानी, सर्दी–गर्मी सब कुछ सहता हुआ जंगलों में रहता था. धीरे–धीरे उसने इन प्राकृतिक विपदाओं से अपनी रक्षा के लिए पहले गुफाओं और फिर क्रमशः लकड़ी, ईंट या पत्थर के मकानों की शरण ली. अब वह लोहे और सीमेन्ट की गगनचुम्बी अट्टालिकाओं का निर्माण करने लगा है.

प्राचीन काल में यातायात का साधन सिर्फ मानव के दो पैर ही थे. फिर उसने घोड़े, ऊँट, हाथी, रथ इत्यादि का आश्रय लिया. अब वह मोटर और रेलगाड़ी के द्वारा थोड़े समय में बहुत लम्बे फासले तय करता है तथा हवाई जहाज द्वारा आकाश में भी उड़ने लगा है.

पहले मनुष्य जंगल के कन्द–मूल और फल तथा आखेट से अपना निर्वाह करता था. बाद में उसने पशुपालन और कृषि के आविष्कार द्वारा आजीविका के साधनों में उन्नति की.

पहले वह अपने सब कार्यों को शारीरिक शक्ति से करता था. बाद में उसने पशुओं को पालतू बनाकर और साध कर उनकी शक्ति का उपयोग हल, गाड़ी आदि में करना सीखा. अन्त में, उसने हवा, पानी, वाष्प, बिजली और अणु की भौतिक शक्तियों को वश में करके ऐसी मशीनें बनाईं, जिनसे उसके भौतिक जीवन की काया–पलट हो गई. मनुष्य की यह सारी प्रगति सभ्यता कहलाती है.

सभ्यता बनाम संस्कृति: सभ्यता और संस्कृति–दो अलग–अलग अवधारणाएँ हैं, तथापि भेद ठीक वैसा ही है, जैसे हम एक फूल को सभ्यता और उसकी सुगन्ध को संस्कृति कहें. सभ्यता से किसी संस्कृति की बाहरी चरम अवस्था का बोध होता है. संस्कृति विस्तार है तो सभ्यता स्थिरता. सभ्यता में भौतिक पक्ष प्रधान है, जबकि संस्कृति में वैचारिक पक्ष प्रबल होता है. यदि सभ्यता शरीर है तो संस्कृति उसकी आत्मा. सभ्यता और संस्कृति की कुछ तुलनात्मक विवेचना निम्नलिखित है :

- सभ्यता की माप की जा सकती है, किन्तु संस्कृति की माप नहीं की जा सकती. उदाहरण के लिए–स्कूटर की अपेक्षा कार अधिक उपयोगी है, यह बताना आसान है किन्तु पश्चिमी संस्कृति की अपेक्षा भारतीय संस्कृति श्रेष्ठ है, यह प्रमाण प्रस्तुत करना कठिन है क्योंकि इसके लिए कोई भी मापदण्ड नहीं है.
- सभ्यता की उन्नति अल्पकाल में होती है, जबकि संस्कृति विस्तृतकालीन सभ्यता की परिणति है.
- सभ्यता का आधार प्रतियोगिता है किन्तु सांस्कृतिक वस्तुएँ प्रतियोगिता रहित होती हैं. दो आविष्कारों में प्रतियोगिता होती है, किन्तु आध्यात्मिकता में कोई प्रतियोगिता नहीं होती.

- सभ्यता में सुधार किया जा सकता है, किन्तु संस्कृति में नहीं. साधारण व्यक्ति भी श्रेष्ठ आविष्कारों में सुधार कर सकता है, किन्तु प्रतिष्ठित कवि और कलाकार की कविता व कलाकृति में साधारण व्यक्ति सुधार नहीं कर सकता.
- सभ्यता में गहराई का अभाव होता है जबकि संस्कृति में गहराई होती है, मोटर और ट्रैक्टर की मशीन का ज्ञान सभी को हो सकता है, किन्तु संस्कृति की गहराई तक सब व्यक्ति नहीं पहुँच सकते.
- सभ्यता निश्चित काल तक ही रहती है परंतु संस्कृति एक नदी की तरह युगों–युगों तक बहती है.
- न्यूटन और आइन्सटाइन सभ्यता के लिए ठीक हैं, परंतु राम और सीता संस्कृति के प्रतीक हैं.
- सभ्यता गौरवशाली आविष्कारों से दर्शायी जाती है, लेकिन संस्कृति कला, साहित्य एवं ग्रन्थों में मुस्कुराती है.

प्रख्यात जर्मन दार्शनिक 'इमैनुएल काण्ट' ने सभ्यता और संस्कृति के अन्तर को स्पष्ट करते हुए कहा है कि सभ्यता बाह्य व्यवहार की वस्तु है, परन्तु संस्कृति नैतिकता की आवश्यकता होती है तथा यह आन्तरिक व्यवहार की वस्तु है.

दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि सभ्यता बताती है, 'हमारे पास क्या है', और संस्कृति यह बताती है, 'हम क्या हैं'.

पुष्कर कुमार सिन्हा
स्टाफ प्रशिक्षण केंद्र, भोपाल

Unusual **Folk Festivals** of India

THAIPUISM FESTIVAL, TAMIL NADU

Somewhat similar to the Nine Emperor Gods Festival and Tesagan Gin Je in Southeast Asia, the Thaipuism festival of the Tamil Hindus may be an unusual spectacle of rituals if you are seeing it for the first time. It may also blow you out of the water leaving bubbles of thought resulting in eyes bulging out at the sight of devotees who have their bodies pierced with skewers and hooks. The Thaipuism Festival is one of the unusual festivals in India that is celebrated by the Tamil Hindus in between the months of January and February. It is celebrated to commemorate the occasion of Parvati giving Murugan a Vel or a spear, to fight against the evil demon Soorapadman. Devotees participating in the Thaipuism festival prepare themselves by cleansing themselves through prayer and long days of fasting (approximately 4 days) and thereafter pierce their bodies. In India it is mostly celebrated in Palani in Tamil Nadu and this festival is also the best time to experience the Kavadi cavadee Attam, which is one of the local dance forms of the south Indians.

Palani, Jan-Feb

JALLIKATTU, TAMIL NADU

This festival reminds one of bullfighting in Spain. An Indian festival, Jallikattu is a bull-taming sport that is a part of Pongal celebration and is held from January to July. It can be mostly witnessed in a few towns in Tamil Nadu, like Palamedu and Alanganallur, both close to Madurai, which is a popular pilgrimage destination in south India. Jallikattu is a bull taming event that rolled down over time from the Sangam period in the 3rd century A.D. This Tamil-style bull taming is based on the concept of flight or fight and the bulls used in this event are of a specific breed of cattle. Travellers who are keen to be spectators at such an unusual event in India might be disappointed now as the Supreme Court banned Jallikattu and bullock cart racing in Tamil Nadu, citing animal welfare issues.

THIMITHI, TAMIL NADU

Held in between October and November in Tamil Nadu, the Thimithi festival is another unusual festival in India, and is a firewalking ceremony that is carried out as a religious vow in exchange for blessings from Draupadi, the wife of the five Pandava brothers from the epic Mahabharata. During this auspicious occasion several scenes are enacted by the devotees and drama troupes and in addition ritual performances like an act of imitation of the sacrifice of Hijra, prayers to Periyachi, and bathing the Mariamman with milk are worth experiencing. Prior to the Thimithi festival, there is a silver chariot procession to commemorate the victory of Pandavas.

Tamil Nadu, Oct-Nov

KILA RAIPUR RURAL OLYMPICS, PUNJAB

Not an uncommon festival in India, quite popular on its own way the Kila Raipur Rural Olympics is an event that attracts a huge crowd of sports enthusiasts, including foreigners. It is held annually in between January and February in Kila Raipur, which is close to Ludhiana. The major attractions in the extravaganza are bull cart-race, mule cart race, horse cart race, kabbadi, short put, tug of war, 100mts-1,500mts race, high and long jump, and race between tractors. On the other hand this event has played a significant role in the development of tourism in Punjab. One can also witness some other unusual activities like people lifting bicycles or ladders with their teeth; pulling cars with their hair, teeth or ears; and other daredevil stunts on bikes and horses at the Kila Raipur Rural Olympics. If you are also a cultural enthusiast you may decide to stay back for the folk dance and music that is held in the evenings on all three days of the festival.

Ludhiana, Feb

PULIKALI, KERALA

This peculiar event is a major attraction in one of the popular festivals in south India, Onam. Puli Kali is a form of folk art, dance, music and drama that depicts the theme of tiger hunting. Performers are painted like tigers and hunters in yellow, red and black, and they enact their roles to the beats of instruments like Udukku and Thakil. Puli Kali is said to have originated over 200 years back when a Maharaja of Cochin decided to celebrate Onam retracing the wild and macho spirit of the force. Today Puli Kali is a striking feature of Onam where performers dress up in readymade masks, cosmetic teeth, tongues, beards and moustaches. This grandeur is organized by the Pulikkali Co-ordination Committee that was formed in 2004 and is held in the streets to the Swaraj Round, Thrissur.

Thripunithara, Kochi, Aug-Sept

MADAI FESTIVAL, CHHATTISGARH

Despite being a popular tribal festival in Chhattisgarh, Madai Festival on the other hand is little known to people from other parts of the country. The Madai festival, in which various ritualistic performances like folk dance and music, prayers, and sacrifice of goats takes place, is dedicated to goddess Kesharpal Kesharpalin Devi, one of the tribal deities,. During the festival one can witness a bright gala affair with shops and eateries where one can shop for several tribal handicrafts and relish some unique cuisine. The festival is mostly held in Kanker, Bastar and Dantewada regions from December to March each year and Narayanpur village (in February) is the best place to visit during the Madai festival.

Kanker, Bastar and Dantewada, Dec-Mar

BHAGORIYA FESTIVAL, MADHYA PRADESH

This one is markedly different from any other festivals in India that is held before the Holi festival. The Bhagoriya festival, organized in the district of West Nimar (Khargon) and Jhabua, is all about a particular form of tribal marriage where young boys and girls are allowed to elope after choosing their partners. During this festival of Bhil and Bhilala tribes the boy puts red powder on the face of the girl whom he wants to marry and if the girl is willing to marry that boy she puts the same red powder on the boy's face Incase the girl refuses, the boy is given another chance to persuade her and win her heart.

West Nimar and Jhabua, Feb-Mar

MIM KUT FESTIVAL, MIZORAM

Celebrated amidst huge gaiety, the Mim Kut festival is a harvesting festival in Mizoram that is held in between August and September, after the harvest of maize. The Mim Kut festival is a colourful and musical fiesta where various folk performances become one of the major attractions for the travellers. During this festival one can even try out a hearty tribal meal and sip mugs of local beer made out of rice. Some other tribal festivals in Mizoram are the Chapchar Kut, Thalfavang Kut, and Pawl Kut.

Parts of Mizoram, Aug-Sept

SEKRENYI FESTIVAL, NAGALAND

You must have heard of the popular Hornbill Festival of the Naga tribes but the Sekrenyi festival, which is a harvesting festival of the Angami Nagas sounds interesting too. Isnt it? It is a festival of purification with feasting and singing and is a 10 days of merriment and jamboree in the month of February with several ritual performances. During this festival men go for a bath at the village well, which is later cleaned and guarded by two young Angamis till the next morning. Tribal duet songs and folk dance and music are some other major performances by the Angami folks during the Sekrenyi festival. Later there is a bridge pulling, which is one of the significant part of the festival, that allows inter village visits and assure people resuming their work on the fields.

Dimapur and Kohima, Feb

TSUKHENYI FESTIVAL, NAGALAND

Held in between March and April, the Tsukhenyi festival is one of the least known tribal festivals in India that is celebrated with great enthusiasm by the Chakesang Nagass. This festival in North East India is another harvesting festival that is observed to offer thanks for a thriving harvesting season.

Kohima, Mar-Ap, Parts of Nagaland, Sept

Debashish Chatterjee
R. O., Kozhikode

पश्चिम ओड़िशा के लोक महोत्सव

लोक संस्कृति किसी भी देश में गहराई तक व्याप्त गुणों के समग्र रूप का नाम है जो उस समाज के सोचने, विचारने, कार्य करने, खाने-पीने, बोलने, नृत्य-गायन, साहित्य, कला, वास्तु आदि में परिलक्षित होती है. मानव सभ्यता के आरंभ से ही मानव मन की अतृप्त जिज्ञासा, सौंदर्यबोध एवं नित नए अनुसन्धानों ने मूर्ति-कला, साहित्य, गायन, वास्तु इत्यादि के क्षेत्र में नए-नए सृजन किए. इन्हीं के सम्यक् रूप को संस्कृति का अंग माना गया. इनमें रचनात्मक कलाओं के साथ धर्म, दर्शन, ज्ञान-विज्ञान, राजनीतिक विचारधाराओं एवं रीति-रिवाजों व प्रथाओं का भी समावेश किया गया. लोक संस्कृति इसी संस्कृति का अंग है, जिसका अस्तित्व राजतंत्र के सिंहासन में न होकर जन-जन के मन में है, नगरों की अट्टालिकाओं में न होकर ग्राम की मिट्टी में है. लोक संस्कृति भारत की उन अमूल्य संस्कृतियों में से एक है, जो समय-समय पर भारत में होने वाले बाहरी आक्रमणों के प्रभाव से अछूती रही तथा आज भी अपने मूल रूप में पायी जाती है. इसी लोक संस्कृति को जन-जन तक पहुंचाने तथा इसके मूल स्वरूप को बरकरार रखने के लिए पश्चिमी ओड़िशा के प्रत्येक जिले में हर वर्ष लोक महोत्सवों का आयोजन किया जाता है.

पश्चिमी ओड़िशा भौगोलिक विविधताओं के साथ सांस्कृतिक विविधताओं के लिए प्रसिद्ध है तथा इतनी विविधताओं से भरे क्षेत्र की पारंपरिक कलाओं की अभिव्यक्ति लोक महोत्सवों के माध्यम से ही संभव है. लोक महोत्सव लोक-कलाओं, क्षेत्रीय सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक, आर्थिक तथा पर्यावरण के परिवर्तन को प्रदर्शित करता है. जैसा नाम से ही स्पष्ट है. लोक महोत्सव जन-जन का महोत्सव है. लोक महोत्सव मनोरंजन का स्रोत मात्र नहीं है, यह लोगों की परंपराओं, मान्यताओं, दु:ख-सुख और दर्शन का अद्भुत प्रदर्शन करने में सक्षम है. अपनी परंपरा एवं कला का यह बेहतरीन प्रदर्शन देख आज के समय में जीने वाला व्यक्ति भी इनके संरक्षण के लिए तत्पर हो जाता है. यह पहलू लोगों को उनके जीवन और एकजुटता के लिए अर्थ और गहराई देने का काम करता है. लोक महोत्सव आधुनिक समाज में प्राचीन संस्कृति की तस्वीर को दर्शाता है. वह संस्कृति, जो आज के समाज के उपेक्षापूर्ण व्यवहार से विलुप्त होने के कगार पर है. लोक महोत्सव प्रधानतः लोक-गायकों एवं लोक-कलाकारों को अपनी कला के प्रदर्शन का अवसर देता है.

समग्र पश्चिमी ओड़ीशा के भिन्न-भिन्न जिलों में तरह-तरह से लोक महोत्सव मनाया जाता है. यह महोत्सव सामान्यतः पौष-माघ के माह में शुरू होता है तथा दो से तीन दिनों तक चलता है. लोक महोत्सव का मूल उद्देश्य अपने क्षेत्र की लोक संस्कृति को विभिन्न माध्यमों से जन-जन तक पहुंचाना होता है. कई आदिवासी व गैर-आदिवासी प्रजातियाँ लोक महोत्सव में अपनी-अपनी समृद्ध विरासत का प्रदर्शन करती हैं.

प्रत्येक क्षेत्र में लोक महोत्सवों को अलग-अलग संज्ञाएँ दी गयी हैं. पश्चिमी ओड़िशा के बौध जिले में आयोजित 'बौध महोत्सव', सोनपुर का 'सुबर्णपुर लोक महोत्सव', मलकानगिरी में आयोजित 'माल्याबंत लोक महोत्सव', कोरापुट जिले में आयोजित 'माघ परब', नबरंगपुर की 'मंडेई', फुलबाणी का 'शीत महोत्सव', सम्बलपुर का 'सम्बलपुर लोक महोत्सव', झारसुगुड़ा का 'दुलदुली महोत्सव' एवं सुंदरगढ़ में 'सुंदरगढ़ महोत्सव' कुछ प्रमुख लोक महोत्सव हैं. जनजातियों एवं स्थानीय निवासियों के मध्य ये लोक महोत्सव उनके आराध्यों के पूजन-आराधन के रूप में मनाये जाते हैं. लोक महोत्सवों के दौरान नए-नए वस्त्र पहनकर नृत्य करते हैं. पश्चिमी ओड़िशा में निवास करने वाली जनजातियों के मध्य भिन्न-भिन्न नृत्य शैलियां प्रचलित हैं. इन नृत्य शैलियों में सम्बलपुरी नृत्य, घुमरा, ढेमसा, नटराज, कलामंदिर, झूमर, गोटीपुआ नृत्य, पशुमुखा नृत्य, जोड़ीसंक्सा, छेडैया नृत्य इत्यादि प्रचलित हैं.

लोक संस्कृति महज एक संज्ञा न होकर एक शाश्वत प्रक्रिया है तथा वर्तमान समय में भारत में विदेशी प्रभाव से यह अमूल्य धरोहर विलुप्त होने के कगार पर है. ऐसे समय में ज़रूरी है कि हम अपनी जड़ों को पहचानें तथा इस असाधारण संस्कृति के उत्तराधिकारी होने का गर्व करें. तभी हम भांति-भांति के रत्नों से सुशोभित भारतीय संस्कृति के मुकुट को विश्व दरबार में उपयुक्त स्थान दिलवाने में सक्षम हो पाएंगे.

तूलिका बिश्वास
क्षे. का., सम्बलपुर

यह है लोक संस्कृति की शान

पावन धरती हिंदुस्तान की, लोक संस्कृति की शान।
अनगिनत परंपराएं यहां पर, सबके सब महान।
कोस-कोस पर पानी बदले, चार कोस पर वाणी।
आर्य-द्रविड़ अतीत में साधे, जाने सकल जहान।
मेरा भारत महान, यह है लोक संस्कृति की शान।

उत्तर-दक्षिण, पूरब-पश्चिम, लोक संस्कृति की झांकी।
कहीं पर ओंगल, पोंगल देखो, कहीं पर बिहू बेबाकी।
गुड़ी पड़वा, मकर संक्राति, वैशाखी की थाती।
कुंभ का मेला या हाजी पीर हो दर्शन ही है काफी।
चारो धाम का सुंदर सपना, स्वर्ण मंदिर का ख्याल।
जालियांवाला बाग को देखो, वीर सपूत जवान।
मेरा भारत महान, यह है लोक संस्कृति की शान।

कथकली की चाल पर थिरके यहां, भारत नाट्यम प्यारा।
कुचीपुड़ी है मदमाती तो कथक भी न्यारा-न्यारा।
सरहूल के थाप पर झूमे हम, याद सताए गरबा।
नौटंकी या हो मुखौटा नृत्य दिखाए भांगड़ा।
ओडीसी की समृद्ध परंपरा, छाओ नृत्य बेमिसाल।
गागर में सागर पाओगे, देखे जगत नदान।
मेरा भारत महान, यह है लोक संस्कृति की शान।

गंगा के तट पर जब कोई, ठुमरी की राग पसारे।
बारहमासा या कजरी, बिरहा का राग अलापे।
रविंद्र संगीत की मीठी तानें, सबको करे इशारे।
चैता-चैती, होरी-फगुआ, रागिनी रंग संभाले।
झूमर-सोहर, गाली, डोमकच कोई नहीं मलाल।
उत्तर पूर्व, कश्मीर की वादी, गीतों का करें बखान।
मेरा भारत महान, यह है लोक संस्कृति की शान।

अतिथि देवो भवः हमारी संस्कृति लहराए।
स्वागत है भारत में सबका, प्यार-प्यार बरसाए।
गंगा-जमुनी है समिश्र संस्कृति सबके मन को भाए।
भारत दर्शन एकबार हो, सबका मन ललचाए।
जो आया हममें समाहित धरती है कमाल।
पथ प्रदर्शक संस्कृति है, कोई समझे नहीं नादान।
मेरा भारत महान, यह है लोक संस्कृति की शान।

विजय कुमार पाण्डेय
क्षेत्रीय कार्यालय, पटना

लोक कवि
पद्मश्री हलधर नाग

31 मार्च 1950 में तत्कालीन अभिन्न सम्बलपुर जिले के बरगड़ शहर से 40 किलोमीटर दूर स्थित घेंस ग्राम में एक विशिष्ट प्रतिभावान का जन्म हुआ, जो बाद में हलधर नाग के नाम से प्रसिद्ध हुआ. प्रकृति की धरोहर घेंस की माटी–पानी से प्राप्त ऊर्जा एवं प्रतिभा से सम्पन्न 'हलधर नाग' को 'लोक कवि', 'लोक कवि रत्न' एवं 'पद्मश्री' जैसी महान उपाधियों से विभूषित किया गया.

जब यूनियन बैंक की तरफ से उनको सम्मान देने की बात आई तो उनके बारे में जितनी जानकारी प्राप्त हुई थी, किसी कहानी से कम नहीं थी. 'कवि रत्न' उपाधि से विभूषित हलधर नाग का शैशव कदम–कदम पर अनेक घात–प्रतिघात, असहनीय दरिद्रता एवं प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करते बीता. माता–पिता के देहांत के बाद उनके सर से अभिभावक का साया उठ गया और हलधर नाग की शिक्षा तीसरी कक्षा की सीमा भी पार न कर सकी. पेट की भूख मिटाने के लिए इनको विद्यालय का रास्ता छोड़कर दिहाड़ी मजदूर का काम करना पड़ा और दर–दर की ठोकरें खाते हुए वे विभिन्न प्रकार की आजीविकाएं अपनाने को बाध्य हुए. कभी खेत में मजदूरी, कभी जंगल में गाय–बछड़ों की रखवाली तो कभी किसी और के घर के छोटे–मोटे काम करना इनके लिए जीविकोपार्जन का सहारा बना. किसी समय हलधर नाग को घेंस हाई स्कूल के छात्रावास में रसोइये का काम भी करना पड़ा था. इन सब विपरीत परिस्थितियों के बावजूद 'लोक कवि हलधर नाग' ने लोक कला एवं साहित्य–साधना की राह कभी नहीं छोड़ी. अपनी भाषा में लिख एवं पढ़ पाना उनके लिए आज भी संभव नहीं है, परंतु ईश्वर प्रदत्त प्रतिभा एवं असामान्य स्मरण शक्ति से सम्पन्न यह कवि अनेक लोक गीत, स्वरचित साहित्य, कविता संकलन का कोई भी छंद प्रस्तुत कर लेते हैं. इनकी रचनाओं तथा जीवन–शैली में ग्राम्य जीवन की सरलता झलकती है.

मन में जिज्ञासा एवं उत्साह लिए क्षेत्रीय कार्यालय, सम्बलपुर से सुश्री तूलिका विश्वास, छुरियापली शाखा से श्री सरोज नायक व तलपदर शाखा से श्री मनोरंजन सत्पथी को साथ लेकर 27 मई 2016 को जब बरगड़ होते हुए छुरियापली में स्थित यूनियन बैंक की शाखा के सामने कार्यक्रम स्थल पर पहुंचे, तब पद्मश्री लोक कवि के साथ कुछ क्षण बिताने तथा उनके अनुभव उन्हीं की वाणी में सुनने का सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ. उनके साथ बिताये हुए हर पल एवं उनके साथ वार्तालाप से प्राप्त अनुभव को कुछ शब्दों या वाक्यों में लिपिबद्ध करना संभव तो नहीं, पर मेरे प्रयासों में भी कमी नहीं है.

देश के चौथे सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्मश्री से विभूषित होने के बावजूद भी कवि अपनी ग्रामीण जीवन शैली को आज भी अपनाते हुए संतुष्ट हैं. अत्यंत सीधी–सादी जीवन शैली वाले कवि को पहनावे में एक धोती, बनियान और एक संबलपुरी गमछे के अलावा दूसरे किसी प्रकार के भी वस्त्र आकर्षित नहीं करते. लंबे–लंबे बाल एवं पाँव में न कोई चप्पल न ही जूता, उनके सरल जीवन की व्याख्या करते प्रतीत होते हैं. कवि का मानना है कि प्रकृति प्रदत्त मौलिक सुविधाएं बहुत आरामदेह हैं. यदि हम उन्हें उसी तरह ग्रहण कर लेते हैं तो कभी कष्ट नहीं होता. साथ ही, प्रकृति से जुड़े रहने का निरंतर मौका मिलता है. उनमें न तो अहंकार, न ही कोई आडंबर है. इसका परिचय तब मिला जब निमंत्रण के बाद दोबारा उनको बैंक की तरफ से संपर्क करते हुए कहा गया कि कार्यक्रम के आधा घंटा पहले उनको लेने के लिए कोई स्टाफ पहुँच जाएंगे, कवि ने यह कहते हुए अपने विशाल हृदय का परिचय दिया कि वे किसी व्यक्ति विशेष के साथ या पब्लिक ट्रांसपोर्ट के सहारे वहाँ पहुँच जाएंगे.

कवि ने अपनी कविताओं का मुख्य विषय ग्राम्य जीवन, प्रकृति और दैनंदिन जीवन–यापन, संस्कृति से जुड़े हुए विषयों और पौराणिक पात्रों को बनाया है. इन कविताओं की प्रमुख विशेषता यह है कि इन्हें कवि ने लिखा नहीं है, बल्कि उन्हें सारी की सारी कंठस्थ हैं. कवि कहते हैं कि एक बार अगर कविता के बारे में वह सोच लेते हैं या फिर उसकी आवृत्ति कर लेते हैं तब पूरी की पूरी कविता उनके स्मृतिपटल पर अंकित हो जाती है. अपनी स्मरण शक्ति के बल पर ही साठ वर्ष से ऊपर की वय में भी असाधारण ये कवि अनगिनत लोक गाथाओं तथा स्वरचित बीस काव्यों से किसी भी रचना की अत्यंत सरलता से आवृति कर लेते हैं. बातों–बातों में उन्होंने बताया कि उनकी पहली कविता धोडो बरगच्छ (पुराना व सूखा बरगद का पेड़) थी अब तक वे बीस से अधिक काव्यों का सृजन कर चुके हैं जिनमें 'भाव', 'सुरुत', 'महासती उर्मिला', 'अछिया', 'तारा','मंदोदरी', 'सिरी समलई', 'वीर सुरेन्द्र साए', 'ऋषि कवि गंगाधर' इत्यादि शामिल हैं. कवि से बातचीत तथा उनके वक्तव्य के क्रम में लोक संस्कृति, लोक गाथा, परंपरा, ऐतिहासिक तथ्य, भौगोलिक अवधारणा, धार्मिक तथा पौराणिक मान्यताएँ इतने स्पष्ट और सटीक लगते हैं कि शायद ही कोई उन्हें शिक्षा तथा मौलिक सुविधाओं से वंचित ग्रामीण व्यक्ति मानने को तैयार होगा.

कला और संस्कृति के बारे में विस्तार से बताते हुए कवि कहते हैं कि एक समय में झारखंड, उत्कल एवं छत्तीसगढ़ का इलाका समान परंपरा, शैली, संस्कृति और मान्यताओं के कारण एक ही राज्य के रूप में जाना जाता था जिसको 'कोशल' की संज्ञा दी गयी थी. कालक्रम में कोशल की परिसीमा आज के पश्चिम ओड़िशा में सीमित रह गयी है. आज कोशल का परिचय केवल 'कोशली' या 'सम्बलपुरी' भाषा तक ही रह गया है जबकि इसकी कला, संस्कृति एवं परंपरा

अति उत्तम एवं उच्च कोटी की हैं. यहाँ की भाषा व ब्राह्मी लिपि का प्रयोग अभी भी कुछ ऐतिहासिक स्थलों पर पाया जाता है. ब्राह्मी लिपि में लिखी जाने वाली भाषा कालावधि में अपभ्रंश होते हुए 'सम्बलपुरी' या 'कोशली 'भाषा में परिवर्तित हो चुकी है परंतु इसमें कुछ शब्दों में अभी भी मौलिक स्वरूप बरकरार है तथा कवि ने ऐसे शब्दों एवं भाषा का प्रयोग अपनी रचना में खूब सुंदर ढंग से किया है जैसे कि 'ढोडो', 'ततापना', 'उकिया', 'गदबद' जैसे शब्द, जिनसे आज की युवा पीढ़ी बिलकुल अनभिज्ञ है. इस भाषा या संस्कृति को बचाकर रखने के लिए क्या कदम उठाए जाएं, यह पूछे जाने पर कवि की प्रतिक्रिया अत्यंत सहज थी. कवि मानते हैं कि हर घर में अगर अपनी भाषा में बातचीत की जाए तथा दैनंदिन प्रयोग में उसे लाया जाये तभी यह संभव होगा. साथ ही,गवेषणा एवं इसके साहित्य के रखरखाव के लिए पुस्तकालय उपलब्ध होना आवश्यक है तथा इसके लिए सरकार की तरफ से भी प्रोत्साहन होना ज़रूरी है.

उड़ीसा के लोककवि श्री हलधर नाग एक कवि रत्न होने के साथ-साथ हमारे बैंक के एक मूल्यवान ग्राहक भी हैं. हाल ही में इन्हें भारत सरकार द्वारा पद्मश्री से सम्मानित किया गया. यूनियन बैंक ने अपने इस प्रतिष्ठित ग्राहक का सम्मान क्षेत्रीय कार्यालय सम्बलपुर के चुरियापल्ली ग्राम में किया. इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में क्षेत्र प्रमुख श्री परमेश्वर माझी ने लोककवि श्री हलधर नाग का शॉल ओढ़ाकर एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मान किया. इस उपलक्ष्य में बरगड़ शाखा के शाखा प्रमुख श्री किशोर बिलुंग एवं नवीन शाखा प्रमुख श्री चतुर्भुज सेठ, तलपदर शाखा के शाखा प्रमुख श्री मनोरंजन सत्पथी के साथ भारी संख्या में स्टाफ सदस्य तथा ग्राहकगण भी मौजूद थे.

कला और संस्कृति के विषय में कवि कहते हैं कि प्रकृति की हर वस्तु 'सोलह गुणों' से युक्त है जैसे कि दशहरा में 16 दिनों तक 16 प्रकार की विधि से देवी माता की पूजा-आराधना, 16 तांडव बरुआ नृत्य, 16 खंड गउरबाड़ी (सम्बलपुरी लोक त्योहार में प्रयुक्त लाठी), 16 किस्म के डालखाई नृत्य, 16 खंड झूमर (नृत्य विशेष), 16 वाद्य घुमरा, 16 खंड सुभद्रा हरण, 16 कुंज हरिहर, 16 खंड कोठी के छक्का तथा इसी प्रकार से 16 साल में बालक को 'जुआन' (युवा) माना जाता है. यानि 16 गुणों से संपूर्णता की प्राप्ति है अतः इस मिट्टी से जन्मी हर चीज़ अपने आप में सम्पूर्ण होने की क्षमता रखती है.

यह पूछे जाने पर कि 'कविता या काव्य रचना के पीछे सबसे बड़ी प्रेरणा क्या थी, कवि शैशव की स्मृतियों में डूब जाते हैं. अत्यंत गर्व से वे बताते हैं कि बचपन में उनके नानाजी को धुनकेली वाद्ययंत्र के साथ लोकगीत गाते हुए देखकर वे काफी प्रभावित हुए थे और तब से गीत-संगीत के प्रति उनका उत्साह बढ़ा. पहले वे दूसरों की आवृत्ति किए हुए लोकगीतों, कविताओं और संगीत को सुनकर गाने लगे, जो बाद में प्रेरणास्रोत बनकर उनके अंदर छुपे हुए कवि को प्रकाश में ले आया. इसके अतिरिक्त कवि प्रकृति को नैसर्गिक प्रेरणा स्रोत मानते हैं. प्रकृति वह मातृ-रूप है जिसका प्रतिबिंब उनकी हर किसी रचना में झलकता हुआ नज़र आता है. उनके विचारों में सम्बलपुर के प्रसिद्ध प्रकृति-कवि 'गंगाधर मेहेर' एवं 'राधानाथ राय' का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है.

'लोक कवि हलधर नाग' रचना के उद्देश्य पर ज़ोर देते हैं. कवि के अनुसार, हर रचना का एक उद्देश्य होना चाहिए. उनकी रचनाओं का प्रधान उद्देश्य संस्कृति एवं कला को बचाकर रखना एवं मौलिक विचार धारा को आम लोगों के सम्मुख प्रस्तुत करना है. साथ ही, जीवन शैली, प्रथा, मान्यताएँ, रीति रिवाज इत्यादि अगर रचना में प्रतिबिम्बित रहें तब कला-संस्कृति को बचाए रखने का दूसरा सरलतर उपाय नहीं होगा.

पद्मश्री सम्मान प्राप्ति के बारे में कवि अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहते हैं कि कवि किसी सम्मान या पुरस्कार के अभिप्राय से रचना नहीं करते, न ही पुरस्कार या सम्मान उनकी मौलिक जीवन शैली या विचार धारा में कोई परिवर्तन ला पाता है. कवि के पहनावे, रहन-सहन, दैनंदिन जीवन-शैली या आवास में पद्मश्री जैसा सर्वोच्च सम्मान मिलने के बाद भी किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं दिखा. पद्मश्री सम्मान प्राप्ति के अवसर पर राष्ट्रपति के सम्मुख कवि अपनी सामान्य वेश-भूषा और हमेशा की तरह बिना कोई जूता या चप्पल पहने प्रस्तुत हुए. इतनी निश्छल, ग्रामीण एवं निराडंबर वेशभूषा में पद्मश्री जैसे सम्मान समारोह में उपस्थित होने वाला शायद ही कोई दूसरा व्यक्ति होगा.

कवि के साथ बिताए हुए अनुभवों को शब्दांकित करने पर बार-बार यह प्रतीत हो रहा है कि जितना भी उनके बारे में बताया जाये, फिर भी कुछ छूट जायेगा. वाणी को यथासमय विराम देना आवश्यक है किन्तु उनके निवास स्थान के बारे में कुछ न लिखकर भी विराम लेना अन्याय होगा. छुरियापाली से निकलकर आठ कि.मी. की दूरी पर स्थित उनके गाँव 'घेंस' में जब हम पहुंचे, तो कवि हमें सबसे पहले घेंस हाई स्कूल से सटे हुए एक कमरे वाली कुटीर के अंदर ले गए. उस छोटे से कमरे में केवल कुछ किताबें, बर्तन, एक चारपाई के अलावा और कुछ भी नहीं था. इसके बाद उनके निवास स्थान में जाने का अवसर मिला, जो थोड़ी दूर पर था और वह भी सरकारी अनुदान इन्दिरा आवास योजना से निर्मित था. हैरानी इस बात की थी कि देश के चौथे सर्वोच्च नागरिक सम्मान से सम्मानित व्यक्ति इतने अल्प संसाधनों में भी पूर्णतः संतुष्ट था. उनके आवास का पहला कमरा-जो छोटा सा था, केवल विभिन्न संस्थानों से प्राप्त प्रमाणपत्रों, प्रशस्ति नामों, पुरस्कारों और आलेखों से भरा हुआ था. कवि ने पद्मश्री सम्मान का प्रशस्ति पत्र और पदक हमें दिखाया. अंत में राष्ट्रपति से प्राप्त किए जाने वाले क्षण को पुनः वर्णन करते हुए अत्यंत आत्मीयता से हमें कुछ दूर तक छोड़ने आए.

ऐसी ईश्वरप्रदत्त प्रतिभा के धनी एवं महामहिम राष्ट्रपति द्वारा पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित, असाधारण होते हुए भी सामान्य प्रतीत होने वाले कवि से विदा लेकर चलते हुए मन में यही विचार बार-बार आ रहा था कि इन अव्यक्त अनुभूतियों को शब्दों में उतारने में हम कहाँ तक सफल हो पाएंगे!

परमेश्वर माझी
क्षे. का., सम्बलपुर

सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं

– पूर्व महाप्रबंधक श्री अशोक कुमार जैन

श्री अशोक कुमार जैन 30 जून 2016 को यूनियन बैंक के महाप्रबंधक पद से सेवा निवृत हुए. हमारा बैंक आज जिस ऊंचाई पर है, उसमें श्री जैन जैसे महाप्रबंधकों के नेतृत्व की अहम भूमिका है. सेवा निवृति से पूर्व आपने जिस विभाग (ऋण अनुश्रवण एवं पुनर्संरचना विभाग) का दायित्व संभाला, वह बहुत चुनौतीपूर्ण था. आपने निरंतर व प्रभावी अनुश्रवण के जरिए एन.पी.ए नियंत्रण पर मजबूत पकड़ बनाए रखी. बैंक से उनकी सेवा निवृति पर उनसे लिए गए साक्षात्कार के समय उन्होंने खुलकर अपने मन की बात रखी:

प्रश्न: कृपया अपने बचपन, शिक्षा और पारिवारिक पृष्ठभूमि के बारे में हमें कुछ बताएं.

उत्तर: मेरा जन्म कोलकाता में हुआ, परंतु जब मैं 6 माह का था तब से ही हमारा परिवार कोलकाता से एक छोटे शहर में बस गया. मैंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा एक सरकारी प्राथमिक विद्यालय में ग्रहण की, जिसमें मेरे गुणों को निखारने में मेरे गुरुजी श्री आर.पी. शर्मा का महत्वपूर्ण योगदान था. एक बालक के मन पर, गुरु के द्वारा दी गई सीख और विद्या से जीवन में आदर्श व मजबूत दिशा को बल मिला. इसके इतर मैंने कृषि में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की और बैंक में रहते हुए जे.ए.आई.आई.बी; सी.ए.आई.आई.बी; डी.एम.एस.(एच) और एम.ई.पी. आदि व्यावसायिक परीक्षाएँ भी उत्तीर्ण कीं.

प्रश्न: बैंक में आपका पहला दिन कैसा रहा?

उत्तर: मैंने क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर में कृषि क्षेत्र अधिकारी (ए.एफ़.ओ) के रूप में कार्य–ग्रहण किया था. मेरे करियर की सीख व बैंक की कार्य संस्कृति समझने की दृष्टि से क्षेत्रीय कार्यालय जयपुर के सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में कार्य करना मेरे लिए अत्यंत उत्साहजनक व संतोषजनक रहा.

प्रश्न: आपने अब तक जिन कार्यालयों/शाखाओं में काम किया है, उनमें से सबसे अच्छा किसे मानते हैं?

उत्तर: वैसे तो मैंने अपने दायित्व को पूरी निष्ठा व समर्पण से निभाया है, पर ओवरसीज़ शाखा जयपुर तथा सरल, इंदौर में मेरे कार्य निष्पादन व कारोबार प्रगति की दृष्टि से बेहतरीन कार्यकाल रहा.

प्रश्न: आपके करियर का सबसे यादगार अनुभव क्या रहा?

उत्तर: वैसे तो बैंक में कार्य करने का सम्पूर्ण अनुभव ही एक यादगार है, परंतु विशेष रूप से ऋण अनुश्रवण एवं पुनर्संरचना विभाग (सी.एम.आर.डी) में ऐसे समय में कार्य करना चुनौतीपूर्ण रहा, जब बैंकिंग उद्योग आस्ति–गुणवत्ता (Asset Quality) की समस्या से जूझ रहा था. मैंने और मेरी टीम ने बेहतर कार्यनिष्पादन द्वारा समकक्ष बैंकों की तुलना में लाभ को निरंतर बनाए रखने में सफलता पाई और ऐसे अनुश्रवण को निरंतर प्रभावी रखने का संदेश भी दिया.

प्रश्न: आपका सबसे अधिक चुनौतीपूर्ण कार्य दायित्व कौन सा रहा?

उत्तर: मेरठ के क्षेत्र प्रमुख के रूप में कार्य करना एक चुनौतीपूर्ण अनुभव था. इस दौरान कई निर्णायक स्थितियों से सामना हुआ. फील्ड में कार्य करते हुए चुनौतियों को सुलझाना व विपरीत स्थितियों में भी स्वयं को आत्मविश्वास से मजबूत रखने का हौसला मिला.

प्रश्न: आप किस बात पर सबसे अधिक गौरवान्वित महसूस करते हैं?

उत्तर: मैनेजमेंट एजुकेशन प्रोग्राम (एम.ई.पी) के नाम से बैंक द्वारा एक नवीन पहल प्रारंभ की गई थी, जिसमें मैंने पहले ही बैच में भाग लिया, यह मेरे लिए अत्यंत गौरव का विषय था. इस अभिनव प्रयोग में मेरी कुशलता व विद्वता में निखार आया तथा इस प्रोग्राम को मैंने सफलतापूर्वक पूरा किया. इससे हासिल कौशल से मैंने अपने कार्य निष्पादन में निरंतर निखार लाया.

प्रश्न: आपकी रुचियां क्या हैं?

उत्तर: मुझे होम्योपैथी में विशेष रूचि है. इसके साथ ही, मुझे गाने का भी शौक है. जब भी अवसर मिला, मैंने दोनों विशेषताओं का सदुपयोग किया है.

प्रश्न: वर्तमान में बैंकिंग उद्योग की स्थिति को आप किस तरह देखते हैं?

उत्तर: आज बैंकिंग उद्योग के समक्ष मुख्यतः तीन समस्याएँ हैं: (i) आस्ति गुणवत्ता में चुनौतियाँ, (ii) बैंकिंग उद्योग में विलयन की संभावनाएं, (iii) भविष्य में अनुभवी और प्रतिभावान मानव संसाधन की कमी.

प्रश्न: बैंक के भविष्य के बारे में आप क्या सोचते हैं?

उत्तर: हमारे बैंक का भविष्य हर दृष्टि से उज्ज्वल है क्योंकि हमारे पास मेहनती व प्रतिभावान स्टाफ है, जो बैंक के प्रति समर्पित है. उनकी नई तकनीकी व प्रौद्योगिकी की कुशाग्र समझ बैंक के लिए अच्छा एसेट है. उनकी कार्यप्रणाली में पारदर्शिता, दूरदर्शिता, परिशुद्धता व स्फूर्ति स्पष्ट झलकती है.

प्रश्न: आप यूनियनाइट्स, विशेषकर नई पीढ़ी को क्या संदेश देना चाहेंगे.

उत्तर: नई पीढ़ी के लिए मेरा यही संदेश है कि सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता, मेहनत करने से कभी न डरें और यह सदैव याद रखें कि उज्ज्वल भविष्य के तीन महत्वपूर्ण स्तम्भ हैं–ज़िम्मेदारी, भागीदारी और प्रतिबद्धता. जो अपनी दैनिक कार्यप्रणाली में इन गुणों का समावेश करते हुए अपना दायित्व निभाएगा, उसके करियर–पाथ के अवसर निरंतर खुलते जाएंगे.

प्रश्न: अपने करियर के दौरान आप किसे अपना पथ–प्रदर्शक मानते हैं?

उत्तर: हमारे ही बैंक से उप महाप्रबंधक के पद से सेवा निवृत श्री एफ़.आर खम्बाटा को मैं अपना पथ–प्रदर्शक मानता हूँ. वे एक ऐसा व्यक्तित्व थे जिन्होंने समर्पणपूर्ण श्रम, कर्तव्यनिष्ठा व व्यवहार कुशलता के लिए अपनी अलग पहचान बनाई थी.

प्रश्न: दुनिया में आपका पसंदीदा व्यक्तित्व कौन हैं?

उत्तर: स्वामी विवेकानंद और श्री अब्दुल कलाम मेरे पसंदीदा व्यक्तित्व हैं. इनके विचार मुझे अत्यंत प्रभावित करते हैं. स्वामी विवेकानंद के संदेश हमें मन–वचन के प्रति दृढ़ता देते हैं, वहीं डॉ. कलाम की सीख हमारे अंदर सकारात्मक विज़न के साथ पूरी ऊर्जा व निष्ठा से काम करने की प्रेरणा देती है.

प्रश्न: आप सेवा निवृति के बाद क्या करना चाहते हैं?

उत्तर: मैं चाहता हूँ कि मैं अपने अनुभवों और अर्जित ज्ञान को युवा पीढ़ी से साझा करूँ, इसलिए मुझे ऐसे मार्गदर्शक की भूमिका की तलाश है, जिसके माध्यम से मैं भी निरंतर सीखता रहूँ और,अपने अनुभव को लोगों में बांटते हुए समाज/देश की सेवा करता रहूँ.

आपने अपने बहुमूल्य अनुभव हमारे साथ बांटे, जिसके लिए हार्दिक धन्यवाद. यूनियन बैंक के समस्त स्टाफ की ओर से हम आपके सुखी, स्वस्थ, समृद्ध एवं सक्रिय भावी जीवन के लिए शुभकामनाएँ देते हैं.

रामगोपाल सागर
के.का., मुंबई

कुक्कुट पालन (पॉल्ट्री) हेतु वित्तीयन योजना

कुक्कुट पालन कृषकों एवं विशेषरुप से लघु व सीमांत कृषकों हेतु एक सहायक आय के महत्वपूर्ण स्रोत के रुप में कार्य करता है. इस योजना से खेतों पर दबाव कम पड़ता है तथा गांवों से शहरों की ओर पलायन कम होता है, क्योंकि इस गतिविधि से रोजगार के अवसर निर्मित होते हैं. इसके अतिरिक्त इनके पालन से अच्छी किस्म की खाद भी प्राप्त होती है जो फसलों की उत्पादकता को बढ़ाने में सहायक होती है.

पात्रता : कुक्कुट पालन वाली गतिविधि को करने के लिए किसानों/कृषक मजदूरों को कुक्कुट पालन की तकनीक से परिचित होना चाहिए एवं वित्तीयन के लिए पात्रता भी होनी चाहिए. साथ ही बड़ी राशि वाले प्रस्तावों के संबंध में प्रवर्तकों को आवश्यक अनुभव होना चाहिए अथवा इस तरह के विशिष्ट ज्ञान वाले कार्मिक रखने चाहिएं.

ऋण की मात्रा :

क) **परियोजना लागत** – कुक्कुट पालन परियोजनाओं को नाबार्ड द्वारा निर्धारित इकाई लागत के अनुसार वित्तीयन किया जाता है.

ख) **लागत** – शेड निर्माण लागत, उपकरणों, बर्तन, डीओसी आदि की खरीद आदि बाजार दर के अनुसार निर्धारित की जाती है.

ग) **कार्यशील पूंजी** – कुक्कुटों को 6 माह तक रख–रखाव (लेइंग हेतु) कार्यशील पूँजी की आवश्यकता (आवर्ती व्यय) को परियोजना लागत में शामिल किया जा सकता है.

घ) **ब्रॉयलर्स के लिए ऋण की मात्रा** – परियोजना लागत के अनुसार उक्त (b)+ पहले बैच को 08 सप्ताह तक पालने की लागत को शामिल करते हुए, निर्धारित हो सकती है.

मार्जिन : ₹1.00 लाख तक कोई मार्जिन नहीं रहेगा एवं ऊपर की राशि पर 10% से 15% मार्जिन होता है.

प्रतिभूति : ₹1.00 लाख तक बैंक ऋण से निर्मित आस्तियों का दृष्टिबंधक किया जाएगा तथा इससे ऊपर के ऋण हेतु आस्तियों का दृष्टिबंधक एवं भूमि बंधक और/अथवा तीसरे पक्ष की गारंटी के रुप में संपार्श्विक प्रतिभूति रखी जाती है.

ब्याज दर :

- कृषि सावधि ऋण/कार्यशील पूँजी के संबंध में केन्द्रीय कार्यालय द्वारा सूचित ब्याज दरें लागू होती हैं.
- जब ऋण एक से अधिक उद्देश्य,जैसे शेड के निर्माण, मुर्गियों, उपकरणों, बर्तनों आदि के क्रय के लिए दिया गया हो तो ब्याज दर परियोजना के लिए स्वीकृत पूरी ऋण राशि के आधार पर तय की जाती है.

एस. के. श्रीवास्तव
के.का., मुम्बई

गोवा के मनभावन मॉन्सून फेस्टिवल

नैसर्गिक सौन्दर्य का आनंद उठाने के लिए लोग कभी न कभी गोवा तो जाते ही है. ज्यादातर गर्मियों की छुट्टियों में गोवा के बीचेस पर या फिर दिसम्बर में क्रिसमस का आनंद तथा नये वर्ष के स्वागत पर पार्टी करने के बहाने लोग गोवा पहुँचते हैं. लेकिन कभी किसी ने सोचा है कि गोवा मान्सून के मौसम में यहां का माहौल कैसा होगा? जनाब यहाँ के लोग मॉन्सून में कुछ खास फेस्टिवल भी मनाते हैं. आइए, जानते हैं इनके बारे में :

चिकलकालो : गोवा का एक बडा फेस्टिवल (यहाँ इसे 'फेस्त' भी कहा जाता है) जिसे मार्शेल इलाके में मनाया जाता है. आषाढी एकादशी के बाद जुलाई के अंत में इसे खास तौर पर पारम्पारिक तौर से मनाया जाता है. यहाँ बच्चे–बूढ़े सभी कीचड़ में खेलने का आनंद उठाते हैं.

सांगोड : यह गोवा के मछुआरों का बडा फेस्त है. इसमें कई मछुआरों की बोटस् को एक साथ बांध कर समुंदर में उतारा जाता है. इस स्टेज पर छोटे चर्च और मंदिरों के मॉडल बनाए जाते हैं. गोवा के हरेक इलाके में इसे मनाते हैं.

साओ जोआओ फेस्त : गोवा के सबसे बड़े फेस्त में से एक, जिसे हर साल मान्सून में मनाया जाता है. गोवा के शिवोलिम शहर में इस वर्ष 24 जून को इसे मनाया गया. सेंट जॉन द बाप्टिस्ट की स्मृति में यह करीब 150 सालों से मनाया जा रहा है. भड़कीले रंगों की पोशाक तथा सिर पर फूल और पत्तों से बनाए हुए सरबन्द पहने हुए लोग इस फेस्त का लुत्फ उठाते हैं.

पोन्साचेम फेस्त : साओ जोआओ फेस्त के साथ ही फलों से जुड़ा यह फेस्टिवल – 'जैकफ्रूट फेस्टिवल' सेलिब्रेट किया जाता है. पैरिश पादरी फादर संताना कार्वाल्हो बताते हैं कि इस फेस्त की इंस्पिरेशन खुद साओ जोआओ फेस्त से ही मिली है. इस साल यह फेस्त 24 जून से सोकारो गांव से शुरु हुआ. यहाँ कटहल से बनाए गए विभिन्न पदार्थ लोगों का मन मोह लेते हैं.

तो कब जा रहे हो आप गोवा.....अभी या फिर अगले साल इन अनूठे फेस्तों का आनंद उठाने के लिये?

सुप्रिया नाडकर्णी
के.का.,मुंबई

Answers of Quiz

Sl. No	Ans.	Sl No.	Ans.	Sl. No.	Ans.	Sl No.	Ans.
1	A	2	B	3	D	4	C
5	B	6	C	7	C	8	C
9	B	10	E	11	d	12	B
13	C	14	C	15	B	16	B
17	B	18	B	19	B	20	B
21	D	22	C	23	B	24	C
25	C						

UNITED FOR A GOOD CAUSE

Uni One Diary

'यूनि–वन' सामाजिक संस्था द्वारा आयोजित रक्तदान शिविर का शुभारंभ करते हुये अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री अरुण तिवारी. साथ में हैं कार्यपालक निदेशक श्री राकेश सेठी एवं श्री विनोद कथूरिया. बायीं ओर हैं यूनि–वन की प्रेसीडेंट श्रीमती नम्रता तिवारी.

What a nice name of the organisation, ensuring its success from day one, as and when we are UNIted as ONE, there is nothing in the world which can stop us from achieving our goals.

The idea originated by Mrs. Namarta Tiwari, president of the UNI ONE, to bring all the ladies of Senior Executive of Union Bank at Mumbai to one fold, to contribute to social cause, when the spouse are busy handling banking responsibilities, in addition to taking care of running the family, is excellent.

I got associated with UNI ONE from day one and was always looking forward to contribute my might to ensure its success. Monthly meetings of the foundation brought in us such a good bondage that all the activities done by us were done with enjoyment and sense of pride.

I remember some of the instances like organising blood donation camp, visiting old age home, visiting mentally retarded children, organising programmes where physically challenged children showed their talent of singing. All these programs not only gave us lot of satisfaction but seeing visible happiness on their faces encouraged us to do more for the society. Another advantage which I enjoyed was the support from my husband, inspite of his hectic schedule, he was always there to encourage me for wholehearted participation in all the events.

While doing all these activities, I am sure our children have also inculcated sense of contributing to the society.

We never made our activities very serious as they were nicely blended with some cultural activities too. Winning small prizes in these events became my passion, how exciting and funny it was to hold straws in your hairs ?

I am happy to share that post retirement also, Rakesh Sethi, my husband and me have started our own NGO in the name of VISHWA PRAKASH MISSION, at Faridabad. We are through with Registration process and shall commence its activity within next one month.The NGO shall be providing financial assistance to well deserving students from poor financial background, by way of scholarship/ deposit of their yearly college fees etc. UNI ONE has equally played major role in strengthening our resolve to start this NGO.

Let the banker's be busy and make the bank strong and let us make our UNI ONE strong.

Thanks for the love and affection showered by all the UNI ONE members.

Poonam Sethi

THE LORES AND LURES OF KANNUR

The scene of flaming torches in the soothing darkness and a streaming Theyyam (an ancient ritualistic form of worship) in its foreground is a piercing visual, and best personifies the spirit of Kannur.

The soul of north Malabar is like an ancient Theyyam ritual which merges art, music, martial arts, physique, rituals, great stories and thoughts into a riveting cocktail.

North Malabar consists of the Kolathunadu, Kadathanad and parts of Thulunadu, from the days of yore. This includes today's Kannur and Kasargod districts and parts of Kozhikode and Wayanad.

This land is the cradle of folklore and folk-art forms. Umpteen number of theyyam ritual art forms, Poorakali, Marathukali, numerous temple arts, Mapila art forms like Oppana and Daffmuttu, different varieties of Kolkali, the rich folk literature in the thottam songs of theyyam, all form the assets of this land. Even Kalaripayattu, famed as the mother of all martial arts, has the roots of the origin of its complex "Vadakkanchitta", attached to this land, which is why the "Kerala Folklore Academy" is located at Kannur, owing to the richness of its traditional arts.

Kannur, which is known as the land of looms and lores, forms the heart of the erstwhile Kolathunadu, famed for the handloom industry and rich folklore. Kannur, like other northern districts, also witnessed two great migrations, the Christian migration from Travancore to Malabar, and the gulf migration which spread to the whole of Kerala, both being for livelihood, and which had far reaching social and economic impact in the history of Kerala.

Kannur is literally an unexplored land, though bestowed with natural beauty and also home to many a great historic monument and ancient structures. Kannur has long been struggling to establish itself in the tourism map of Kerala, but has been held back owing mainly to infrastructural bottlenecks.

The Western Ghats and greenlands, the backwaters and islands, the rivers and wetlands adorned by the mystic mangroves and the virgin beaches where the sun sets in grandeur – all these natural, awe inspiring scenes can be experienced in Kannur. Nature has surely splashed many alluring shades over this land, and it is all waiting for the intrepid traveller willing to move out of the established tourist circuit and walk a road less travelled.

Let us explore the unexplored! If you are ready, Kannur has a number of tourist spots which you can explore. Some of these are listed below:

1. Dharmadam island and Muzhappilangad beach
2. Thalassery Fort and Gundert Bunglaw
3. St Angels Fort, Kannur
4. Arakkal museum
5. Parassinikadavu Muthappan temple and Snake park
6. Payyambalam beach, Chal beach, Meenkunnu beach, Azhikkal ferry, Mappila bay, Chootad beach
7. Pazhassi dam
8. Aralam wildlife sanctuary, Sasipara, Kanjirakolly Waterfalls, Kottiyoor, Kannavam forest
9. Paithalmala & Kappi Mala trekking spots
10. Water Rafting and Kayaking in the Thejaswini river at Pulingome, Cherupuzha
11. Thayyeni, Thabore, Josegiri
12. Madayippara
13. Vellikeel Ecotourism park, Vayalapra Parappu park (mangroves)
14. Ezhimala, Hanuman statue at Anjaneyagiri, Ettikulam beach.
15. Kavvayi backwaters, Madakkal island Kavvayi-Udinoor-Kannuveedu beaches, Edayilakkad island (spread across Kannur & Kasargod districts)
16. Uliyathkadavu Salt Sathyagraha Memorial, Payyanur

This land was witness to many crucial events of India's freedom struggle like the Salt Satyagraha and declaration of Complete Independence at Payyannur, which was also the cradle of many great reformatory movements. It was also blessed by visits of Gandhiji.

This land preserves many ancient rituals and art forms, houses some great old temples, mosques, churches, and many more unexcavated treasures await to be explored. With the Kannur international airport awaiting completion, this land is looking forward to greater heights and an infrastructural and tourism advance in an environment friendly way.

Let this land of looms & lores, loom greater lores for itself.

NITHIN K
Cheruvathur Br. R. O., Kozhikode

सांस्कृतिक समन्वय एवं विविधता का केन्द्र
मध्य प्रदेश

भारतवर्ष के मध्य में अवस्थित; महाकवि कालिदास को कश्मीर से खींचकर अपने पास लाने वाला; महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान तथा स्थानीय संस्कृति का अनूठा संगम है मध्य प्रदेश. यह वही स्थान है, जहाँ पर एकलव्य ने अपने गुरु के लिए अंगूठा काटकर अपने विद्यार्थी धर्म का पालन किया था और यहीं पर भगवान श्री कृष्ण ने गुरु सादीपनी के पास उज्जैन नगर में रहकर ज्ञान प्राप्त किया था. यही कारण है कि देश के इस दूसरे बड़े राज्य के नागरिकों ने अपने राज्यगान की प्रारंभिक पंक्तियों में अपने भाव इस प्रकार व्यक्त किये हैं–

सुख का दाता सब का साथी शुभ का यह संदेश है,
माँ की गोद, पिता का आश्रय मेरा मध्यप्रदेश है.

मध्य प्रदेश सांस्कृतिक रूप से अति समृद्ध एवं संपन्न है. संस्कृति के विकास के समस्त चरणों को यदि किसी प्रदेश ने अच्छी तरह से देखा है, तो वह मध्य प्रदेश ही है. एक ओर यहाँ पर आदिम संस्कृति की झलक दिखाई देती है तो दूसरी ओर आधुनिकीकृत शहरों को भी यहाँ पर बखूबी देखा जा सकता है.

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि : मध्य प्रदेश में सभ्यता के विकास के चिह्न मानव विकास की कहानी को पूरी तरह प्रदर्शित करते हैं. भोपाल के निकट भीमबेटका नामक स्थल पर 600 से अधिक शैलचित्र प्राप्त हुए हैं. मानव की आदिम अवस्था से लेकर सुसंस्कृत समाज में परिवर्तित होने तक की कहानी यहाँ स्थित गुफाओं में देखी जा सकती है. यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर के रूप में मान्यता प्राप्त इस स्थल पर सब से पुराना शैल चिह्न 1 लाख वर्ष पुराना है. पूर्व पाषाण काल के विभिन्न चित्र यहाँ पर पाये गये हैं. यहाँ पर एक बड़ी गुफा भी मिली है जो लगभग 100 लोगों का निवास स्थल रही होगी. इस गुफा के अवलोकन से ज्ञात होता है कि मनुष्य समूह में रहना बहुत पहले ही सीख गया था.

मध्य प्रदेश स्थित 'नावदा टोली' नामक स्थल से हड़प्पा सभ्यता के समकालीन चिह्न मिले हैं. महेश्वर तथा उज्जैन अति प्राचीन नगर हैं. मौर्य काल में यहाँ के अन्य नगरों, जैसे 'विदिशा', का महत्व भी बढ़ गया था. 'साँची का स्तूप' भी सम्राट अशोक के जीवन काल में ही बनना शुरू हो गया था. स्तूप के प्रथम स्तंभ पर बौद्ध धर्म के नियम लिखे गये हैं. स्तूप को दान देने वालों के नाम भी यहाँ अंकित है, जिससे यह ज्ञात होता है कि उस काल में दान देने तथा धार्मिक कार्य करने हेतु लोग लालायित रहा करते थे. उज्जैन के राजा विक्रमादित्य की कहानियाँ तो विश्वभर में प्रसिद्ध हैं. इन कहानियों के माध्यम से प्राचीन मध्य भारत के जीवन एवं संस्कृति को जाना जा सकता है. विक्रम संवत् का आरंभ उसी प्रतापी सम्राट 'विक्रमादित्य' के नाम पर प्रचलन में आया. आज भी पंचांग निर्माण का कार्य उज्जैन के जंतर–मंतर के ज्योतिषियों द्वारा किया जाता है.

समय बदला और गुप्त वंश की स्थापना हुई. गुप्तवंशीय सम्राट चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के शासन काल में बहुत से विद्वान उज्जैन की राजसभा को सुशोभित किया करते थे. जहाँ एक ओर 'महाकवि कालिदास' जैसे साहित्यकार थे, तो दूसरी ओर 'आर्यभट्ट' जैसे गणितज्ञ एवं 'वराहमिहिर' जैसे खगोलवेत्ता भी थे. देश के स्वर्ण–युग की सांस्कृतिक गतिविधियाँ मध्य प्रदेश से ही संचालित की जा रही थीं. सम्राट हर्षवर्धन ने 'हरसूद' नामक शहर बसाया जो कुछ वर्षों पूर्व ही जलमग्न हुआ है. परमारवंशीय राजाओं ने हमारी सांस्कृति की समृद्धि में बड़ा योगदान दिया है. 'राजा भोज' स्वयं एक संस्कृत विद्वान थे तथा उन्होंने कुछ नाटकों की रचना भी की.

मध्य प्रदेश वीरांगनाओं की भूमि भी रहा है. यहाँ पर महारानी 'दुर्गावती' जैसी वीरांगना हुई हैं जो कि सौंदर्य एवं युद्ध कौशल का अद्वितीय उदाहरण हैं. महारानी 'अहिल्याबाई होलकर' न केवल न्याय प्रिय थीं, बल्कि उन्होंने अपने चातुर्य से दुश्मनों को भी अपने वश में कर लिया था. इन्दौर नगर की आधारशिला रखने में रानी अहिल्याबाई होलकर का महत्वपूर्ण योगदान है. 'रानी लक्ष्मीबाई' का नाम प्रत्येक भारतीय बहुत आदर के साथ लेता है. इसी तरह 'रानी मृगनयनी' एवं उनके त्याग को कौन भूल सकता है? इतिहास प्रसिद्ध यात्री 'इब्नबतूता' ने मध्य प्रदेश का भ्रमण किया और उसने यहाँ के मालवा क्षेत्र की विशेष रूप से प्रशंसा की है. इसी तरह कबीर अपने दोहे में मालवा के लिए कहते हैं–

'मालव माटी गहन गंभीर, पग–पग रोटी, डग–डग नीर'. 1857 की क्रांति के दौरान मध्य प्रदेश के वीर क्रांतिकारी राणा बख्तावरसिंह ने अपने प्राणों की आहूति दी, जबकि 'नीमच' की छावनी में तैनात सैनिकों ने विद्रोह कर क्रांति का झंडा दिल्ली में जाकर बुलंद किया. 'शहीद चंद्रशेखर आजाद' के योगदान को कौन भूल सकता है?

बोलियाँ: मध्य प्रदेश में मुख्य रूप से 4 बोलियाँ – मालवी, निमाड़ी, बुँदेली तथा बघेली हैं. इन बोलियों के अतिरिक्त कई उप बोलियाँ भी हैं तथा कई उप बोलियाँ व जनजातीय बोलियाँ हैं. सभी बोलियों में लोकगीत, मिलते हैं, जो पीढ़ी–दर–पीढ़ी चले आ रहे हैं. कुछ स्थानीय समाचार पत्रों में सप्ताह के एक दिन

स्थानीय बोली का पन्ना भी प्रकाशित होता है. सारी बोलियाँ हिंदी की उपभाषाएं ही हैं. हिंदी जानने वाला व्यक्ति इन्हें आसानी से समझ सकता है.

लोकगीत: मध्य प्रदेश के लोकगीत बहुत ही सरस एवं ध्यानाकर्षक होते हैं.

मूल रूप से राजस्थानी शैली वाले 'ढोला मारू' के लोकगीत मालवा, निमाड़ एवं बुंदेलखंड में बहुत प्रचलित हैं. इन गीतों में प्रेम, बिछोह एवं पुनर्मिलन की कथाएं कही जाती हैं. निमाड़ में प्रत्येक अवसर पर लोकगीत गायन की परंपरा है. यहाँ पर मृत्यु गीत भी गाए जाते हैं. भील जनजाति में विभिन्न प्रकार के लोकगीत गाए जाते हैं जो अधिकांशतः बाँसुरी की धुन पर होते हैं. इसके साथ ही इन गीतों में ढोल एवं थाली भी साज का काम करते हैं. लोकगीत गायन की एक प्रतिस्पर्धी शैली सारे मध्य प्रदेश में प्रचलित है जिसे 'कलगीतुर्रा' कहा जाता है. इसमें महाभारत से लेकर वर्तमान मुद्दों पर गीत गाए जाते हैं तथा इसमें एक मंडली दूसरी मंडली को हराने का प्रयास करती है. सिंगाजी, कबीर, मीरा, दादू, जैसे महान संतों के पदों की निमाड़ी गायन शैली को 'निर्गुणी' शैली के नाम से जाना जाता है. मालवा एवं निमाड़ में प्रचलित 'फाग', बहुत लोकप्रिय गायन शैली है. इसे बहुत रस लेकर गाया एवं सुना जाता है. लोकप्रिय नृत्य 'गरबा' के साथ ही गरबा गायन की परंपरा है. मूल रूप से गुजराती शैली में कुछ स्थानीयता भी आती है तथा स्थानीय पुट इस शैली को रोचक एवं सरस बना देता है. गायन को मृदंग (ढोल का एक रूप) का साथ मिलता है. रासलीला के दौरान गौलन गीत गाए जाते हैं. मालवा क्षेत्र के 'नाथ समुदाय' के बीच भर्तृहरी लोक-कथा के प्रवचन सबसे लोकप्रिय गायन स्वरूप है. श्राद्ध के दिनों में मालवा में गोबर की 'संजा' बनाने तथा युवतियों द्वारा संजा गीत गाने का खूब प्रचलन है. संजा एक बालिका वधू है, उसका दुःख हर कन्या का अपना दुःख है. बुंदेलखंड योद्धाओं की भूमि है तथा वर्षा ऋतु में यहाँ पर आल्हा-उदल शैली में जोश से परिपूर्ण गीत गाए जाते हैं. आल्हा धुन पर रामायण एवं महाभारत की कथा सुनाने का भी चलन है. बुंदेलखंड क्षेत्र के लोक-गीतों की गायन शैली मध्यप्रदेश के अन्य क्षेत्रों से अलग है. इसमें पुरुष और महिला, दोनों की आवाज मजबूत और शक्तिशाली होती है. इन गानों में समृद्धि और विविधता होती है, जो इस क्षेत्र की संस्कृति और विरासत को दर्शाती है. गीतों की विषय वस्तु में काफी विविधता होती है.

लोक नृत्य: देश के अन्य भागों की ही तरह मध्य प्रदेश भी लोक नृत्यों के मामले में बहुत समृद्ध है. यहाँ पर प्रत्येक स्थान का तथा प्रत्येक अवसर पर किया जाने वाला लोक नृत्य मौजूद है. बुंदेलखंड में 'स्वांग' नामक नृत्य हर मौसम और अवसर पर आनंद हेतु किया जाता है. इसमें धीरे-धीरे ढोल की थाप बढ़ती जाती है और दर्शकों का आनंद भी बढ़ता जाता है. बुंदेलखंड के 'रे' नृत्य' को महिला के वेश में पुरुष करते हैं. यह बच्चे के जन्म के अवसर पर विशेष रूप से किया जाता है. मालवा क्षेत्र में 'मटकी' नामक नृत्य किया जाता है जो कि एक समुदाय नृत्य है. मटकी यहाँ पर ढोल बजाने की एक शैली को कहा जाता है. 'छेला' नामक अकेली नर्तकी इसे शुरू करती है, तत्पश्चात अन्य महिलाएं घूँघट ओढ़े इसमें सम्मिलित हो जाती हैं. निमाड़ में गणगौर पर्व के 9 दिनों तक गणगौर नृत्य करने की परंपरा है. बुंदेलखंड में विवाह, जन्म आदि अवसरों पर 'बधाई' नामक नृत्य किया जाता है जो कि बहुत ही आकर्षक एवं मनमोहक होता है. पुरुषों द्वारा किये जाने वाला सबसे आश्चर्यजनक नृत्य है 'बरेडी' जो, रंगीन वस्त्र धारण किये हुए 8-10 पुरुषों द्वारा किया जाता है. दिवाली से लेकर कार्तिक पूर्णिमा तक यह नृत्य किया जाता है. यह नृत्य भक्ति कविता से शुरू होता है. बुंदेलखंड में ही अविवाहित युवतियों द्वारा 'नवराता' नृत्य किया जाता है. इसके माध्यम से युवतियाँ अच्छे वर तथा वैवाहिक आनंद की कामना करती हैं. रंगोलियाँ बनाई जाती हैं, नवरात्रि के दौरान यह नृत्य किया जाता है जिसकी बड़ी धूम रहती है. मध्य प्रदेश की ही 'भारिया' जनजाति के बीच नृत्यों की बहुत समृद्ध परंपरा रही है. 'भरम', 'सेटम', 'सैला' और 'अहिराई' इस जनजाति के नृत्य हैं. विवाह के अवसर पर 'ढोल' एवं 'टिमकी' (एक प्रकार की पीतल धातु की थाली) पर किया जाने वाला नृत्य बहुत आकर्षक एवं मनोहारी लगता है. ढोल एवं टिमकी बजाते हुए वादक गोलाकार में घूमते हैं. धीरे-धीरे वादकों के कदम ढोल की ताल के साथ तेज होते जाते हैं तथा अंत में चरमोत्कर्ष तक पहुंचते हैं. 'भील' जनजाति में एक नृत्य प्रसिद्ध है, जिसे 'भगोरिया' कहा जाता है. यह होलिका दहन के पूर्व 8 दिनों तक विभिन्न गाँवों में लगने वाले हाटों में किया जाता है. 'धार' एवं 'झबुआ' जिलों में इस नृत्य की प्रधानता है. इस अवसर पर प्रेम-विवाह किये जाते हैं. ऋतुराज अपने पूर्ण यौवन पर होता है, पलाश के फूल खिले होते हैं, और ऐसे अवसर पर अपने विशेष ढोल लेकर इस जनजाति के लोग निकल पड़ते हैं. 'बैगा' जनजाति के मध्य दशहरा एवं 'डांडरिया' नृत्य प्रसिद्ध हैं. डांडरिया नृत्य बहुत रोचक एवं चित्ताकर्षक होता है. इसमें एक गाँव के विवाह योग्य पुरुष दूसरे गाँव में जाते हैं, जहाँ पर विवाह योग्य युवतियाँ गीत एवं नृत्य के माध्यम से उनका स्वागत करती हैं. इसी समुदाय का एक और नृत्य है 'परधौनी' जो कि दूल्हे का स्वागत करने के लिए किया जाता है. गोंड जनजाति में 'कर्मा' और 'सैली' नृत्य प्रचलित हैं, तो लेहंगी सहारिया में कोरकू जनजाति में 'थाप्ती' नृत्य किया जाता है.

मध्य प्रदेश में अन्य कलाएं

गायन एवं वादन के साथ ही प्रदेश में अन्य कलाओं का न केवल विकास हुआ है, बल्कि इनके माध्यम से देश को विश्व स्तरीय पहचान भी मिली है. खजुराहो की मूर्तिकला को देखने के लिए संसार भर से यात्री आते हैं. यहाँ पर स्थित मूर्तियां इतिहास के तांत्रिक दौर की याद दिलाती हैं. इन मूर्तियों से यह भी सिद्ध होता है कि प्राचीन भारतीय समाज कितना उन्नत एवं उदारवादी था. प्रत्येक विचारधारा एवं मत-मतांतर के लिए हमारे समाज में स्थान था. जब अधिकांश जनता का रुझान वैराग्य एवं आध्यात्म की ओर हुआ तो तत्कालीन चंदेल राजाओं ने पूजा स्थलों पर इस तरह की प्रतिमाएं बनाने का कठोर एवं प्रचलित धारा से विपरीत निर्णय लिया होगा. खजुराहो आज विश्व विरासत में सम्मिलित होकर प्रदेश और देश का मान बढ़ा रहा है. मूर्तिकला का जिक्र हो और पद्मश्री से सम्मानित मूर्तिकार 'रघुनाथ फड़के' का जिक्र न हो- यह असंभव है. उन्होंने 'धार' में रहकर बहुत सी यादगार प्रतिमाएं बनाईं. उनके द्वारा बनाई गयी प्रतिमाएं मुंबई के जुहू चौपाटी से लेकर इन्दौर के कोठारी मार्केट तक देखने को मिलती हैं.

श्री फड़के के शिष्यों ने उनकी याद में एक स्टूडियो बनाया है जो 'धार' नगर में स्थित है.

वास्तुशिल्प का जिक्र होने पर भोपाल के नवाबों द्वारा बनाए गये महलों की याद सहज ही आ जाती है. इसी तरह मुस्लिम शासन काल में मालवा की राजधानी रहा 'मांडू' अफगान वास्तुकला का बेजोड़ नमूना है. यहाँ स्थित होशंगशाह के मकबरे से प्रेरणा लेकर ही आगे ताजमहल का निर्माण हुआ. प्रदेश की राजधानी में स्थित नयी विधानसभा आधुनिक निर्माण कला का अनूठा उदाहरण है. यह भवन संपूर्ण भारतवर्ष की विधानसभा भवनों में सबसे बड़ा है तथा गोलाकार आकृति में बना हुआ है.

भोपाल का जिक्र हुआ ही है, तो याद आ रहा है यहाँ पर स्थित 'भारत भवन'. यह प्रदेश की विभिन्न कलाओं का समन्वयक स्थल है. यहाँ पर नित-प्रतिदिन किसी न किसी नाटक का मंचन ख्याति प्राप्त कलाकारों द्वारा किया जाता है, इसके साथ ही यहां की कला-दीर्घा में देश के प्रसिद्ध चित्रकारों की कृतियाँ सहेज कर रखी गयी हैं. इतना ही नहीं, इस संग्रहालय में प्रदेश के सुदूर अंचल के निवासियों द्वारा बनाई गयी चित्रकारी को भी संरक्षित किया गया है.

भोपाल में ही स्थित है इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय. यहाँ पर प्रदेश के साथ ही देश की जनजातीय संस्कृति का सजीव चित्रण देखने को मिलता है. यहां पर आकर प्रत्येक व्यक्ति यह जान सकता है कि 'बैगा' जनजाति के घर कैसे बने होते हैं, अथवा किसी विशेष जनजाति में शिकार की परंपरा किस प्रकार की थी. यह संग्रहालय बड़े भूभाग में फैला हुआ है.

वस्त्र निर्माण भी यहां की एक कला है. 'गुना' जिले के इतिहास प्रसिद्ध स्थल चंदेरी तथा पश्चिमी निमाड़ के महेश्वर में बनी साड़ियाँ देश भर में प्रसिद्ध हैं. इसके साथ ही खादी के वस्त्र तथा जूट के वस्त्रों का निर्माण भी खूब किया जाता है. टेराकोटा के बरतनों पर सुंदर चित्रकारी कर तैयार किया जाता है. मालवा खाद्य पदार्थों के लिए भी विश्व प्रसिद्ध है. रतलाम एवं इन्दौर में बनी नमकीन की मांग बढ़ती ही जा रही है.

मेले एवं महोत्सव

अपनी समृद्ध परंपरा के चलते प्रदेश स्वयं में कई मेले एवं महोत्सव समेटे हुए आनंद एवं उल्लास से सराबोर है. उज्जैन जिले में वर्ष में सर्वाधिक 227 मेले लगते हैं. हाल ही में संपन्न सिंहस्थ मेले के विषय में तो सभी जानते हैं. यह मेला 12 वर्षों में बृहस्पति के सिंह राशि में प्रवेश करने पर लगता है. करोड़ों श्रद्धालु क्षिप्रा नदी में पवित्र स्नान करने आते हैं. इसके साथ ही संतों का ऐतिहासिक समागम होता है. प्रदेश में आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक महत्व के कई मेले लगते हैं. इन मेलों में संत सिंगा जी का मेला (पश्चिमी निमाड़), हीरा भूमिया का मेला (ग्वालियर), जागेश्वरी देवी का मेला (गुना), इज्तिमा (भोपाल) आदि प्रसिद्ध हैं. अधिकांश मेले ग्रीष्म एवं शीत ऋतुओं में लगते हैं. कई मेले पशु व्यापार का प्रमुख केंद्र होते हैं.

मेलों की ही तरह शासकीय स्तर पर विभिन्न महोत्सव मनाए जाते हैं जिनका उद्देश्य विभिन्न कलाओं को बढ़ावा देना तथा संबंधित क्षेत्रों से जुड़ी हुई प्रतिभाओं को सम्मानित करना है.

मध्य प्रदेश में आयोजित किये जाने वाले विभिन्न समारोह

1 अखिल भारतीय कालिदास समारोह-उज्जैन-नाटक एवं अन्य भारतीय शास्त्रीय कार्यक्रमों के साथ साहित्यिक गतिविधियाँ.
2 अलाउद्दीन खान संगीत समारोह-मैहर, सतना-भारतीय शास्त्रीय संगीत प्रस्तुति.
3 अमीर खान समारोह-इन्दौर-भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं नृत्य प्रस्तुति.
4 भगोरिया हाट-धार, झबुआ, अलीराजपुर एवं पश्चिमी निमाड़ में होली के दौरान मार्च माह में आयोजित होने वाला जनजातीय विवाह समारोह.
5 भवभूती समारोह -ग्वालियर-संस्कृत भाषा पर विभिन्न साहित्यिक कार्यक्रम.
6 ध्रुपद समारोह-भोपाल-भारतीय शास्त्रीय संगीत पर ध्रुपद गायन कार्यक्रम.
7 भारतीय शास्त्रीय नृत्य समारोह-खजुराहो-राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त नर्तकों द्वारा भारतीय शास्त्रीय नृत्य की प्रस्तुति.
8 केशव जयंती समारोह-ओरछा-साहित्यिक प्रस्तुति.
9 लोक रंग समारोह-भोपाल-देश की लोक कलाओं पर पाँच दिवसीय कार्यक्रम. लोक कला अकादमी द्वारा प्रत्येक वर्ष इसका आयोजन गणतंत्र दिवस के दौरान किया जाता है.
10 मालवा उत्सव-इन्दौर एवं उज्जैन-शास्त्रीय एवं लोक कलाओं का प्रस्तुतिकरण.
11 निमाड़ समारोह-महेश्वर-शास्त्रीय एवं लोक संगीत प्रस्तुति.
12 पचमढ़ी उत्सव-पचमढ़ी-भारतीय लोक कला प्रस्तुति.
13 पंडित कुमार गंधर्व समारोह -देवास-देश के शास्त्रीय संगीत का प्रस्तुतिकरण.
14 राष्ट्रीय हिंदी नाट्य समारोह-भोपाल-विख्यात कलाकारों द्वारा प्रस्तुति.
15 राष्ट्रीय रामलीला मेला-प्रदेश के विभिन्न हिस्सों में रामलीला का प्रदर्शन, (रामायण में भाग ले चुके कलाकारों द्वारा).
16 तानसेन संगीत समारोह-ग्वालियर-शास्त्रीय गायन एवं वादन, नवंबर अथवा दिसंबर में आयोजन.

इसके साथ ही सुगम संगीत के क्षेत्र में लता मंगेशकर एवं किशोर कुमार सम्मान भी प्रदान किये जाते हैं.

इस तरह देश का हृदय प्रदेश अपनी समृद्ध परंपरा के अनुसार लोक संस्कृति के उत्थान में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है. यहाँ का इतिहास तो समृद्ध है ही, आधुनिक समय में भी लोक संस्कृति के विकास में प्रदेश पीछे नहीं है. राज्य की संस्कृति विविधता से परिपूर्ण तथा अनूठी है. यहाँ की संस्कृति के विषय में यह कहा जाता है कि संभवतः यूरोप के पश्चिमी देशों से शुरू कर पूर्व में यात्रा समाप्त करने पर भी इतनी सांस्कृतिक विविधता परिलक्षित न होगी जितनी अविभाजित मध्य प्रदेश के झबुआ से बस्तर के मध्य हुआ करती थी. मध्य प्रदेश की संस्कृति का उपर्युक्त वर्णन महज एक झलक भर है. संपूर्ण चित्रण को छोटे से लेख की शब्द सीमा में बांधा नहीं जा सकता.

अर्पित जैन
स्टाफ प्रशिक्षण केंद्र, भोपाल

Android likely to get a Kerala delicacy name Neyyappam!

Google is about to decide the name of the next version of its Android, the popular Mobile OS. The proposed version is presently codenamed as 'Android N' and the stable release of the operating system is expected in mid 2016 with a yummy food name. When we go through the version history of Android Mobile Operating System, all are confectionery themed names in alphabetical order starting from C. The first two were named as Alpha and Beta. From C onwards, android came out with tasty names such as Cupcake, Donut, Eclair and so on. The present version name is Marshmallow. The noted exception was version 4.4, which was called Kitkat, a successful commercial chocolate brand. During the recent Indian visit of Sundar Pichai, the CEO of Google, one prominent question put to him was whether we can expect its Android iteration after an Indian dessert. Now the time has come for the new name selection.

A sizable number of online volunteers are expecting the new version name to be christened Android Neyyappam. Google started a web link for the naming process https://www.android.com/n to get inputs from common people. Naturally, netizens started thinking "Why don't we have Indian foods as Android version names?" Some food lover commenced by making Neyyappam his/her choice and started an online campaign to make it viral with the help of social networking platforms.

The option to submit the name of one's choice started on 18th May and ended on 8th June 2016. Google clearly gave notice that the names will not be judged and there will be no prizes or compensation to any participant in case the name of their choice is selected. Many people believe that the chance of an Indian name is on the higher side, especially because of the stiff competition prevailing in the mobile OS sector. Apple is trying to make an entry into the local Indian market by introducing a low priced edition of its iPhone. So, selection of a desi name for the latest Google Android version may ease the market entry into India. Some believe that the whole naming process is a clever marketing campaign by Google.

Meanwhile Kerala Tourism has taken the name selection as an opportunity to make its brand presence felt across the globe. Neyyappam is a very popular local delicacy of Kerala state. If Android gets neyyappam as its tail end name, naturally Kerala may get very good publicity on social media during internet searches by individuals. It goes without saying that if these searches are translated into tourism business, then the real gainer will be God's own country. There is a very popular saying in Malayalam 'Neyyappam thinnal randundu karyam' (eating neyyappam results to two gains), So getting an Android name will fetch two things - the first is clearly a global awareness of Indian food, and second is inflow towards Kerala tourism.

Tail piece : Neyyappam is a sweet rice based fritter fried in oil. Rice flour, jaggery, coconut and cardamom are the basic ingredients and usually coconut oil is the cooking medium. But the name points towards a food based on ghee - "Neyy" meaning ghee and "Appam" meaning pancake. So the funny question is where is the ghee in Neyyappam?

V K Adarsh
R. O. Kozhikode

कार्टून कोना

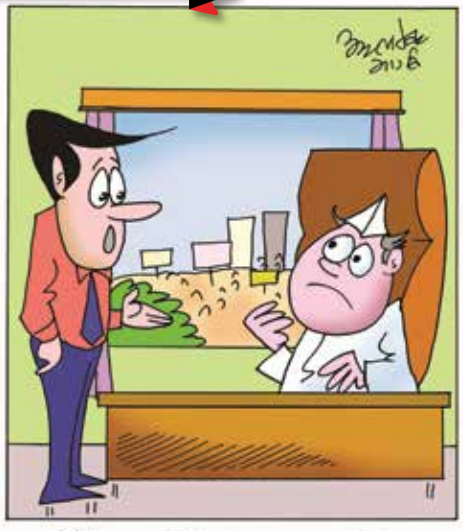

"Madhubani" - The Portrait of Mithila

India has always been known as the land that portrays cultural and traditional vibrancy through its conventional arts and crafts. The various states and union territories spread across the country have their own distinct cultural and traditional identities which are displayed through various forms of art prevalent locally. Every region in India has its own style and pattern of art, which is known as folk art. Other than folk art, there is yet another form of traditional art practiced by several tribes or rural populations, which is classified as tribal art. The folk and tribal arts of India are very ethnic and simple, and yet colorful and vibrant enough to speak volumes about the country's rich heritage.

Let me Introduce one of the Folk Arts of Mithila Region of Bihar i.e Madhubani painting.

Madhubani painting, also referred to as Mithila Art (as it flourished in the Mithila region of Bihar), is characterized by line drawings filled in by bright colours and contrasts or patterns. This style of painting has been traditionally done by the women of the region, though today men are also involved in order to meet the rising demand. These paintings are popular because of their tribal motifs and use of bright, earthy colours. These paintings are done with mineral pigments prepared by the artists themselves. The work was traditionally done on a freshly plastered or mud wall.

Figures from nature & mythology are adapted to suit the style of the paintings. The themes & designs widely painted are of Hindu deities/objects such as Krishna, Rama, Siva, Durga, Lakshmi, Saraswati, Sun and Moon, Tulasi plant, court scenes, wedding scenes, social happenings etc. Floral, animal and bird motifs, along with geometrical designs are used to fill up all the gaps. The skill is handed down through the generations, and hence the traditional designs and patterns are widely maintained.

For commercial purposes, the work is now being done on paper, cloth, canvas etc. Cotton wrapped around a bamboo stick forms the brush. Black colour is obtained by mixing soot with cow dung; yellow from turmeric or pollen or lime and the milk of banyan leaves; blue from indigo; red from the kusam flower juice or red sandalwood; green from the leaves of the wood apple tree; white from rice powder; orange from palasha flowers. The colours are applied flat with no shading and no empty space is left in between.

In order to create a source of non-agricultural income, the All India Handicrafts Board and the Government of India have been encouraging the women artists to produce their traditional paintings on handmade paper for commercial sale. Madhubani painting has become a primary source of income for scores of families. The continuing market in this art throughout the world is a tribute to the resourcefulness of the women of Mithila who have successfully transferred their techniques of bhitti chitra or wall painting to the medium of paper.

Abhinav Kumar
Kattappana Br., R. O., Kottayam

सुरेन्द्रनगर शाखा, गुजरात में कार्यरत श्रीमती चंपाबेन डी. वाघेला की सुपुत्री कु. देवांशी डी. वाघेला ने बी.टेक की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त कर पुणे की इन्फोसिस कंपनी में नौकरी प्राप्त की.

एमएसएमई विभाग, केंद्रीय कार्यालय, मुंबई में कार्यरत श्रीमती सोनम लखानी की सुपुत्री कु. नेहा राजेश लखानी ने 10वीं की परीक्षा में 97.20% अंक प्राप्त किए.

औद्योगिक संबंध विभाग, केंद्रीय कार्यालय, मुंबई में कार्यरत श्रीमती मानसी मंगेश सावंत की सुपुत्री कु. तन्वी मंगेश सावंत ने 10वीं की परीक्षा में 94.20% अंक प्राप्त किए.

क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली में कार्यरत श्री प्रह्लाद सिंह, मुख्य प्रबंधक की सुपुत्री कु. रिया सिंह, ने 12वीं की परीक्षा में 91.60% अंक प्राप्त कर अपना तथा अपने पिता का नाम रोशन किया.

बीएसएम, केंद्रीय कार्यालय, मुंबई में कार्यरत श्रीमती अनीता अरुण भनारकर की सुपुत्री कु. रुजुला अरुण भनारकर ने 10वीं की परीक्षा में 88.40% अंक प्राप्त किए.

एमएमओ, करेन्सी चेस्ट, केंद्रीय कार्यालय, मुंबई में कार्यरत श्री प्रवीण दादू सोनावले की सुपुत्री कु. समीक्षा प्रवीण सोनावले ने 10वीं की परीक्षा में 69.60% अंक प्राप्त किए.

श्री अनिल कुमार के सुपुत्र चि. जयदीप ने 10वीं कक्षा की परीक्षा में 96.20% अंक प्राप्त कर पूरे वसई तालुका में प्रथम स्थान प्राप्त किया.

जी.बी.सेल, मुंबई समाचार मार्ग में कार्यरत श्री राजाराम बी. कदम की सुपुत्री कु.अनुष्का राजाराम कदम ने 10वीं की परीक्षा में 91.20% अंक प्राप्त किए.

ताड़देव शाखा में कार्यरत श्रीमती मीना लोपेस के सुपुत्र चि.जय आर. लोपेस, ने 10वीं की परीक्षा में 91.60% अंक प्राप्त किए.

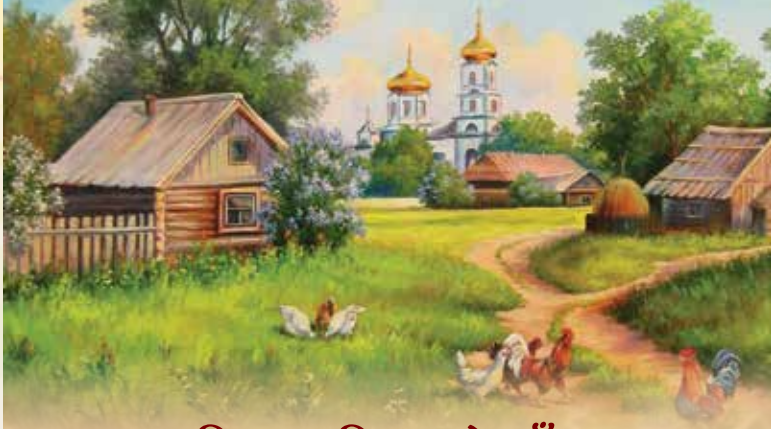

फिर न मिला वो गाँव

रक्तिम होता वो पश्चिम का आकाश
दिन भर बाद कुछ थक सी गयी है प्रकृति
यूँ होता आभास

पेड़ों की टहनियों पर
बढ़ती पंछियों की हलचल
लौटता गाँव की ओर
किसान और चौपालों का दल

गाँव की सीमा से कुछ दूर
निरंतर बहती जाती
गंगा की धारा
दफ्तर से छूटते ही मैं नियमित
आकर बैठता इनके तट पर
मेरे मन को मिलता था
यहाँ एक सुकून, एक सहारा.

पहुँचते ही कमरे में
मेरे हम-उम्र उस गाँव को
संगीसाथी मुझे घेर लेते
दिनभर की आप बीती
कुछ मुझसे सुनते
कुछ मुझे सुनाते

था मैं घर से कोसों दूर वहाँ
लेकिन परिवार सा प्यार मिला वहाँ
किसी घर से मुझे
पिता सरीखा सहारा
तो किसी घर से
माँ सरीखा प्यार मिला

तब से आज तक
मैं गुजर गया कई मुकामों से
तमाम से भेंट हुई
तमाम मेरे दोस्त बन गए
इस जीवन के सफर में
कई महानगर देखे
कई शहर की गलियों से गुजर गया
पर फिर भी न मिला कहीं वो गाँव
और हम उस गाँव को
ढूँढते रह गए।

श्यामल ब्रह्मचारी
क्षे. का. अहमदाबाद

बैंकरप्सी अधिनियम - 2016
अर्थव्यवस्था की रफ्तार का सहायक

वैसे तो भारत में 1874 से व्यक्ति विशेष के खिलाफ दिवालिया कानून अस्तित्व में था, लेकिन यह पूर्ण रूप से स्पष्ट नहीं था, अत: बैंकरप्सी बिल-2016 (दिवाला और शोधन अक्षमता संहिता 2016), दिवाला और शोधन अक्षमता निधि की स्थापना करने और उससे संबंधित विषयों को अनुबद्ध करने के लिए एक विधेयक बना कर लोक सभा,राज्यसभा एवं राष्ट्रपति की मंजूरी हेतु पेश किया गया. राज्यसभा ने इसे 11 मई 2016 को मंजूरी दे दी है. राष्ट्रपति ने भी इस नए बिल को अपनी मंजूरी दे दी है. इस नए कानून के तहत कंपनियों अथवा व्यक्तियों के दिवालियेपन की स्थिति से जुड़े मामलों का निपटान 180 दिन के भीतर करने का प्रावधान है. 'दिवालियापन' ऐसी स्थिति से जुड़ा है, जहां कोई इकाई या व्यक्ति, बकाए का भुगतान नहीं कर पाता है. 'बैंकरप्सी बिल' के कानून बनने पर कंपनी को बंद करने या उसकी संपत्ति बेचने पर 180 दिन के भीतर फैसला लेना होगा. इस कानून के मुताबिक यदि कोई व्यक्ति अपने दिवालिया होने की प्रक्रिया को धोखाधड़ी अथवा दुर्भावनापूर्ण मंशा से शुरू करता है, तो उसके खिलाफ उचित प्राधिकरण द्वारा न्यूनतम एक लाख रुपए और अधिकतम एक करोड़ रुपए तक का जुर्माना लगाया जा सकता है. इससे सरकार निश्चित अवधि में दिवालिया कंपनियों के मामले निपटा सकेगी.

अब कंपनी 180 दिन में खुद को दिवालिया घोषित कर सकती है. अगर 75% कर्जदाता सहमत हों तो इसकी अवधि 90 दिन और बढ़ाई जा सकती है. निश्चित रूप से नए कानून से ताज़ा निवेश हासिल करने में मदद मिलेगी. साथ ही दिवालिया कंपनी की संपत्ति का मूल्यांकन भी नहीं घटेगा.

कौन आवेदन कर सकता है:

कोई कार्पोरेट देनदार यदि चूककर्ता हो जाए या वित्तीय या अन्य कोई लेनदार पैसा नहीं लौटा पाता है, तो वह दिवालिपन के लिए आवेदन कर सकता है. यदि दिवालियापन की राशि एक लाख रुपये से एक करोड़ रुपये तक की हो, तो दिवालिया घोषित होने के बाद दिवालिया व्यक्ति और दिवालिया हो चुकी कंपनी की संपत्ति बेचकर वितरण करने के मामले आ जाते हैं. जहाँ तक वित्तीय लेनदार की बात है, तो वह सुंयक्त या निजी रूप से कार्पोरेट स्तर पर दिवालिया होने का आवेदन कर सकता है. इसके लिए जरूरी होगा कि वह चूककर्ता का रिकॉर्ड पेश करे. इस स्थिति में प्राधिकरण आवेदन प्राप्त होने के 14 दिनों में इसकी पुष्टि करता है. इस कानून के आने से कारोबारी परिस्थितियाँ आसान होने के साथ, बैकों की अनर्जक अस्तियों की वसूली की राह भी आसान होगी.

किसी भी देश में व्यवसाय की असफलता के कई कारण हो सकते हैं, पर इसका सीधा असर वहाँ काम कर रहे कर्मचारियों, शेयर धारकों, उधारकर्ताओं और देश की अर्थव्यवस्था पर पड़ता है. घाटे में चल रही कंपनियाँ, जिनकी संपत्ति की बिक्री, मैनेजमेंट में बदलाव और मुकदमों पर फैसला अब तक जल्दी नहीं लिया जाता था, इससे लाभान्वित होंगी. इससे नई व्यावसायिक इकाई स्थापित होने के साथ रोजगार के अवसरों और आर्थिक विकास में तेज़ी आयेगी. देश में दिवाला और शोधन अक्षमता मामलों के निपटारे के लिए अब तक निम्न कानून थे लेकिन कानूनी प्रकिया में देरी की वजह से ये कारगर साबित नहीं हो पा रहे थे :

- रुग्ण औद्योगिक कंपनी विशेष उपबंध अधिनियम 1993
- वित्तीय अस्तियों का प्रतिभूतिकरण व पुनर्गठन तथा प्रतिभूति हितों का प्रवर्तन अधिनियम 2002
- बैंकों एवं वित्तीय संस्थाओं का शोध्य ऋण वसूली अधिनियम 1993
- कंपनी अधिनियम 2013

अमेरिका, ब्रिटेन व जर्मनी जैसे विश्व के अन्य देशों में दिवालिया कानून के कारण 12 महीनों में ऐसे मामलों का निपटान हो जाता है, हमारे देश में दिवालिया प्रकिया में अब तक औसतन साढ़े चार वर्ष लगते रहे हैं. दिवालिया होने से संबधित हज़ारों मुकदमे देश की विभिन्न अदालतों में चल रहे हैं.

निश्चित रूप से देश की 'ईज़ ऑफ डूइंग बिज़नेस' में भी रैंकिग सुधरेगी. दरअसल हर वर्ष विश्व बैंक 189 देशों की 'ईज़ ऑफ डूइंग बिजनेस' की रैंकिंग करता है जो यह बताती है कि उस देश में लघु एवं मध्यम उद्योगों के लिए सरकारी नियमों का पालन करके व्यवसाय करना कितना आसान या कठिन है. पिछले साल की सूची में सिंगापुर का स्थान सबसे ऊपर है. भारत का स्थान इस रैंकिंग में 130वाँ है. विशेषज्ञों का मानना है कि दिवाला और शोधन अक्षमता कानून से इस रैंकिंग में सुधार होगा.

दिवाला कानून का सीधा फायदा कर्ज़ में फंस चुके बैंको को मिलेगा. असल में अनर्जक अस्तियों के रूप में बैंकों का काफी पैसा ब्लॉक पड़ा है. इस नियम से यह ब्लॉक खत्म होगा. अगर बैंक को दिवालिया हो चुकी किसी कंपनी से 10 लाख रुपये लेने हैं तो वह आठ लाख की संपत्ति बेचकर मान जाए और दो लाख छोड़ भी दे, तो भी इस आठ लाख रुपये को बैंक फिर से संचालन कर व्यवसाय कर सकेगा. इससे बैंक को भी फायदा मिलेगा और ग्राहक कर्ज़ लेकर फिर से कारोबार शुरू कर सकेगा. साथ ही छोटे निवेशकों और जमाकर्ताओं को इसका लाभ मिलेगा. गौरतलब है कि सार्वजनिक क्षेत्र के बैकों का एनपीए 31.03.2016 तक लगभग 5.00 लाख करोड़ रुपये था.

इस नियम से घाटे में चल रही कंपनियों को बंद करना आसान हो जाएगा. साथ ही नई कंपनी खोलने या कंपनी की संपत्ति बेचने के नियम सरल हो जाएंगे. नए बैंकरप्सी कानून के मुताबिक किसी कंपनी को बंद करने पर 180 दिन के भीतर फैसला लेना होगा. यही नहीं, फास्ट ट्रैक एप्लिकेशन को 90 दिन में निपटाना होगा. मगर इसके लिए 75 फीसदी कर्ज़दाताओं की सहमति जरूरी होगी. कंपनी की संपत्ति को बेचने के लिए विशेषज्ञों की टीम बनाई जाएगी, जो प्रबंधन की जगह लेगी. नए कानून में घाटे से जूझ रही कंपनी का रिवाइवल करना ही इकलौता विकल्प नहीं होगा. इसके लिए दूसरे कदम भी उठाने का प्रावधान है. इस बैंकरप्सी बिल के कारण बैंकरप्सी से जुड़े मामलों को निपटाने में अदालतों का बोझ कम होगा. अत: आशा की जाती है कि दिवाला और शोधन अक्षमता नियम 2016 के बाद दिवालिया संबंधी मामले जो वर्षों में निपटते थे, अब 3-4 महीनों में निपट सकेंगे और देश के विकास को नई गति मिलेगी.

बी एम सैनी
स्टाफ प्रशिक्षण केंद्र, भोपाल

GOA – ITS EUPHORIC AURA MUSN'T RECEDE

If you're here, reading this, then I'm hoping it's because you've just read the word GOA. Yes, this is an effect this place has on most of us who have been there or want to be there. Because it is known for "being a grungy/hippy destination with happy hours going through out the day, an easy going atmosphere with continuous sunshine along its shores, a place with heritage architecture, and of course, one must not forget the sea food & hearty meat delicacies".

Goans have a great love for music which can be percieved across the state, and corroborated through the numerous dances, band festivals, concerts or dramatical plays that attract many outsiders and it has always been a hub for foreign tourists and youngsters with a love for music.

Goa, in its present avatar, has turned into something more family oriented, suitable for friendly get togethers and low budget tourism (domestic and foreign). If you check the figures, you will find that there is an increasing number of domestic tourists that are flocking to Goa. There is an almost 40% increase in the number of domestic footfalls as compared to a mere 1% increase in foreign tourists. Many Indians think Goa is largely Roman Catholic. Not so - around 65 per cent of Goans are Hindus. But in the main tourist areas, along the coast, the Catholic influence is strongest.

Enough said about the stats on Goa, now let's talk about my experience – a person who has been visiting this place for ages, and for whom it has been a tradition to be there at least once a year with family and friends. Belgaum & Goa are the only places that I can call home and feel at ease. My holiday itinerary always includes both these places where my origins are from.

Now, if it's on a visit with friends, you see a different side of Goa, where every hour is "HAPPY HOUR" and you find people from all walks of life enjoying their time with carefree abandon, and this has turned Goan holidays into something of a cult. There are events held throughout the year by different groups from around the world in the field of music _ for example the super hyped SUNBURN –EDM festival. There are a few more music festivals that are held at this place which are kept low profile, but which fall under the World's Top Ten Music festivals. Speaking of festivals, there are many festivals lined up throughout the year starting from the Goa carnival, Russian New year (majority Russian tourist visitors during that period), International Film Festival of India and many other conventions held during different times of the year. So, if you're in Goa, you may be lucky enough to witness one of these euphoric events. I've been fortunate enough to witness a few of these events before they became too commercialized.

When the visit is with your family, then its time to follow tradition by visiting a few churches and other places of interest. Not to forget all the relatives around whom you simply have to visit, which provide an opportunity to feast on the best Goan delicacies like the famous cafreal, vindaloo and other sea food delicacies. Yes! We never forget to visit our famous restaurants, which is in our family's to-do list once we're in Goa. If you're a meat-eater and a seafood lover, do not forget sorpotel with sanna and kingfish or lobsters (as per the availability). There is one more thing that I love about this place, which is the calm neighborhood and the houses usually with an L shaped porch for sitting out, that are used by the natives to relax or for pleasant chats. The last on the 'to do' list would be to visit the virgin beaches, which are less commercialized and more peaceful.

In this paragraph I would like to speak about the change in the quality of the experience felt by me over a year now. In my last few visits to Goa, I've come across a rising number of domestic tourists who behave arrogantly in the resorts, restaurants and at beaches because of their high disposable income. There is a lack of discipline among them that has turned the Goa experience into a chaotic and unpleasant memory for other tourists. I am saying this because I myself have witnessed a few such instances, and since my family members are in the hospitality industry, I can say with some authority that the behavior of domestic tourists is bringing down the sheen of the city. Also, the neighborhood is changing slowly because many Goans are now trying to acquire real estate with villas and flats mushrooming all over the coastal areas.This has turned it into a commercial place, instead of a place with rustic beauty and pristine shores that attract tourists. What next? Malls and multiplexes next to a beach?

So here I would like to end this article by inviting everyone to visit Goa and explore the city, with a humble request to all to do so without altering the sanctity and the atmosphere of the place.

P.S : Goans are known for their susegad (means relaxed in Konkani native language) life. Make your stay in Goa a susegad and euphoric one.

Robin Monteiro
C.O., Mumbai

शिखर की ओर

उच्च कार्यपालक वेतनमान VII में पदोन्नति पर हार्दिक बधाई

श्री एम. के. डोंगरे
महाप्रबंधक

श्री आर. रामनाथन
महाप्रबंधक

श्री एस. के. महापात्रा
महाप्रबंधक

हम आपके नेतृत्व में बैंक के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं.

उच्च कार्यपालक वेतनमान VI में पदोन्नति पर हार्दिक बधाई

श्री आई पी यादव
उप महाप्रबंधक

श्री अजीत व. मराठे
उप महाप्रबंधक

श्री एन. नारायणशंकर
उप महाप्रबंधक

श्री अरविंद मोहन
उप महाप्रबंधक

श्री अभिजित बसाक
उप महाप्रबंधक

श्री सी. एम. मिनोचा
उप महाप्रबंधक

श्री अंकेश जैन
उप महाप्रबंधक

श्री ए. एम. कुलश्रेष्ठ
उप महाप्रबंधक

श्री दिलीप सरुप्रिया
उप महाप्रबंधक

हम आपके नेतृत्व में बैंक के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं.

तीजन बाई

छत्तीसगढ़ प्रदेश के छोटे से गाँव 'गनियारी' से आगे बढ़कर पद्म भूषण पुरस्कार प्राप्त करने तक 'तीजन बाई' का सफर बहुत ही चुनौतीपूर्ण तथा रोमांचक रहा. आज तीजन बाई न सिर्फ छत्तीसगढ़ प्रदेश की शान हैं, वरन् देश-विदेश में भी इनके लोकगीत व नाट्य शैली ने अपनी अलग पहचान बनाई है.

24 अप्रैल, 1956 को छत्तीसगढ़ के भिलाई जिले से 14 कि.मी. दूर गनियारी गाँव में जन्मी 'तीजन बाई' को लोक संस्कृति में योगदान हेतु भारत सरकार द्वारा 1988 में पद्मश्री, 2003 में पद्मभूषण तथा संगीत नाट्य अकादमी द्वारा 1995 में संगीत नाट्य अकादमी पुरस्कार से विभूषित किया गया है. पाँच भाई-बहनों में सबसे बड़ी तीजन बाई को मुख्यत: उनके 'पंडवानी' संगीत की वजह से जाना जाता है.

पंडवानी, लोकगीत की एक ऐसी गायकी है, जिसमें मुख्यत: महाभारत के पात्रों- पांडवों तथा महाभारत में होने वाली घटनाओं- को गीत के माध्यम से श्रोताओं को सुनाया जाता है. महाभारत का यह लोक-स्वरूप इतना अद्भुत है कि इसे सुनने वाले श्रोता बहुत कम समय में ही अपने आप को इससे जोड़ लेते हैं. इसे प्रस्तुत करने वाले कलाकार निरंतर इसे परिमार्जित करते रहते हैं.

बचपन में ही अपनी नानी से सुनी महाभारत की कहानियाँ तीजन बाई को याद होने लगी थीं. महाभारत के प्रति उनकी रुचि देखकर उमेद सिंह देशमुख ने उन्हें अनौपचारिक प्रशिक्षण भी दिया. अद्भुत लगन और श्रद्धा के साथ प्रशिक्षण पूरा करने के पश्चात मात्र 13 वर्ष की उम्र में तीजन बाई ने अपना प्रथम मंच प्रदर्शन किया. सामान्यत: महिलाएं पंडवानी सिर्फ बैठकर ही गाती थीं, पंडवानी की इस शैली को 'देवमती शैली' कहा जाता है. पुरुषों द्वारा पंडवानी संगीत खड़े होकर गाया जाता है, जिसे 'कापालिन' शैली कहा जाता है. तीजन बाई वह प्रथम महिला हैं जिन्होंने कापालिन शैली में पंडवानी गीत का प्रदर्शन किया. मंच पर अपने प्रदर्शन के दौरान तीजन बाई के अद्भुत नृत्य तथा आकर्षक प्रस्तुति से लोग इनकी पंडवानी कथा से सम्मोहित हो जाते हैं. ज्यों ही प्रदर्शन आरंभ होता है, इनके रंगीन फुदनों वाला तानपूरा अभिव्यक्ति के अलग-अलग रूप ले लेता है. कभी दु:शासन की बाहें, कभी अर्जुन का रथ, कभी भीम की गदा तो कभी द्रौपदी के बालों में बदलकर यह तानपुरा श्रोताओं को इतिहास के उस समय में पहुंचा देता है, जहां वे तीजन के साथ-साथ जोश, क्रोध, दर्द, उत्साह, उमंग और छल-कपट की ऐतिहासिक संवेदना को महसूस करते हैं. उनकी ठोस लोकनृत्य वाली आवाज, अभिनय, संवाद और नृत्य उनकी कला के विशेष भाग हैं.

मात्र 10 रुपए के लिए अपनी प्रथम नृत्य प्रस्तुति के दौरान मध्य प्रदेश के लोकप्रिय कलाकार हबीब तनवीर की नजर तीजन देवी पर पड़ी और उन्होंने तीजन बाई को पंडवानी संगीत का प्रशिक्षण दिया. इसके बाद तीजन बाई ने अपनी लगन व परिश्रम से देश-विदेश में पंडवानी संगीत के अनेक प्रदर्शन किए. छत्तीसगढ़ के एक छोटे से गाँव से आगे बढ़कर तीजन बाई ने तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के समक्ष पंडवानी संगीत की प्रस्तुति की. देश विदेश में पंडवानी संगीत के माध्यम से अपनी पहचान बनाने वाली तीजन बाई को छत्तीसगढ़ के बिलासपुर विश्वविद्यालय द्वारा वर्ष 1988 में डी. लिट. की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया. यह तीजनबाई की मेहनत व लगन ही थी, जिसकी वजह से वे पुरुष प्रधान समाज से होने के बावजूद भी सफलता के अनेक कीर्तिमान स्थापित कर पाईं. आज के इस युग में हमारे देश को तीजनबाई जैसी अनेक महिलाओं की जरूरत है, जिनसे हमारे देश की महिलाएं प्रेरणा लें और एक सशक्त समाज की स्थापना कर सकें... यही तो है महिला सशक्तिकरण.

देवराज मजुमदार
देवपुरी शाखा

बुंदेलखंड
एक सांस्कृतिक परिचय

बुंदेली बोली की दृष्टि से जो भाग वास्तविक बुंदेलखंड क्षेत्र है, आज उसका कुछ भाग उत्तर–प्रदेश और मध्यप्रदेश में स्थित है जिसमें झांसी, हमीरपुर, बांदा, जालौन, सरीला, ग्वालियर, ईसागढ़, विदिशा, भोपाल, टीकमगढ़, छतरपुर, पन्ना, चरखारी, समथर, दतिया, विजावर, अजयगढ़ तथा सागर, दमोह, जबलपुर और होशंगाबाद सम्मिलित किये जाते हैं. सिवनी का कुछ भाग भी इसके अंतर्गत आता है.

प्राचीन काल से बुंदेलखंड अनेक शासकों के अधीन रहा है इसलिए इसके नाम समय–समय पर बदलते रहे हैं. जैसे–पुराणकाल में यह 'चेदि' जनपद के नाम से जाना गया तो इसको दस नदियों वाला 'दशार्ण' प्रदेश भी कहा गया है. विंध्य पर्वत की श्रेणियां होने के कारण इसे 'विंध्य भूमि' या 'विंध्य पार्श्व' संज्ञा भी मिली है. बुंदेलखंड की दक्षिणी सीमा रेवा (नर्मदा) के द्वारा बनती है इसलिऐ इसे 'रेवा का उत्तर प्रदेश' भी माना जाता है. बुंदेलखंड में पुलिन्द जाति और शबरों का अनेक समय तक निवास रहा है इसलिए कुछ विद्वान इसे 'पुलिन्द प्रदेश' अथवा 'शबर–क्षेत्र' भी कहते हैं.

बुंदेलखंड राजनैतिक इतिहास में दसवीं शताब्दी के बाद ही अपनी संज्ञा को सार्थक करता है. चंदेली शासन में यह क्षेत्र 'जुझौती' के नाम से जाना जाता था किन्तु जब पंचम् सिंह बुंदेल के वंशजों ने पृथ्वीराज के खंगार सामन्त को 'कुण्डार' में परास्त किया और इस प्रदेश पर अधिकार जमाया, तब इस भूमि का नाम बुंदेलखंड पड़ा.

बुंदेलखंड के विभिन्न भाग एक लम्बे समय तक भिन्न–भिन्न शासकों के शासनाधीन होने के कारण विभिन्न भागों के बुंदेलखंडियों में एकता के बीच विविधिता का आभास मिलता है, तथापि बुंदेलखंड के विभिन्न भागों को मिला कर प्राकृतिक रचना, जलवायु, भाषा, साहित्य रीति–नीति और लोक–व्यवहार में यह एक ऐसा खंड है, जिसमें विशेष अपनापन है.

बुन्देली संस्कृति के प्रमुख लोकोत्सव:

नौरता:

आश्विन शुक्ल से पूरे नौ दिन तक ब्रह्ममुहूर्त में गांव की चौपालों या नगर के बड़े चबूतरों पर अविवाहित बेटियों द्वारा सृजित एक ऐसा रंग बिरंगा संसार दिखता है, जिसमें व्यवस्था होती है और संस्कार होते हैं. राग–रंग और लोक–चित्रों में बुन्देली गौरवान्वित होती है. बेटियाँ एक साथ गीत–संगीत, नृत्य, चित्रकला और मूर्ति कला, साफ–सफाई से मिश्रित लोकोत्सव 'नौरता' मनाती हैं. चौरस लकड़ी के तख्ते पर, दीवार पर अथवा नीम के मोटे तने पर मिट्टी से एक विराट दैत्याकार प्रतिमा बनाई जाती है, जिसका शृंगार चने की दाल, ज्वार के दानों, चावल और गुलाब के फूलों से किया जाता है. इसके चबूतरे पर एवं सूखे रंगों से चौक पूरा जाता है.

'नौरता' का अर्थ: नौरता एक दैत्य था (सुअटा का भूत) जो कुंवारी कन्याओं को खा जाता था. लड़कियों ने उससे प्राण बचाने के लिए माता पार्वती की आराधना नवरात्रि में की और वे सुरक्षित हो गयीं. यह पर्व कुंवारी कन्याओं का ही है. गौरी का ही कुंवारी स्वरुप इसमें आया है. सामान्य गीतों में "नारे सुअटा" में उन्हीं भूतनाथ का स्वरुप चित्रित है जिसका वर्णन गोस्वामी तुलसीदास जी ने 'श्री रामचरित मानस' के शिव विवाह में दूल्हे के रूप में किया है.

मामुलिया:

क्वार मास के कृष्ण पक्ष में कुँवारी कन्याएं मामुलिया, महबुलिया या माबुरिया खेलती हैं. कन्याएं बेरी की कांटेदार शाख लेकर, उसे विभिन्न प्रकार के पुष्पों से सजाकर, फल मेवा आदि लगाकर, लहंगा और ओढ़नी से उसे एक स्त्री का आकार देती हैं. साफ–सुथरे स्थान पर चौक बना कर उसे प्रतिष्ठित करने के बाद हल्दी, अक्षत, पुष्पादि से पूजती हैं और पंजीरी, हलुवा, फलादि का भोग लगाती हैं. उसके बाद वह देवी सिद्ध हो जाती हैं.

मामुलिया नारीत्व का प्रतीक है. पुष्पों की कोमलता, सुन्दरता और प्रफुल्लता, कांटों की प्रखरता, संघर्षशीलता और वेदना, उदारता और कल्याण की भावनाएँ एक स्त्री में होती हैं. इन गुणों के साथ ही उसमें पतिव्रत की साधना के लिए पूरी–पूरी तत्परता होती है. सतीत्व की संकल्पधर्मिता के कारण वह नारी का अनुकरणीय मॉडल बन जाती है. इस प्रकार यह समन्वित नारी मूर्ति देवी ही है. इस दृष्टि से 'मामुलिया' को देवी की लोकमान्यता मिली थी.

दूसरी प्रतीकात्मकता यह भी है कि पुष्प रुपी सुख और काँटे रुपी दु:ख से यह जीवन बना है. यह क्षण–भंगुरता, जीवन की अस्थिरता की ओर संकेत है. इस प्रकार 'मामुलिया' में दार्शनिक भावों की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति हुई है, इसीलिए इसे बहाबुलिया, माबुलिया, मामुलिया भी कहा जाता है.

लोक संस्कृति के अध्ययन के बिना इतिहास की समग्र खोज संभव नहीं है. यह लोक परंपरा हमारे जातीय जीवन की समग्रता को पहचानने में एक नयी दृष्टि देती है. लोक संस्कृति ने अपने ऊपर बहुत से प्रभावों को आत्मसात किया है और परिस्थितियों से प्रभावित होकर समाज के परिवर्तनों को भी धारण करती चली है. लोकमूल्य, लोकविश्वास, लोकवार्ता आदि की हिलोर ने बुंदेली लोक संस्कृति को विशिष्ट स्थान दिलाया. बुंदेली व्रत, उपवास, त्योहार, पूजापाठ और ललित कलाओं के विकास के ऐतिहासिक पक्षों को उजागर करने वाले हैं. कजरियां, सुअटा, नौरता, दिवारी, फाग, मामुलिया में बुंदेली पहचान के बिन्दु हैं.

एस. के. श्रीवास्तव
के.का.,मुंबई

Songs of the Soil

India, as we all know, is a land of vast ethnic diversity, breeding within herself a rush of bright hues, varied emotions, numerous languages and the joys of multiple cultures. Needless to say, many poets and songwriters have come and gone, trying to capture the beauty and the essence of life in this magnificent land. I, however, always believed that songs of folklore are of utmost importance – over the thousands of years gone by, the folk Saints have been able to carve out the splendor of rural India by depicting the simple lives of rural folk. Their effortless lyrics and verses are a way of storytelling, trying to introduce us and attract us to our roots, where we belong. But not many of us know or indulge in such storytelling, partly because of lack of awareness and partly because in a busy city life, there is hardly any time to sit, relax and enjoy the exquisiteness of our roots. In fact, I have always been fascinated with the ways and means of folk culture. The music of the country roads has had the utmost influence on me and if given a chance, I am sure it will cast the same magic spell on you.

My association with folk music began many years back, on a winter evening at Calcutta, surprisingly, at a traffic signal! While all cars stood at halt in heavy traffic, a beggar boarded the bus I was travelling on. He was exceptionally skinny and was dressed in the shabbiest robes possible. However, when he boarded and started singing to please the crowd, his powerful voice engulfed all of us in no time! He had with him a small wooden instrument, which he called the 'dotara', literally translating into 'do taar' or 'two strings'. He was effortlessly strumming the instrument and singing this melodious song which we all were listening to in rapt attention! At first, I had difficulty understanding the language and the dialect he was singing in, but after a while, I realized that it was a very basic rustic Bengali he was using. The words of the song went something like this:

"The jackfruit is sweet, not sour
The kingfisher bird a bright blue
The red roads of the village lead us to the forest
Where we meet in disguise, just me and you"

The traffic eventually cleared and the beggar got off the bus, collecting some meager coins of appreciation which the crowd showered on him. I however, couldn't stop humming the song throughout the day. It was catchy, easy and definitely enthralling! Thus began my journey with 'songs of the soil'.

Over the years, I have had the privilege of exploring and learning many such songs which have moulded my perspective of life and love. The originators of this segment of music, as Wikipedia will tell you, were Fakirs and Saints of yesteryears, who spoke about the simple means and ways of life, as they perceived it. Perhaps, initially this genre started off as devotional songs, focusing on prayers and offerings to the Almighty; but later, they say these songs branched out, covering the more complex topics of contemporary human life such as philosophy, socio-economic condition, love, routine life and so on and so forth. Many such songs mostly never fail to allow us a deep insight into the complexities of the human mind and at the same time, tell us about the joys of an undemanding life in a beautiful world. In fact, these genres of songs or folk performances all come under very sweet names, depending upon the region of their origin. So you have 'baul' and 'bhatiali' music from the rustic roads and river shores of Bengal, the 'bihu' from the plains of Assam, the 'garba' or 'doha' from the colorful lanes and by lanes of Gujarat, the 'madiga dappu' from the picturesque Andhra Pradesh, the 'bhangra' and 'gidda' from the bright alleys of Punjab, the 'lavani' from the bucolic paths of Maharashtra etc. As I believe it, these songs were written and sung, often to see the brighter side of an otherwise routine and tedious life. For instance, the Rajasthani 'Panihari' songs lyrically describe women in the midst of their usual chores centered around water and wells, which are both integral parts of the desert culture of Rajasthan. Many songs from the countryside celebrate the colours of changing seasons, the longing for loved ones, arrival of the monsoons and the like. There are songs which revolve around the daily activities of local people such as sowing crops, cutting vegetables, getting a good catch of fish from the sea etc., which perhaps, bring about some laughter and carefree banter, in the midst of performing some monotonous task. Similarly, to quote another example, the 'bhatiali' from Bengal, which derives its name from 'bhata' or 'ebb', speaks about boatmen on long journeys, the wait by their loved ones back home and their daily errands of fishing / netting. The 'lavani' of Maharashtra, often speaks of romance and companionship for tired soldiers in war – may be with just a song, they saw a silver lining to remember and cherish, in the midst of the battlefield. One of my recent favorites in this genre of folk

songs comes from Himachal Pradesh called 'Mae ni meriye', recently reprised by Singer Mohit Chauhan. The song, which has a very typical 'pahari' tune to it, speaks of a young girl from Shimla, who narrates to her mother about how she longs to be with her beloved in Chamba, a far off land. The longing depicted in the song easily blends into a strange melancholy, which will no doubt stir your soul and keep ringing in your mind for a long time to come.

In fact, you will be surprised to know how similar all these genres are in their wordings and melody! Last year, while I was on a trip to the Meherangar Fort in Jodhpur, Rajasthan, I came across a folk singer who was humming 'kesariya balama', one of their most popular folk songs. When he found out that I was a Bengali, he immediately switched to a bhatiali song and insisted that I joined him! Of course I joined him and we performed a bhatiali song to perfection, while the crowd clapped and cheered! The experience was surreal to say the least. There it struck me, how music knows no language and how all our so called diverse cultures and perceptions all merge into a common song of love and life.

Presently, many of the contemporary musicians have recreated several of these folk songs and presented the same with a modern twist. MTV Coke Studio features many such songs and those with keenness for music can always indulge themselves in exploring the uncut glamour of these songs. Even Bollywood music directors have embraced many such offbeat folk songs, which have captivated the audience in many movies. To name a few very popular ones, there is 'Nimbooda', an original Gujarati folk song used in the film 'Hum Dil de Chuke Sanam', 'bhumbro', a Kashmiri number used in the film 'Mission Kashmir', 'Morni baga ma bole', a song from the sand dunes of Rajasthan, used in the film 'Lamhe', 'Genda phool', a song from the Northern part of the country, used in the film 'Dilli 6' and many such likes. These songs easily take you through the untroubled life of the countryside and refresh your mind like no other.

On a very tiring day, when city life has taken its toll on me, I often like to dim the lights, sit by the window and listen to my favorite bhatiali song. In a melancholy tune, it goes like this:

"Oh boat man, when shall you return
I have spent days and nights, hoping to see you again
Take me with you, take me to the other side
Oh boat man, I wish and pray for your return"

Koumudi Chakraborty
Central Office, Mumbai

महान माँ

इस धरणी में कौन है ऐसा, जिस पर कर्ज़ नहीं माता का,
तनया, भगिनी, भार्या रूपों में, श्रेष्ठ रूप माता का।

सृष्टि चक्र–गति रहे निरंतर, है अबाध संग माता का,
नव तन मन निज कोख में पाले, श्रेष्ठ कर्म यह माता का।

सृष्टि नियोजित जनम विधा में, शामिल कष्ट है माता का,
सुकोमल अंक गहे वह शिशु को, दुग्धमृत सुख माता का।

सब कुछ निज संतति के सुख में, तजने में सुख माता का,
शिशु भविष्य आप्लावित हो, यही भाव हो माता का।

जनम हेतु ईश्वर ने पूजा, ले पद रज सिर माता का,
पर हे सुत सब कुछ पा कर भी, उऋण न हो ऋण माता का।

प्रति पल कष्ट आस देकर भी, तू प्यार ही पाये ममता का,
प्रभु का दिया स्थान जननी को, जीवन सुमन है माता का।

सुधेंदु वर्मा
मदन महल शाखा, जबलपुर

पुरस्कार और सम्मान

नाबार्ड ने कर्नाटक राज्य में स्वयं सहायता समूह/संयुक्त देयता समूह – बैंक संबद्धता कार्यक्रम के अंतर्गत श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए राज्य स्तर के पुरस्कार प्रदान किये. बेंगलूरु में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में क्षे.का.बेंगलूरु को 3 वर्गों में पुरस्कृत किया गया. सर्वाधिक संख्या में स्वयं सहायता समूह ऋण संबद्धता में द्वितीय पुरस्कार, सर्वाधिक ऋण राशि संवितरण में तृतीय पुरस्कार तथा सर्वाधिक बकाया ऋण राशि में हमें प्रथम पुरस्कार दिया गया. यह पुरस्कार भारतीय रिजर्व बैंक, बेंगलूरु के क्षेत्रीय निदेशक के हाथों से क्षेत्र महाप्रबंधक श्री के. चन्द्रशेखर ने ग्रहण किया. इस अवसर पर क्षेत्र प्रमुख डॉ के. एल. राजू, मुख्य प्रबंधक (ऋण) श्री के. एस. अनंत, वरिष्ठ प्रबंधक (आरएबीडी) श्री आर. ए. पाटिल तथा वरिष्ठ प्रबंधक श्री मल्लिकार्जुन रेड्डी भी उपस्थित थे.

श्री एन. जयराम(भूतपूर्व संकाय) तथा श्री अरुण श्रीवास्तव, भूतपूर्व उप महाप्रबंधक (राजभाषा), राजभाषा विभाग, कें.का. मुंबई द्वारा भारतीय रिज़र्व बैंक की मौलिक पुस्तक लेखन योजना के अंतर्गत लिखित पुस्तक **भारतीय कृषि में उभरते अवसर व प्रवृत्तियाँ** को पिछले 10 वर्षों के दौरान लिखित पुस्तकों में से सर्वश्रेष्ठ पुस्तक हेतु द्वित्तीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया.पुरस्कार प्रशिक्षण समन्वय समिति की 100वीं बैठक में दिनांक 23 और 24 जून 2016 को आयोजित विशेष समारोह में प्रदान किया गया.

भारतीय रिज़र्व बैंक की अंतर-बैंक निबंध लेखन प्रतियोगिता 2015-16 में हमारे बैंक के **श्री दयानंद चौधरी,** सहायक महाप्रबंधक, आर एम डी, कें.का., मुंबई को 'क' क्षेत्र के हिन्दी भाषी संवर्ग में तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया.

स्टाफ प्रशिक्षण केंद्र, भुवनेश्वर के संकाय श्री प्रतिभू बनर्जी की हिन्दी कहानी **सफर इशारों का** कथादेश द्वारा आयोजित 'रहस्य-कल्पना कथा-प्रतियोगिता 2015- 2016' में पुरस्कार हेतु चयनित हुई है. इस प्रतिष्ठित प्रतियोगिता में लगातार दूसरे वर्ष स्थान बना पाने वालों में श्री बनर्जी एकमात्र कथाकार हैं.

क्षेत्रीय कार्यालय,कानपुर के उप क्षेत्र प्रमुख **श्री आर. के. नन्दा** एवं राजभाषा प्रभारी श्री प्रदीप कुमार त्रिवेदी वर्ष 2014-15 हेतु नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री एस. के. सिंह एवं राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय गाजियाबाद की उप निदेशक सुश्री प्रतिभा मलिक के करकमलों से द्वितीय पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र ग्रहण करते हुये.

बैंक की द्विभाषी गृह पत्रिका **यूनियन धारा** को शैलजा नायर फाउंडेशन से स्पेशल ज्यूरी अवार्ड प्राप्त हुआ. पुरस्कार दिनांक 4 जून 2016 को उप महाप्रबंधक, केंद्रीय कार्यालय, श्री केशव बैजल; श्रीमती सविता शर्मा, संपादक, यूनियन धारा और यूनियन सृजन ने प्राप्त किया.

क्षेत्रीय कार्यालय, बेलगावी के क्षेत्र प्रमुख **डॉ अजित मराठे** एवं राजभाषा अधिकारी श्री अखिलेश कुमार सिंह वर्ष 2015-16 में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के पदाधिकारी से प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए.

YAKSHAGANA
THE FOLK ART OF KARNATAKA

Karnataka is undoubtedly the proud birthplace of exhilarating art, wonderful sculpture, heart filling music, entertaining dance and fantastic drama. The diverse linguistic and religious ethnicities that are native to Karnataka, combined with their long histories, have contributed immensely to the varied cultural heritage of the State. The traditional folk arts cover the entire gamut of music, dance, drama, storytelling by itinerant troupes etc. While there are numerous ancient folk and tribal dances, Yakshagana of Malnad and coastal Karnataka, a classical dance drama, is one of the major theatrical forms of Karnataka.

Yakshagana is believed to have a history of one thousand years. Yakshagana means the song (gana) of the yaksha (nature spirits). Yakshagana is the scholastic name for art forms formerly known as Kelike, aata, bayalata and dasavatara. Yakshagana is a traditional theater form, combining dance, music, actor created dialogues, costume-makeup and stage technique with a distinct style. It is believed to have evolved from pre-classical music and theater during the period of the Bhakti Movement. Yakshagana is sometimes called "the play" in Kannada and Tulu. Yakshagana is the generic name of a common form of dance-drama characterizing the rural theatre of four south Indian states Andhra Pradesh, Kerala, Tamilnadu and Karnataka. The Veethinatakamu of Andhra Pradesh, Kathakali of Kerala, Terukuttu of Tamilnadu and Yakshagana of Karnataka have the same spirit of the theatre presentation of epic episodes in scenes of song, dance and costume through more secular themes.

Characters of Yakshagana

Yakshagana consists of a Himmela (background musicians) and a Mummela (dance and dialogue group) which together perform a Yakshagana Prasanga. Himmela consists of a Bhagawatha who also directs the production and is referred to as the 'first actor' modalane vesha. He is also said to be the heart of the total episode of Yakshagana. Additional himmela members are players of traditional musical instruments, such as the Maddale (hand drum), the pungi (pipe), the cymbals (bells) and the chande (loud drums).

A Yakshagana performance typically begins in the twilight hours, with an initial beating of the drums of several fixed compositions, called abbara or peetike. This may last for upto an hour before the actors finally arrive on the stage. The actors wear resplendent costumes, head dresses and face paint. On the stage, we see three prominent figures sitting on the raised special seats, they are Bhagawatha (who narrates the story by singing), drum artist and one more person beside Bhagawatha who plays Maddale. Another actor performs the Abhinaya along with the singing of Bhagawatha and performs Mathru karika (expressing the conversation with words).

Role of Music & Literature

The music for Yakshagana is based on pre-Karnataka Sangeetha Ragas characterized by melodic patterns called mattu (set of melodic forms) and Tala (frameworks for rhythms). Prasanga is the collection of Yakshagana poems forming a musical drama. The poems are composed in well known Kannada metres, using a frame work of ragas and talas. The Epics of Ramayana and Mahabharata offer extensive material for Yakshagana Prasangas. There are questions on whether this written system originated in Telugu literature.

Instruments for playing Yakshagana

The emphasis in Yakshagana is on the musical form of raga and the style of singing.

Chande

Chande, a high-pitched drum, beaten with two thin sticks is said to be the life sound of Yakshagana. Chande, accompanied by Tala and Chakratala (bigger pair of cymbals) brings about the rise and fall in the emotional intensity of the performer and the battle becomes tense and thrilling. It is the mainstay of Yakshagana in developing the sentiments of Roudra and Adbhuta. It is true that the cymbal is replaced by the Gong and Pungi by the harmonium but there is no near about instrument to replace Chande.

Maddale

The maddale is a percussion instrument and, along with the Chande, is the primary rhythmic accompaniment in the Yakshagana ensemble.

Mridanga accompanies the Bhagawatha in all his singing while Maddale and Chande are usually employed only in dramatic moments of tension.

Pungi

The Pungi is a wind instrument which consists of a mouth-blown air reservoir to provide the drone. Now-a-days, the pungi and mukhaveena are replaced by the harmonium.

Taala (Bells)

Yakshagana bells or cymbals are a pair of finger bells made of a special alloy to fit the tone of the Bhagawatha's voice. Singers carry more than one set as finger bells are available in different keys, thus enabling them to sing in different pitches. They help create and guide the background music in Yakshagana.

Role of Music and Dance

Music is essentially vocal in Yakshagana. The ragas employed are Mohana, Kambhoji, Nata, Shankardbharana, Kalyani, Regupti and Saurastra, the most popular and commonly employed ones being Mohana and Kambhoji. Though the ragas themselves are few in number when compared with the several shades of emotions like appeal, assurance, grief, romance and fury, the Bhagawatha achieves the desired effect by employing these ragas with tremendous power in different rhythmic patterns.

Dance, the innate character of the people of Karnataka, is an inevitable aspect of Yakshagana and is a most effective medium for rousing sentiments of Roudra and Adbhuta. Dances are in three sequences, once while entering the stage, again when Bhagawatha sings a verse concerning the particular role, and thirdly with all intensity, when the battle ensues. Depending on the ability and scholarship of the actors, there will be variations in dances as well as the amount of dialogue.

Costumes

Yakshagana costumes are rich in color. They consist of Kirita (head gear), Kavacha (that decorate chest), Buja Keerthi (armlets) that decorate shoulder and Dabu (belts) all made up of light wood and covered with golden foil. Mirror work on these ornaments help to reflect light during the show and add more colour to costumes. These ornaments are worn on a vest and cover the upper half of the body. The lower half is covered with kachche that comes in a unique combination of red, yellow and orange checks. Bulky pads (clothes) are used under kachche and this makes actors appear much larger from the general audience in size.

Costumes normally depend on the characters and style depicted in the play or prasanga. For example, the head gear of Raja and demons will be different to that of other artists in the episode. At the same time, female artists wear small head gear. Bannada Vesha (characters of demons) involves detailed facial makeup and may sometimes take 3-4 hours to complete.

Badagu Tittu

Badagu Tittu Yakshagana places more emphasis on facial expressions, dialogues and dances appropriate for the character depicted in the episode. This type of Yakshagana makes use of typical Karnataka Chande. The Badagutittu style was popularized by Shivram Karanth and is popular in Uttara Kannada, Udupi and Shivmoga District.

Tenku Tittu

Tenku Tittu Yakshagana is noted for its incredible dance steps, high flying dance moves and its extravagant demons. Performers often do Dheenginas (jumping spins in the air) for which this dance form became popular and strikes the attention of the audience. The influence of Carnatic music is apparent in Tenku Tittu. This dance is prevalent in Dakshin Kannada, western parts of Coorg and few areas of Udupi district.

Puppetry in Yakshagana

In the undivided Dakshin Kannada district, the presentation of puppetry in Yakshagana style is highly stylized and adheres strictly to the norms of Yakshagana. The Puppets (normally 18 inches high) wear costumes similar to those worn by live actors of Yakshagana with elaborate make-up, colourful headgear and heavy jewellery. The puppeteer is known as the Suthradhara. Devanna Padmanabha Kamath, the grandson of Laxman Kamath infused new life into this art and performed shows all over India.

Artists

Yakshagana was first introduced in Udupi by Madhvacharya's disciple Narahari Tirtha, who was the minister in the Kalinga Kingdom. Early Yakshagana poets include Ajapura Vishnu, Purandaradasa, Parthi Subba and Nagire Subba. King Kanteevra Naasaraja Wodeyar II authored 14 Yakshaganas in various languages. Mummadi Krishnaraja Wodeyar also wrote several Yakshagana prasangas. Yakshagana received national and international acclaim mainly due to the efforts of Dr.K.Shivarama Karanth, who was the Jnana Peet award winner for his extensive literary work in Kannada.

Mythology behind Yakshagana

In the olden days there were no forms of entertainment in the villages. People used to gather for festivals in the temples, which were the patrons of Yakshagana melas. Each mela was supported by a temple, and this mela had to perform on the story of that temple. The troupe always performed their first show of the year in their respective temples, and then they started their travelling. Yakshagana is one of such forms of entertainment which was performed in the open ground, with a raised stage in the center. The show begins with Ganapathi Puja in the green room and Prasad is distributed to the patron or sponsor and artists. Mostly mythological stories are selected for playing Yakshagana which were written by famous poets.

Conclusion

Over the centuries, hundreds of artists performed yakshagana and some of them like Chittani Ramachandra Hegde, Keremane Shambhu Hegde, Naranappa Uppoor, Kalinga Navada attained star status. Artists survive on donations from sponsors and temple trusts. They spend six months in studying the characters, planning shows and finalizing venues. Despite the hard work involved in planning the shows and trouble in staying away from their dear ones for many days, these artists always look forward to performing at different venues. In Yakshagana, female roles are enacted by male artists, with convincing feminine mannerisms. These artists survive on a meager income to cover their hand to mouth existence. There are 30 full-fledged professional troupes and 200 amateur troupes in Yakshagana. Yakshagana commercial shows witness 12,000 performances per year in Karnataka generating a turnover of ₹ 6 crores.

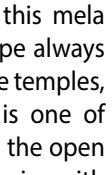

N. V. N. R. Annapurna
R. O. , Vijaywada

MASTERING THE MARTIAL ART

Ms. AAKANKSHA, daughter of Mrs. Pragati Anil Kakde, Manager (IT), R.O., Pune, is really a 'karate kid' in the making. Just stepping into Std.I, this wonder girl participated in the 2nd JKNSKI National Karate-Do Championship 2015 held in Dec., 2015 in 'Under 6 years Girls' category and clinched 2nd position in the 'individual Kata' event and 3rd position in the 'Kumite' event.

Her role model is her father, who inspires her to achieve the desired goal. Honing her skills in this martial art under the able coach, Shri Shaunak Shete, this Orange Belt Senior holder aspires to fetch the prestigious Black Belt in near future. On the path from beginner to master, she wishes to unlock the more subtle and dangerous techniques hidden in the kata's movements. Though very determined to overpower the opponent on the karate mat, this little girl also loves playing other outdoor games, colouring and dancing.

Union Dhara salutes her aspiration and wishes her all the best in her karate career!!

सप्तधारा

गंगेच यमुनैश्चैव गोदावरी सरस्वती,
नर्मदे सिंधु कावेरी जलेस्मिन सन्निधिं कुरु

श्लोक की पंक्तियाँ पढ़ीं और कानों में जलतरंगों के स्वर सुनाई देने लगे. ऐसा लग रहा था मानो हर नदी, लहर-दर-लहर अपने रहस्य खोलती जा रही है. पूजन-अर्चन के समय पढ़ा जाने वाला सप्तधारा का यह श्लोक पता नहीं कितने यजमानों द्वारा सुना जाता है या इस पर ध्यान दिया जाता है, किंतु थोड़ा सा भी ज्ञान रखने वाला यजमान इस श्लोक में निश्चित रूप से प्रकृति के उपादानों की आराधना को समझ सकता है. इन सप्तधाराओं में भारतीय लोक-संस्कृति को विस्तृत एवं गहरे रूप से प्रभावित किया है.

गंगा:

भागीरथ के अथक प्रयासों से गंगा भूतल पर अवतरित हुईं. शिव जी ने उन्हें अपनी जटाओं में धारण किया और फिर मोक्षदायिनी गंगा प्रवाहित होने लगी. गंगा का उद्गम गोमुख है. हिमालय से बहती यह गंगा भारत और बांग्लादेश में प्रवाहित होती है. 2510 कि.मी. लंबी यह नदी अपने में युगों-युगों का इतिहास समेटे हुए है. हरिद्वार, ऋषिकेश के शांत आश्रमों से सुनाई देते मंत्रों का आनंद लेकर बहती गंगा ने काशी में मंदिरों पर हुए आक्रमणों को भी झेला है. इन्हीं आक्रमणों से जूझ कर खड़े होते लोगों की 'गंगाजी' के प्रति आस्था को भी देखा है. इसी गंगा ने पटना में गौतमबुद्ध की 'धम्मवाणी' सुनी है. कानपुर के 'नाना साहेब पेशवा' की वीरता देखी है. कोलकाता में योद्धा सन्यासी विवेकानंद का तेज देखा है. यही गंगा इलाहाबाद में धार्मिक मान्यताओं, स्वाधीनता की आवाज और सामाजिक आस्थाओं की 'त्रिवेणी' का संगम है.

यमुना: यमुना उत्तरी भारत की एक प्रमुख नदी है. यमुनोत्री से निकलकर यह नदी उत्तराखंड,उत्तर प्रदेश, हरियाणा और दिल्ली में बहती है. 1376 कि.मी. लंबी इस नदी का नाम 'सूर्यपुत्री','यमदेव की बहन' और 'कालिंदी' के रूप में प्रचलित हुआ. यमुना के तटों ने पांडवों के 'इन्द्रप्रस्थ' का वैभव देखा है. मथुरा और वृन्दावन में यही यमुना कभी कंस के अत्याचारों, तो कभी कृष्ण की बाल-लीलाओं की साक्षी रही है. कृष्ण और गोपियों की रासलीला का विभोर कर देने वाला आनंद भी इसने देखा है तो यही यमुना दिल्ली के अंतिम हिंदू शासक 'पृथ्वीराज चौहान' की वीरगाथा कहती है. इतिहास के अनेक पड़ावों को समेटे हुए यमुना अविरल प्रवाहित होती रही है. इसी जलप्रवाह में आंसू की एक बूंद गिरी और उसने संगमरमर के स्वप्न को साकार कर आगरा शहर को ताजमहल का उपहार दिया. मुगल शासकों के अत्याचार सहते हुए यमुना सिर झुका कर बह रही थी कि तभी अचानक उसने एक सिंह गर्जना सुनी. यह गर्जना आगरा के किले को भेद कर उस तक पहुंची और इससे यमुना रोमांचित हो उठी. उसकी हर लहर उस सिंह की चरणवंदना को आतुर हो गई. यह गर्जना थी-छत्रपति शिवाजी की, जो औरंगजेब की कैद में थे. औरंगजेब की कैद से भाग निकले छत्रपति शिवाजी को यमुना ने शत-शत नमन किया और यही भाव यमुना ने उस समय भी महसूस किया जब उसके तट पर झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों को परास्त किया था.

गोदावरी: गोदावरी महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, तेलंगाना और आंध्रप्रदेश की प्रमुख नदी है. महाराष्ट्र के ब्रह्मगिरी पर्वत से निकल कर यह निजामाबाद, आदिलाबाद और बस्तर से होती हुई 1465 कि.मी. का सफर तय करती बंगाल की खाड़ी में जा कर गिरती है. त्र्यंबकेश्वर बारह ज्योर्तिलिंगों में से एक है. कहा जाता है कि गौतम ऋषि को गोहत्या के पाप से बचाने के लिए शिव जी ने गोदावरी को त्रयंबकेश्वर बुलाया. इसीलिए इसे 'दक्षिण गंगा' भी कहते हैं. सिंहस्थ कुंभ मेला यहां का प्रमुख पर्व है. भगवान श्रीराम के पंचवटी निवास की कथाएं नासिक के तटों पर गायी जाती हैं. गोदावरी संतों के निवास की नदी भी है. पैठन में संत 'एकनाथ' महाराज, 'ज्ञानेश्वर' महाराज का मंदिर है. निजामाबाद जिले में 'सरस्वती' मंदिर, धर्मपुरी में 'लक्ष्मी नारायण' स्वामी का मंदिर है. नांदेड के गुरुद्वारे में हर जाति, हर धर्म के लोग 'मत्था टेकने' जाते हैं.

सरस्वती: वेदों और पुराणों में उल्लिखित सरस्वती नदी अपनी विलुप्त धारा के लिए प्रसिद्ध है. स्कंधपुराण में सरस्वती को ब्रह्म-कमंडल से उत्पन्न बताया गया है. यह हिमालय से बहती है और इसका प्रवाह धरती के अंदर

से भी है. महाभारत में सरस्वती के मरुस्थल में सूखने की बात कही गई है. इलाहाबाद मे गंगा–यमुना के साथ सरस्वती का मिलन है, इसे 'त्रिवेणी संगम' कहा गया है.

नर्मदा: उमा एवं रुद्र के साहचर्य से उत्पन्न शिव जी का स्वेद बिंदु है 'नर्मदा'. 1312 कि.मी. लंबी नर्मदा मध्यप्रदेश की जीवन रेखा है. इसका उद्गम अमरकंटक, मध्यप्रदेश है. यह नदी महाराष्ट्र और गुजरात से हो कर खंभात की खाड़ी में गिरती है. नर्मदा एकमात्र नदी है जिस पर पुराण लिखा गया है. यह एकमात्र नदी है जिसके नाम पर स्कंध पुराण में 'रेवा खंड' है. यह एकमात्र नदी है जिसकी परिक्रमा की जाती है. यह पूर्व से पश्चिम की ओर बहती है. आदि शंकराचार्य की निवास–स्थली है, नर्मदा! नर्मदा पर अनेक तीर्थ हैं, जहां मेले और पर्व मनाये जाते हैं, बंबोलियां गायी जाती हैं. जल के महत्व को समझने वाली रानी दुर्गावती, शिवभक्त अहिल्या देवी का सुशासन, नर्मदा पूजन को जीवन मानने वाली रानी रूपमती को नर्मदा ने देखा . सन् 1939 में जब गांधी जी बरमान घाट पर पंडित रविशंकर शुक्ल के साथ पहुंचे, नाव पर चढ़ने से पहले केवट ने चरण धुलवाने का हठ किया. संकोची बापू ने पैर धुलवाये और केवट का अनुराग 'जय गांधी–जय गांधी'

से मुखर हो उठा. नर्मदा का कण–कण त्रेता के राम की स्मृति करता धन्य–धन्य बोल उठा. इसी नर्मदा तट पर 1952 में कांग्रेस अधिवेशन का आयोजन हुआ. नर्मदा नदी में स्नान और दीप दान का महत्व है. नर्मदा का कंकर–कंकर शंकर माना गया है.

सिंधु: सिंधु नदी हर भारतीय का गौरव है. सिंधु तट पर वेदों की रचना हुई. मोहनजोदड़ो के भग्नावशेष आज भी अपना मस्तक ऊंचा किए हुए भारत की सर्वोत्कृष्ट सभ्यता का ध्वज फहरा रहे हैं. ईसा पूर्व 3300 वर्ष की सभ्यता अपने उन्नत नगरीकरण, कृषि, शहरी बस्तियों, व्यापार तथा दस्तकारी के केन्द्रों के लिए विख्यात है. सिंधु नदी 3200 कि.मी. लम्बी है. इसका मुख सप्तसिंधु है. यह चीन, पाकिस्तान और भारत में प्रवाहित होती है. यह नदी ग्लेशियर से ढकी रहती है. इतिहास ने सिंधु नदी पर कई बार करवट बदली है. शक, हूण, सिकंदर, बाबर इसी मार्ग से भारत की धरती पर आये. स्वतंत्रता प्राप्ति के समय सिंध प्रांत पाकिस्तान में चला गया, जिसके कारण अब यह पाकिस्तान की प्रमुख नदी है. बहुत कम लोग जानते हैं कि 'सिंधु' भारत में लेह लद्दाख में प्रवाहित होती है. लालकृष्ण अडवानी जी ने कहा था–1962 में मैं जब लेह गया तो एक सुंदर नदी को देख कर प्रश्न कर बैठा–'ये कौन सी नदी है?' जवाब मिला– सिंधु. सिंध छोड़ने के बाद, सिंधु का स्पर्श मुझे अंदर तक रोमांचित कर गया'. सन् 2002 में लेह में सिंधु तट पर जब 'सिंधु दर्शन' का आयोजन हुआ तब माननीय अटल जी ने कहा : 'जब से भारत स्वाधीन हुआ है, हम राष्ट्रगान में पंजाब, सिंध, गुजरात, मराठा गाते रहे हैं. कभी कोई पूछता था–आप गा तो रहे हैं, पर सिंधु है कहां?' हमारे पास तत्काल उत्तर नहीं होता था, पर अब हम कह सकते हैं 'सिंधु' लेह में बह रही है. महात्मा बुद्ध के जीवन में भी सिंधु की बात कही गई है. सिंधु नदी अनेक पंथों, अनेक संप्रदायों की साझा नदी है, यह सम्मिलित नदी है.

कावेरी: कावेरी का उद्गम कुर्ग जिले के ब्रह्मगिरी पर्वत में है. कावेरी मैसूर से तमिलनाडु में आती है. कोयंबटूर, तिरिचरापल्ली से प्रवाहित होकर तंजावुर में और अंत में नागपट्टणम् के पास बंगाल की खाड़ी में गिरती है. 765 कि.मी. लंबी इस नदी की उत्पत्ति की कथा स्कंदपुराण में वर्णित है. श्री विष्णु ने ब्रह्मदेव को एक कन्या अर्पण की, वह कन्या ब्रह्मदेव ने कवेर मुनि को दी. यह कन्या ही कावेरी है. कावेरी तट पर चोल, पल्लव, पांड्य,नायक आदि ने राज्य किया. चोल वंश का राज्य कावेरी ने देखा. इसका एक नाम –पोन्नी अर्थात 'सुवर्ण सुंदरी' भी है. पल्लव राज्य के शिलालेखों में 'पल्लवप्रिया' नाम प्रचलित है. कावेरी

ने हैदर व टीपू का राज्य भी देखा है. कावेरी के तट पर श्रीरंगपट्टनम्, कुंभकोणम, तिरुवैय्या आदि तीर्थ हैं. उन्नत कृषि के कारण तंजावुर को 'धान का कटोरा' भी कहा जाता है. धर्म, कला, संस्कृति, साहित्य का विकास तंजावुर राज्य में हुआ. आधुनिक काल में कावेरी पर 'सर विश्वेश्वरय्या' ने कृष्णराजसागर के नाम से बांध बनाया, जो घर–घर में बिजली दे रहा है. वृंदावन गार्डन में कावेरी के जल का प्रयोग किया जाता है.

भारत की इन सात नदियों ने हमें कई अर्थों में समृद्ध किया है. नदी का एक रूप होता है–'माँ' का और सच में इन नदियों ने हमें माँ की तरह ही पाला–पोसा है. सभ्यता के विकास के साथ मनुष्य के जीवन–यापन का मार्ग भी नदियों से ही मिला है. गंगाजी के घाट, नर्मदा का भेड़ाघाट, गोदावरी के मंदिर, सिंधु के अनसुलझे रहस्य, कावेरी का वैभव, यमुना की साँवली–सलोनी सुंदरता और सरस्वती का लुप्त होना–ये सारी बातें किसी भी व्यक्ति को आकर्षित करने हेतु पर्याप्त हैं और वह इन नदियों को देखने निकल पड़ता है. जीवन जीने के साथ–साथ जब हमने जल के महत्व को समझा तो जल भंडारण की बात सोची. इन

नदियों पर बांध का निर्माण कर पानी का उपयोग सिंचाई, बिजली बनाने में किया जाने लगा. इन्हीं बांधों में गंगा पर फरक्का, टिहरी, बाणसागर जैसे बांध बनाए गए. यमुना नदी पर गांधी सागर, राणाप्रताप सागर बांध, गोदावरी पर श्रीराम सागर, जयकावडी, डोलेश्वरम बांध, नर्मदा पर सरदार सरोवर, इंदिरा सागर, बरगी, महेश्वर बांध, कावेरी पर कल्लानी, अमरावथी, कृष्णराज सागर आदि प्रमुख बांध बनाये गये हैं.

विकास की प्रक्रिया में नदियों के मूलस्वरूप के दूषित होने का खतरा भी सदैव मंडराता रहा है. कारखानों से निकलता धुंआ, रसायनिक पदार्थ, धार्मिक अंधविश्वासों के कारण किए गए कर्मकांड–यही तो नदियों को मैला कर रहे हैं. विकास के बढ़ते चरणों से इन नदियों को शुद्ध करने के प्रकल्प भी प्रारंभ करने पड़े हैं.

हमने नदियों की पूजा की, उनके धार्मिक, आध्यात्मिक वैभव को देखा, उनके सौन्दर्य की अनुभूति ली. प्रश्न उभरता है कि आज हम नदियों से क्या ले रहे हैं? और ... उत्तर मिलता है–नदियां हमें सम–विषम परिस्थितियों में अटल, अविरल भाव से रहना सिखाती है. गंगा, यमुना, गोदावरी, नर्मदा, सिंधु, कावेरी अपने अटल भाव के कारण ही करोड़ों वर्षों से बह रही हैं. जीवन के प्रवाह में ये नदियां ही हमें प्रेरणा देंगी, वरना अच्छा खासा जीवन मरुस्थल की तरह हो जायेगा.

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार नदी स्नान का महत्व है. ये नदियां, जो हजारों वर्षों का ज्ञान लेकर आई हैं, उन तत्वों को आत्मसात कर लेना ही नदी स्नान है. नदियों में दीप–दान का भी महत्व है. जिस तरह असंख्य दीपों का प्रवाह शाम के अंधेरे को हटा कर नई जगमगाहट देता है, उसी तरह नदी तीरों पर रचे गये वेदों, ऋचाओं, इतिहास के स्वर्णिम क्षणों के ज्ञान दीप को हमें जीवन में प्रवाहित करना होगा, जिससे आने वाला कल आलोकित हो.

मोहन बोधनकर
स्टाफ प्रशिक्षण केंद्र, भोपाल

कला–संस्कृति की धरोहर...

विश्व–प्रसिद्ध साँची का स्तूप और विदिशा

पर्यटन एवं ऐतिहासिक धरोहर के रूप में मध्यप्रदेश एक अग्रणी राज्य रहा है. यहां खजुराहो, ग्वालियर, भोजपुर, भीमबेटका के साथ–साथ साँची और विदिशा भी अतीत के कई दृश्य अपने में समाये हुए हैं.

विदिशा एवं उसके आस–पास का क्षेत्र प्राचीन समय से ही विभिन्न संस्कृतियों का केन्द्र रहा है. पाषाण काल से आज तक विदिशा एवं साँची रोचक घटनाक्रम से जुड़ा रहा है. कालिदास के मेघदूत और मालिकाग्नि मित्रम् में विदिशा का भौगोलिक वर्णन बहुत रोमांचित कर देता है. साँची के विभिन्न अभिलेखों में विदिशा की वैभवता एवं हाथी–दांत के कारीगरों का वर्णन मिलता है, जिनका व्यापार विदेशों तक फैला हुआ था. प्राचीन समय में विदिशा पूर्वी मालवा व दशार्ण प्रदेश की राजधानी थी. शुंगशासक पुश्यमित्र व अग्निमित्र के समय 'विदिशा' पश्चिम क्षेत्र की राजधानी मानी गयी है. दशार्ण प्रदेश के निर्मित हथियार प्रसिद्ध हैं, इस क्षेत्र के येरकछ नगर में तलवारें बनती थीं.

सम्राट बनने के पूर्व अशोक, विदिशा एवं उज्जयिनी का राज्यपाल था. विदिशा उसका ससुराल था तथा अशोक ने अपनी पत्नी के आग्रह पर ही वेदिसगिरी [वर्तमान साँची] पर स्तूप व विहार निर्मित करवाया था. शुंगकाल में भागवत धर्म की विशेषताओं को देखकर यूनानी राजदूत हेलिओडोरस ने भागवत धर्म अपना कर विष्णु मंदिर का निर्माण करवाया था व गरूढ़ध्वज की स्थापना की थी, जिसका उल्लेख बेंस नगर में 'खम्बाबा स्तंभ' देखने पर मिलता है.

उदयगिरि की गुफाएं

गुप्तकाल में चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य द्वितीय ने मालवा की विजय के उपरांत विदिशा के पास उदयगिरि में वैष्णव व जैन धर्म की गुफाओं का निर्माण करवाया था. दसवीं–ग्यारहवीं शताब्दी के पूर्व विदिशा नदियों के मध्य बसा हुआ था. समय–समय पर नदियों में बाढ़ के कारण यह नगर उजड़ता व बसता रहा, जिसके अवशेष भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा किये गये पुरातात्विक उत्खनन से प्राप्त हुए हैं.

विदिशा का किला

प्रतिहार व परमार काल में विदिशा बेंस नगर से हटकर वर्तमान स्थान पर बसा. वहां किले के चारों और एक परकोटा था. किले के अंदर, मध्य भाग में परमारकालीन विशाल विजय मंदिर के अवशेष हैं. इन अवशेषों से ज्ञात होता है कि इसका निर्माण परमार शासक 'नरवर्मन' के समय हुआ था. यहां एक सूर्यमंदिर तथा 'चद्रिंका देवी' का मंदिर भी है. चंद्रिका देवी को नवदुर्गा का एक रूप माना जाता है.

विदिशा जिले में उदयपुर ग्राम के मध्य गंजबासोदा रेलवे स्टेशन से लगभग 13 कि.मी. की दूरी पर 'उदेश्वर मंदिर' स्थित है. यह मंदिर शिव को समर्पित है, इसलिए इसे 'नीलकंठेश्वर मंदिर' के नाम से भी जाना जाता है. इस मंदिर को सन् 1059 में परमार शासक 'उदयादित्य' ने भूमिज शैली में बनवाया था, इसी लिए यह उदेश्वर के नाम से प्रसिद्ध हुआ.

इस तरह, इतिहास के पन्नों पर 'साँची' जहां विश्व प्रसिद्ध स्तूप के कारण अपनी पहचान बनाये हुए है, वहीं 'विदिशा' अपने पुरातत्व महत्व को दर्शाता है. वास्तव में यह मध्यप्रदेश की अमूल्य धरोहर है.

संतोष श्रीवास्तव
स्टाफ प्रशिक्षण केंद्र, भोपाल

During their visit to Abu Dhabi on 17.05.2016, Shri Arun Tiwari, CMD and Shri G. R. Padalkar, GM (DFB & IBD), C.O., Mumbai addressed a staff meeting.

Our Abu Dhabi Team : Sitting (l/r) - Shri G. R. Padalkar G. M. (DFB & IBD) ; Shri Arun Tiwari (CMD); Shri Akhilesh Kumar (CEO, DIFC); Mukesh B. Sharma (CR, Abu Dhabi). Standing (l/r) ORMs - Himanshu; Rajnish; Dinesh; Pradeep; Vivek; Sandeep; Ramanpreet and Vini (Assistant).

The award function for Best Performing ORM for March-2016 was organized in Abu Dhabi on 17.05.2016. Shri Sandeep Dixit, Manager, Sharjah Branch receiving the Award from Shri Arun Tiwari, CMD while Shri G. R. Padalkar, GM (DFB & IBD), C.O., Mumbai; Shri Mukesh B. Sharma, Chief Representative Countries, Abu Dhabi, UAE and others look on.

Shri Arun Tiwari visited our Dubai Branch on 18 May 2016. A meeting was held with regulators at DIFC branch, Dubai and was addressed by the CMD, Shri. Arun Tiwari. Seen in the photograph is Shri G. R. Padalkar (GM- DFB & IBD), CO, Mumbai

Chairman & Managing Director and General Manager (DFB & IBD), CO, Mumbai along with the Branch Head and other staff members.

लोक संस्कृति, हमारे जीवन का वह हिस्सा है, जो हमारे जीवन ही नहीं, बल्कि हमारी दिनचर्या में कुछ इस तरह से रच–बस गई है, जैसे घी और खिचड़ी आपस में घुलमिल जाते हैं. वैसे भी, भारत के संविधान में भारत की संस्कृति को सामासिक संस्कृति कहा गया है. समास और संधि में एक ही बड़ा अंतर होता है– संधि में दो शब्दों के निर्माण से नये शब्द का निर्माण होता है और दोनों मूल शब्दों का अस्तित्व समाप्त हो जाता है जबकि समास में एक नये शब्द का निर्माण तो होता ही है, साथ ही साथ दोनों मूल शब्द भी अपने अलग–अलग अर्थ के साथ अस्तित्व में रहते हैं.

यही स्वरूप है हमारी भारतीय संस्कृति का. सभी प्रांतों की संस्कृतियाँ अलग–अलग अपना अस्तित्व बनाये हुये हैं. साथ ही साथ सब मिलकर भारतीय संस्कृति का निर्माण करती हैं. प्रत्येक प्रांतीय संस्कृति संबंधित राज्य की खुशबू बिखेरती है और जीवन के आनंद, समृद्धि और शांति का आईना बन जाती है. उत्तरी भारत के सूरजकुंड का शिल्प मेला समग्र भारत की समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं की झांकी प्रस्तुत करता है. मेले में शिरकत करने बड़ी संख्या में विदेशी भी आते हैं और हमारी मिट्टी की सोंधी–सोंधी खुशबू का आनंद उठाते हैं.

उल्हास वीरकर
सेवा निवृत यूनियनाईट,मुंबई

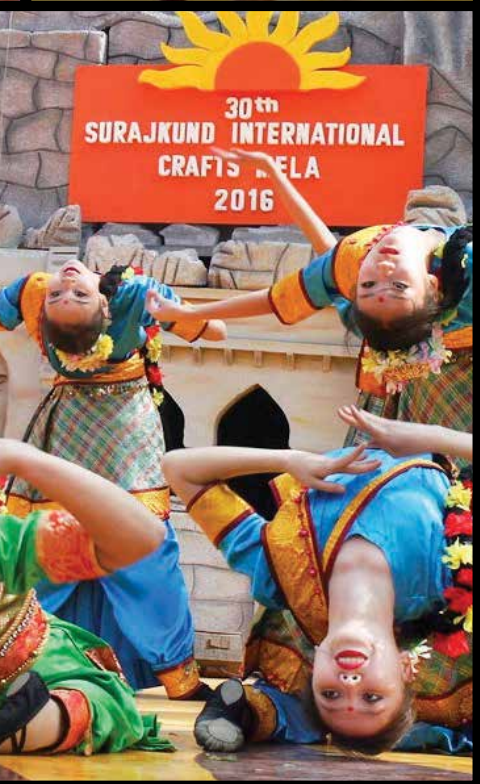

कठपुतली कला

कठपुतली शब्द राजस्थानी भाषा के दो शब्दों 'कठ' एवं 'पुतली' के जोड़ से बना है. जहां 'कठ' का अर्थ है 'लकड़ी' वहीं पुतली का अर्थ है 'गुड़िया.' असल में कठपुतली से अभिप्राय लकड़ी से बनी एक गुड़िया से है, हालांकि इसे बनाने में लकड़ी, कपड़ा, छड़ इत्यादि अनेक वस्तुओं का भी प्रयोग किया जाता है. कठपुतली कला की खोज मानव जाति के लिए उल्लेखनीय एवं महत्वपूर्ण आविष्कारों में से एक है. यह कहा गया है कि पुतली की उपयोगिता पुतली के जीवन से भी बढ़कर है और इसीलिए यह आकर्षण एवं स्थायित्व को लिए हुए है, क्योंकि स्वयं में जीवन नहीं होने पर भी यह दूसरों को जीने की कला सिखाती है. प्राचीन हिन्दू दार्शनिक पुतलीकारों का बहुत ही सम्मान करते थे. वे पुतलीकारों को सर्वशक्तिमान विधाता और पूरे ब्रह्माण्ड को एक मंच मानते थे. महान ग्रन्थ 'श्रीमद् भागवत' में दी गई भगवान श्री कृष्ण के बालरूप की नहद कथा के अनुसार भगवान सत्, रज और तम रूपी धागों से पूरे विश्व को कठपुतली की भांति नचाते हैं.

पुतली कला की प्राचीनता के संबंध में ईसा पूर्व पहली एवं दूसरी सदी में लिखे गए लेख तमिल ग्रन्थ 'सिल्पाकदीकर्म' में पाए जाते हैं. दूसरी सदी ईसा पूर्व से द्वितीय सदी इसवीं तक के दौरान कभी-कभार नाट्यशास्त्र प्रभावशाली ढंग से लिखे गए परंतु इनमें पुतली कला का वर्णन नहीं मिलता है लेकिन मानव नाट्य के निर्माता-सह निर्देशक को 'सूत्रधार' के रूप में प्रभावित किया गया है जिसका अर्थ धागों से है.

भारत की पुतली कला शैलियां:

भारत में लगभग सभी प्रकार की पुतलियां पाई जाती हैं तथा पारंपरिक मनोरंजन में सदियों से पुतलीकला का महत्वपूर्ण स्थान रहा है. पारंपरिक नाटक की भांति ही पुतली नाट्य महाकाव्यों और दंत कथाओं पर आधारित होते हैं. देश के विभिन्न प्रांतों की पुतलियों की अपनी एक खास पहचान होती है. उनमें चित्रकला और मूर्तिकला की क्षेत्रीय शैली स्पष्ट झलकती है.

पुतलियों के निर्माण तथा उनके माध्यम से संप्रेषण करने में जो सौंदर्यपरक आनंद मिलता है, वह बच्चों के व्यक्तित्व के चहुंमुखी विकास में सहायक होता है. शारीरिक एवं मानसिक रूप से विकलांग बच्चों को अपने शारीरिक एवं मानसिक विकास के लिए प्रेरित करने में पुतली कला का सफलता के साथ उपयोग किया गया है. अपनी प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के प्रति जागरूकता पैदा करने संबंधी कार्यक्रमों में भी कठपुतली कला सहायक साबित हुई है. साथ ही, इन कार्यक्रमों का लक्ष्य लोगों में शब्द, आकार, रंग और गति के सौंदर्य के प्रति संवेदना जागृत करना भी है .

भारत में पारंपरिक पुतली नाटकों की कथावस्तु पौराणिक साहित्यिक, दंत कथाओं और किंवदंतियों से ली जाती रही है तथा उनमें चित्रकला, मूर्तिकला, संगीत, नृत्य और नाटक आदि को रचनात्मक अनुभूतियों के साथ समाविष्ट किया जाता रहा है. पुतली कार्यक्रमों को प्रस्तुत करने में एक साथ अनेक लोगों के सृजनात्मक प्रयासों की जरूरत पड़ती है. आज के आधुनिक समय में सारे विश्व के शिक्षाविदों ने संचार माध्यम के रूप में पुतलियों की उपयोगिता के महत्व का अनुभव किया है. भारत में आज अनेक व्यक्ति तथा संस्थाएं शैक्षणिक संकल्पनाओं के संप्रेषण में पुतलियों का इस्तेमाल करने में छात्रों एवं अध्यापकों को सम्मिलित कर रही हैं.

भारत में धागा पुतलियों की परंपरा अत्यंत प्राचीन व समृद्ध है. अनेक जोड़युक्त अंग तथा धागों द्वारा संचालन इन्हें अत्यंत लचीलापन प्रदान करते हैं, जिस कारण ये पुतलियां काफी लचीली होती हैं. राजस्थान, उड़ीसा, कर्नाटक और तमिलनाडु ऐसे प्रांत हैं जहां पुतली कला प्रारम्भ हुई. विभिन्न प्रांतों की पुतली कला की अपनी विशिष्टता है.

कठपुतली, राजस्थान

मुख्य रूप से राजस्थान की परंपरागत पुतलियों को ही कठपुतली कहते हैं. काठ के एक टुकड़े से तराश कर बनाई गई ये पुतलियां रंगबिरंगे पहनावे में बड़ी गुड़ियों के समान लगती हैं. उनकी वेशभूषा और मुकुट मध्य कालीन राजस्थानी शैली में होती है जो आज भी प्रचलित हैं. नाटकीय क्षेत्रीय संगीत कठपुतली नृत्य की संगत करता है. अंडाकार मुख, मछलियों जैसी बड़ी-बड़ी आंखें, कमानी जैसी भौंहें और बड़े-बड़े होंठ आदि इनके विशिष्ट लक्षण हैं. इसके साथ ही ये पुतलियां लम्बाट पुछल्ली लहँगा पहनती हैं और इनके पैरों में जोड़ नहीं होते. पुतली संचालक अपनी उंगलियों से बंधे दो या पांच धागों से उनका संचालन करता है. राजस्थानी कठपुतली कला तब अस्तित्व में आई जब भट्ट समुदाय द्वारा इसका अभ्यास करना शुरू किया गया. समकालीन शासकों द्वारा संरक्षित यह कला शीघ्र ही राज्य की प्रमुख कलाओं में शामिल हो गई. मुगलों द्वारा राजस्थान पर आक्रमण के कारण, कठपुतली ने धीरे-धीरे अपने महत्व को खो दिया.

कुनढ़ेई (उड़ीसा)

उड़ीसा की धागा पुतली को कुनढ़ेई कहते हैं. ये हल्की लकड़ी से बनी होती हैं और इनके पैर नहीं होते तथा ये लहँगा पहने होती हैं. इन पुतलियों में अनेक जोड़ होते हैं. इसी कारण इनका संचालन सरल है. पुतली संचालक साधारणत: एक लकड़ी के तिकोने फ्रेम को पकड़े रहता है जिस पर संचालन करने के लिए धागे बंधे होते हैं. कुनढ़ेई की वेशभूषा परंपरागत जात्रा नाटक के अभिनेताओं की भांति होती है. क्षेत्र

की प्रसिद्ध धुनों से ही संगीत लिया जाता है और कभी-कभी इनपर ओडिसी नृत्य के संगीत का गहरा प्रभाव भी दिखता है.

गोम्बेयेट्टा (कर्नाटक)

कर्नाटक की धागा पुतली को गोम्बेयेट्टा कहते हैं. गोम्बेयेट्टा का सम्बन्ध कर्नाटक के लोकनृत्य यक्षगान से है, इसी कारण यह उससे काफी साम्यता रखता है. गोम्बेयेट्टा पुतलियों की आकृतियां अत्यंत सुसज्जित होती हैं और इनके पैर, कंधे, कोहनी, कूल्हे और घुटने में जोड़ होते हैं. इनका संचालन फ्रेम से बंधे हुए पांच से सात धागों से होता है. दो तीन संचालकों के एक साथ संचालन द्वारा पुतली की कुछ जटिल क्रियाओं का प्रदर्शन भी किया जाता है. गोम्बेयेट्टा में यक्षगान के प्रसंगों को प्रदर्शित किया जाता है. इसके साथ में बजने वाला संगीत नाटकीय होने के साथ-साथ लोक संगीत तथा शास्त्रीय संगीत के मधुर समन्वय का रूप होता है.

बोम्मालट्टा, तमिलनाडु

छड़ और धागा पुतली की तकनीक तमिलनाडु की बोम्मालट्टा पुतली में एक साथ मिलती है. ये लकड़ी से बनी होती है और संचालन करने के धागे एक लोहे के रिंग से बंधे रहते हैं जिसे पुतली संचालक मुकुट की तरह अपने सिर पर धारण किए रहते हैं.

कुछ पुतलियों की हथेलियों और हाथों में जोड़ होते हैं जिनका संचालन छड़ों से होता है. बोम्मालट्टा पुतली आकार में बड़ी और भारी होती है और भारतीय परंपरागत पुतलियों में सबसे सुस्पष्ट होती है. एक पुतली लगभग साढ़े चार फीट ऊंची होती है तथा उसका वजन दस किलो के आसपास होता है.

पुत्तलनाच, पश्चिम बंगाल

पश्चिम बंगाल की छड़ पुतली कला परंपरा को 'पुत्तलनाच' के नाम से जाना जाता है. छड़ पुतली वैसे तो दस्ताना पुतली का अगला चरण है लेकिन यह उससे काफी बड़ी होती है तथा नीचे स्थित छड़ों पर आधारित रहती है और उसी से संचालित होती है. वे काष्ठ से बनाई जाती है और क्षेत्र विशेष की विभिन्न कला शैलियों का अनुसरण किया जाता है. इसकी संचालन की विधि रोचक होने के साथ-साथ अत्यंत रंगमंचीय होती है. संचालक की कमर से बांस की टोपी बंधी रहती है तथा उस पर पुतलियों से जुड़ी छड़ें आधारित होती हैं. प्रत्येक पुतली का संचालक आदमकद पर्दे के पीछे खड़ा रह कर स्वयं हलचल और नृत्य करता है जिससे उसके क्रिया-कलाप पुतलियों में अंतरित होते रहते हैं. इनके साथ ही संचालक गीत गाता हुआ गद्यात्मक संवादों को भी बोलता है. मंच के साथ बैठे हुए तीन-चार संगीतकार ढोलक, हारमोनियम तथा झांझ बजाते हुए संगति करते हैं. लोक नाट्य जात्रा से यह काफी साम्यता रखता है. पश्चिम बंगाल के नादिया जिले में जापान की बनराकू जैसी आदमकद पुतलियां होती थीं, लेकिन पुतलियों का यह रूप अब विलुप्त हो गया है. पश्चिमी बंगाल की शेष प्रचलित पुतलियां तीन-चार फुट लंबी होती हैं तथा वहां के लोक-नाटक जात्रा के पात्रों की भांति उनके भी परिधान होते हैं. प्रायः इनमें तीन जोड़ होते हैं. मुख्य छड़ पर आधारित मस्तक गर्दन से जुड़ा होता है तथा दो छड़ों से जुड़े हाथ कंधे से मिले होते हैं.

यमपुरी (बिहार)

बिहार की पारंपरिक छड़ पुतलियों को यमपुरी के नाम से जाना जाता है. ये पुतलियां काष्ठ की बनी होती हैं. पश्चिम बंगाल और उड़ीसा की छड़ पुतलियों के समान ये पुतलियां एक टुकड़े में होती हैं और इनमें कोई जोड़ नहीं होता है. चूंकि इनमें कोई जोड़ नहीं होता, इसलिए इन्हें चलाना अन्य छड़ पुतलियों से भिन्न होता है अतः इनके संचालन में अत्यधिक निपुणता की आवश्यकता होती है.

दस्ताना पुतली

दस्ताना पुतली को भुजा, कर या हथेली पुतली भी कहा जाता है. इन पुतलियों का मस्तक पेपर मैश (कुट्टी), कपड़े या लकड़ी का बना होता है तथा गर्दन के नीचे से दोनों हाथ बाहर निकलते हैं. शेष शरीर के नाम पर केवल एक लहराता घाघरा होता है. ये पुतलियां वैसे तो निर्जीव गुड़ियों जैसी होती हैं किन्तु निपुण संचालक के हाथों में पहुंचते ही अनेक गतिविधियों को सजीवता से प्रस्तुत करती हैं. इनके परिचालन की विधि अत्यंत सरल है. हाथों से गतिविधियों पर नियंत्रण रखा जाता है. पहली अंगुली मस्तक में जाती है तथा मध्यमा और अंगूठा पुतली की दोनों भुजाओं में. इस प्रकार अंगूठे और दो अंगुलियों की सहायता से दस्ताना पुतली सजीव हो उठती है.

भारत में दस्ताना पुतली की परम्परा उत्तर प्रदेश, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल और केरल में लोकप्रिय है. उत्तर प्रदेश के दस्ताना पुतली नाटक सामाजिक विषयवस्तु प्रस्तुत करते हैं तो उड़ीसा में राधा-कृष्ण की कहानियों पर ये नाटक आधारित होते हैं. उड़ीसा में संचालक एक हाथ में ढोलक बजाता है और दूसरे हाथ से पुतली का संचालन करता है. संवाद बोलना, पुतली का संचालन और ढोलक की थाप सुन्दर रूप से क्रमानुसार होता है और एक नाटकीय वातावरण की सृष्टि होती है.

कठपुतली मनोरंजन के प्राचीनतम तरीकों में से एक रही है. ऐतिहासिक दृष्टि से, कठपुतलियां न केवल मनोरंजन का एक स्रोत थीं, बल्कि नैतिक और सामाजिक शिक्षा भी प्रदान करती थीं. दहेज प्रथा, महिला सशक्तिकरण, अशिक्षा, गरीबी, बेरोजगारी, और साफ-सफाई जैसी समस्याओं को विषय बनाकर कठपुतली कला का सार्थक प्रयोग किया जाता था, साथ ही इन समस्याओं को सुलझाने के उपाय भी बताए जाते थे.

प्रियंका शर्मा
के.का., मुंबई

स्मृतियाँ–छत्तीसगढ़ की

छत्तीसगढ़ के विषय में किसी वेबसाइट अथवा पुस्तक पढ़ें तो अनेक तरह की रोचक जानकारी मिलती है. भौगोलिक दृश्य हो अथवा प्राकृतिक संसाधन, इन सबकी जानकारी पुस्तकों में उपलब्ध है. किन्तु, इन सबसे परे एक विषय और भी है जिसे हम छत्तीसगढ़ के पर्याय जैसा देख सकते हैं, वह है सरलता. छत्तीसगढ़ की सरलता, जीवनशैली तथा लोकोत्सव को जानने के लिए छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर से 2 घंटे की दूरी पर स्थित शहर बिलासपुर की ओर चलें. बिलासपुर में एक नदी है 'अरपा'. अरपा के पार एक गाँव है 'मोपका'. छत्तीसगढ़ का अनुभव हमें इसी गाँव से मिला. छत्तीसगढ़ के निवासी मूलतः कृषि पर निर्भर है. यहाँ भूमि की उर्वरता एवं पानी की प्रचुरता के कारण वर्ष में 2 से 5 फसलें होती हैं. हो सकता है अविश्वनीय लगे, किन्तु हाँ! यहाँ पानी की कटौती नहीं होती है. बिजली संयंत्र स्थापित होने के कारण यहाँ बिजली की भी कोई समस्या नहीं है. यहाँ के मूल निवासी अत्यंत सरलता से अपना जीवन यापन करते हैं और उनकी यही सरलता उनकी दैनिक दिनचर्या के अलावा उनके लोक त्योहारों में भी स्पष्ट नज़र आती है. हर माह ही कोई न कोई लोकोत्सव मनाया जाता है. कुछ मुख्य लोकोत्सव और उनकी झलकियां निम्नवत् हैं.

राऊत नाचा– राऊत संप्रदाय इस राज्य का प्रधान संप्रदाय है, जो मुख्यतः ग्वाले का कार्य करते हैं. राऊत संप्रदाय स्वयं को यदुवंशी मानते हैं और राऊत नाचा श्री कृष्ण की गोपियों के साथ रासलीला को दर्शाता है, किन्तु यह गुजरात की रासलीला से बहुत भिन्न है. नाचा के दौरान हाथ में डांडिया के स्थान पर लट्ठ होती है. साथ ही इसमें पुरुष ही औरतों की भांति श्रृंगार कर दल में नाचा करते हैं. साज–श्रृंगार अत्यंत सरल होता है और पूरी तरह से ग्रामीण श्रृंगार सामग्री–जैसे फीते, गोटे आदि का ही प्रयोग किया जाता है. राऊत नाचा के गीत भी सामान्यतः दल के ही सदस्य गाते हैं और सभी राऊत अत्यंत खुशी एवं उल्लास के साथ नृत्य करते हैं. यह लोकोत्सव गोवर्धन पूजा की तिथि से देवोथानी एकादशी तक मनाया जाता है. बिलासपुर शहर में प्रतिवर्ष राऊत नाचा महोत्सव का आयोजन किया जाता है, जहां राज्य के कोने–कोने से लोग भाग लेते हैं एवं इस लोक नृत्य का आनंद लेते हैं.

सुवा नाचा– छत्तीसगढ़ में तोते को 'सुवा' कहा जाता है, इसलिए इस नृत्य को तोता नृत्य भी कहते हैं. इस नृत्य में केवल महिलाएं भाग लेती हैं. इसमें मिट्टी से निर्मित तोते को बांस की टुकनी अथवा मिट्टी के पात्र के भीतर चावल के दानों के ऊपर रख कर सभी महिलाएं उसके आस–पास गोल परिधि में नृत्य करती हैं. इसमें नृत्य करती महिलाएं गीत भी स्वयं ही गाती हैं और वाद्ययंत्र है केवल ताली. नृत्य करती हुए महिलाएं अपने सिर एवं शरीर को आगे की ओर झुका कर तोते की भांति झटक देती हैं, साथ ही कदम ताल भी तोते की भांति करती हैं. यह लोकोत्सव गौरा विवाह के समय, अक्तूबर अथवा नवंबर के माह में होता है.

हरेली– प्रति वर्ष श्रावण माह में मनाया जाने वाला यह लोकोत्सव मूलतः हरियाली शब्द से जोड़ा जा सकता है. अतः यह हरियाली को मनाने का उत्सव है. कृषि की खुशहाली को मनाने का उत्सव है. श्रावणी अमावस को मनाए जाने वाले इस लोकोत्सव में कृषक अच्छी फसल तथा उत्कृष्ट वर्षा की कामना करते हुए 'कुटकी देवी' की आराधना करते हैं. इस दिन किसान अपने कृषि उपकरण तथा बैलों की भी पूजा करते हैं. प्रकृति की आराधना का इससे सरल भाव शायद ही कहीं देखने को मिले. भेलवा नामक पेड़ की शाखा को खेतों में लगाया जाता है, साथ ही नीम के पत्तों को घर में तोरण के रूप में लगाया जाता है. नीम के पत्ते लगाने का वैज्ञानिक कारण भी है. नीम में औषधीय गुण होते हैं, इसलिए नीम वर्षा के मौसम में उत्पन्न होने वाले किटाणुओं से रक्षा करने में सक्षम है.

पोला– हरेली के बाद आता है पोला उत्सव. श्रावण की पिथोरी अमावस के दिन मनाया जाने वाला यह उत्सव, बैलों के प्रति समर्पित है. इस दिन सभी किसान अपने–अपने बैलों को सुंदर वस्त्र एवं पारंपरिक आभूषणों से सजाते हैं. बैलों के सींगों को चटकदार रंगो से रंगा जाता है. इसके पश्चात् किसान अपने बैलों को आस–पास के स्थानों में भ्रमण करवाते हैं. संध्या को सभी किसान एवं उनके बैल एक जगह एकत्रित हो इस उत्सव को अंतिम रूप देते हैं. किसान को कृषि हेतु सर्वाधिक सहायता बैल द्वारा ही प्राप्त होती है. इसलिए बैल की आराधना करने का यह लोकोत्सव अपने आप में अनूठा है. इस प्रकार प्रकृति और उसके संसाधनों की आराधना तथा इसमें निहित सरलता मन को मोह लेती है. इसी दिन बच्चे मिट्टी के बैल रूपी खिलौने खरीद कर उनसे खेलते हैं. यह दिन कुम्हार के लिए भी खुशी लेकर आता है.

छेर छेरा– धान की कटाई के पश्चात पौष माह की पूर्णिमा को यह लोकोत्सव मनाया जाता है. इसे 'छेर–छेरा पुन्नी' भी कहते हैं. इसमें सभी घरों के बच्चे एक–एक झोला लेकर आस–पड़ोस में जाते हैं और धान की याचना करते हैं. मान्यता है कि इस दिन दान करने से घर में अनाज की कोई कमी नहीं रहती. छेर–छेरा के दिन मांगने वाला याचक ब्राह्मण के रूप में होता है तो देने वाली महिलाएं शाकंभरी देवी के रूप में होती हैं. इस उत्सव में द्वार पर आए बच्चे कुछ यूं दोहा पढ़ते हैं 'छेर, छेरा! माई कोठी के धान ला हेर हेरा!' महिलाएं धान, कोदो के साथ सब्जी व चावल दान कर याचक को विदा करती हैं. कोई भी महिला इस दिन किसी भी याचक को खाली हाथ नहीं जाने देती. वह क्षमता अनुसार धन–धान्य जरूर दान करती है.

सरहुल–सरहुल बसंत ऋतु में मनाया जाने वाला उत्सव है. जब साल के वृक्ष में नए पुष्प आते हैं, तब साल के वृक्ष तथा गाँव देवी की आराधना की जाती है. गाँव के पुजारी पूजा के पहले दिन तीन मिट्टी के पात्रों में जल भर कर रात भर के लिए रख देते हैं. अगले दिन सुबह इन पात्रों में पानी का स्तर देख यह आकलन किया जाता है कि वर्षा की संभावना क्या है! कृषि प्रधान जीवनशैली होने के नाते, पूरे गाँव के लिए वर्षा अति महत्वपूर्ण है. पूजा के पश्चात् साल के फूल तथा चावल से निर्मित देसी पेय जिसे 'हँड़िया' कहते हैं, सभी गाँववासियों में प्रसाद के रूप में वितरित किया जाता है. तत्पश्चात् पारंपरिक ढोल, नगाड़े और टुरकी(वाद्य यंत्र) के साथ नाच गाना किया जाता है.

करमा– अगस्त माह में मनाए जाने वाले इस उत्सव में स्त्री पुरुष दोनों नृत्य में भाग लेते हैं. एक–दूसरे के हाथ में हाथ डाले गोलाकार परिधि में नृत्य करते हैं. इस नृत्य के दौरान करम वृक्ष की डाली को हाथ में लिए पूरा दल करम वृक्ष के गुणगान करता है. नृत्य के पश्चात् इस डाली को दूध से परिष्कृत कर नृत्य के मैदान में ही

रोपित कर दिया जाता है.

गोंचा– रथयात्रा के समय मनाया जाने वाला यह उत्सव प्रकृति की आराधना का एक और उदाहरण प्रस्तुत करता है. गाँववासियों द्वारा बांस और टुक्की नामक फल के द्वारा एक प्रकार का खेल खेला जाता है, जिसमें सभी बहुत आनंद लूटते हैं.

भोजली– खेती–बाड़ी से जुड़े लोगों की सरलता देखते ही बनती है जब वे भोजली का उत्सव मनाते हैं. नागपंचमी से करीब एक सप्ताह पहले, चावल, गेहूँ अथवा कोंडु के बीज मिट्टी के छोटे–छोटे पात्रों में बो दिये जाते हैं तथा इनकी नन्हीं कोपलों को अच्छी फसल का रूप माना जाता है. भोजली के दिन सभी महिलाएं अपने–अपने मिट्टी के पात्रों को लेकर, जिसमें अब तक कोपलें फूट चुकी होती हैं, नदी की ओर जाती हैं. भोजली गीत में मुख्यतः गंगा नदी का गुणगान किया जाता है. नदी अथवा पानी के अन्य स्रोत से इन कोपलों को परिष्कृत कर एक–दूसरे को बांटा जाता है. इसके पश्चात् ही कृषक बुवाई का कार्य प्रारम्भ करते हैं. जैसे भोजली की नन्हीं कोपलें प्रभु का निर्देश हों कि अब खेती हेतु उचित समय आ गया है.

सैला नाचा– सैला नाचा नृत्य फसल की कटाई पर किया जाता है. साथ ही अन्य महत्वपूर्ण उपलक्ष्य, जैसे राष्ट्रीय त्योहार तथा विवाह आदि समारोह में अत्यंत उमंग के साथ स्त्री–पुरुष यह नृत्य करते हैं. एक हाथ में लट्ठ तथा दूसरे में मोरपंख लिए पुरुष इस नृत्य में भाग लेते हैं. शरद ऋतु में किया जाने वाला यह उत्सव 'बड़े देव' को प्रसन्न करने हेतु किया जाता है. वाद्ययंत्र में केवल ढोलक, नगाड़ा, टिस्की तथा टिमकी ही रहते हैं. स्त्रियाँ पारंपरिक ढंग से साड़ी धारण कर, शृंगार हेतु मोर की कलगी जैसे आभूषण सर पर धारण करती हैं.

नवा खानी– यह उत्सव नई फसल के भोजन का होता है. खेतों से कट कर जब धान पहली बार घर में आता है और कृषक परिवार भर पेट खाता है, तब इस उत्सव को 'नवा खानी' के नाम से जाना जाता है. कृषक का घर धान से भरा रहे, यह क्या किसी उत्सव से कम है!

लोकोत्सव के साथ ही कुछ विशेष लोक कलाएँ भी हैं छत्तीसगढ़ की!

गोदना– टैटू अथवा बॉडी आर्ट के दीवाने नए जमाने के लोग संभवतः इस बात को न जानते होंगे, किंतु बॉडी आर्ट एक पुरानी प्रथा ही है. छत्तीसगढ़ के निवासी प्राचीन काल से ही शरीर पर कलाकृतियाँ बनवाते आये हैं. स्वयं का नाम, भगवान की छवि अथवा किसी अन्य प्रकार के चित्रों को शरीर पर स्थायी रूप से बना दिया जाता है. इस कला को 'गोदना' के नाम से जाना जाता है. कई महिलाएं अपने मुख पर भी गोदना बनवाती हैं.

पंडवानी– छत्तीसगढ़ की बात आए और पंडवानी का जिक्र न हो तो बात अधूरी–सी जान पड़ती है. पंडवानी एक प्रकार का गायन है, जहां एक मुख्य कलाकार रामायण अथवा महाभारत के विभिन्न खंडों का गायन शैली में पाठ करता है. साथी कलाकार तबले अथवा ढोलक पर साथ देते हैं. पंडवानी में मुख्य नाम है–श्रीमती तीजन बाई. तीजन बाई मंच पर पारंपरिक शैली में साड़ी धारण कर, पारंपरिक आभूषणों में, एक हाथ में तानपूरा लिए जब पंडवानी गायन करती हैं, तब देश ही नहीं, विदेशों से भी श्रोता उन्हें सुनने आते हैं. इसका मुख्य कारण है–इस गान की सरलता. तीजन बाई अशिक्षित हैं, किन्तु रामायण और महाभारत उन्हें मुंह–ज़बानी स्मरण है. ग्रामीण परिवेश में पंडवानी किसी ग्रंथ की तरह नहीं वरन् कहानी की तरह सुनाई जाती है. इससे सभी ग्रामीण युवा, बच्चे और वृद्ध रामायण तथा महाभारत से परिचित हो जाते हैं. ग्रामीण परिवेश में मनोरंजन का सुलभ साधन अभी भी मंच और नाटक ही हैं.

लोकोत्सव की विशेषता:

सरलता– आजकल हर विवाह समारोह अथवा न्यू इयर की पार्टी में जहां 'डीजे' अनिवार्य हो गया है, वहीं इन लोकोत्सवों एवं नाच में कोई यंत्र नहीं. डीजे के युग में भी कुछ पारंपरिक वाद्य यंत्र और ताली की ताल एवं धुन पर लोग नाचते गाते एवं झूमते हैं. वेष–भूषा और आभूषण पारंपरिक होते हैं. मोर की कलगी, सिक्कों के स्वरूप के पारंपरिक गहने, मोर पंख, कपास की साड़ी, पुरुषों की धोती और गमछा. किसी प्रकार के अतिरिक्त अथवा अनावश्यक व्यय की कोई आवश्यकता नहीं. नाचा भी मूलतः खुले मैदान या आँगन में ही किया जाता है. किसी समारोह में हो, तो केवल बल्ब की व्यवस्था. प्रतियोगिता हुई तो पूरा ध्यान नाचा की विभिन्न मुद्राओं पर होता है, न कि वस्त्रों–आभूषणों पर. खुशी के लिए पैसों की नहीं वरन् इच्छा की आवश्यकता होती है और यह केवल सरलता से ही प्राप्त हो सकती है. सरलता का सबसे बड़ा उदाहरण है बड़े–बड़े ग्रंथों को गायन के माध्यम से कंठस्थ करना.

प्रकृति का संरक्षण–आज हम हर ओर एन.जी.ओ. पाते हैं जो प्रकृति के संरक्षण की बातें करते हैं. प्रकृति के संरक्षण हेतु सरकार भी विभिन्न कदम उठाती है और साथ ही करोड़ों रूपये का बजट भी बनाती है, किन्तु प्रकृति के संरक्षण का सबसे सरल और अच्छा उपाय है– प्रकृति की आराधना. कृषि प्रधान जीवनशैली होने के कारण छत्तीसगढ़ के सभी लोकोत्सव प्रकृति के अनुसार, उसके गुणगान एवं आराधना पर ही कल्पित किए गए हैं. बहुत सारे ऐसे वृक्षों का उल्लेख इस लेख में है जिनके विषय में हमें कोई जानकारी नहीं, किन्तु ये वृक्ष न केवल संरक्षित हैं, वरन् समय–समय पर इनका रोपण भी होता रहता है जिससे कभी भी लुप्तप्राय न हो पाएँ. पीपल, नीम और बरगद के ढेरों वृक्ष आज भी दृष्टिगोचर होते हैं. इस राज्य में उर्वर धरती और पानी हेतु ढेर सारी छोटी–बड़ी नदियां, हरे–भरे वन, औषधीय जड़ी बूटियाँ, पर्वतों की छोटी–छोटी शृंखलाएँ, खनिज पदार्थ, सामान्य से अधिक वर्षा– संभवतः छत्तीसगढ़ निवासियों द्वारा आराधना के कारण ही प्रकृति की भरपूर देन उपलब्ध है. इस राज्य में. छत्तीसगढ़ के निवासी आज भी प्रकृति को देवी मान उसकी आराधना करते हैं.

दल का महत्व– टीम की भावना आज की युग में नई सी बात लगती है. सुना है बड़े–बड़े प्रबंधन संस्थानों में टीम में कार्य करने हेतु प्रशिक्षण दिया जाता है. ऊंची फीस लेकर टीम भावना सिखाई जाती है. लोकोत्सवों में हर नाच, पूरे दल के साथ किया जाता है. इसे किसी एक सदस्य की कला नहीं, वरन् पूरे दल की कला को आँका जाता है. ये लोकोत्सव, एक इकाई पर ज़ोर न देकर, पूरे दल को एक सूत्र में बांधने का, टीम स्पिरिट एवं टीम भावना का सरलतम उदाहरण प्रस्तुत करते हैं.

वसुधैव कुटुंबकम् – यह भारत की बहुत पुरानी परंपरा है, किन्तु आजकल के भौतिक युग में व्यक्ति के पास इतना समय कहाँ कि पड़ोसी धर्म निभाए. छत्तीसगढ़ में हर एक लोकोत्सव किसी विशेष उपलक्ष्य–जैसे खेतों की बुवाई, वर्षा का आगमन, फसल की कटाई से जुड़ा हुआ है. ऐसे में सभी कृषक परिवार एक दूसरे के साथ मिलकर लोकोत्सव मानते हैं, साथ ही धन–धान्य के दान की परंपरा का भी अनुसरण करते हैं. छेर–छेरा उत्सव भी संभवतः इसीलिए मनाया जाता है कि किसी भी पड़ोसी के घर में अन्न की कमी न हो, और सभी ग्रामवासी खुशी का अनुभव कर सकें.

छोटे–छोटे अनुभव, कुछ पुरानी स्मृतियाँ, कुंम्हार का पहिया और मिट्टी का घड़ा, बरगद की रस्सी और अपनी बाड़ी की सब्जी, हरे–भरे खेत और नदी के पार उगता लाल सूरज, फर्राटेदार छत्तीसगढ़ी और टूटी–फूटी इंग्लिश. कहने को लोकोत्सव किन्तु जीवन की अमूल्य सीख देती यह धरोहर, आज लुप्तप्राय है. यह गाँव तक सिमट कर रह गई है. परम्पराएँ, विकास के साथ–साथ संरक्षण भी चाहती हैं.

शिल्पा शर्मा सरकार
के.का.,मुंबई

करमा
झारखण्ड की लोक–संस्कृति का अभिन्न हिस्सा

झारखंड अर्थात झाड़ियों का खंड. इस राज्य का नाम सुनते ही हमारे मन में वन, पर्वत और उस राज्य में रहने वाले आदिवासी समाज के लोगों से जुड़े दृश्य दिखाई देने लगते हैं. यह सत्य भी है. झारखंड नाम पूर्ण रूप से अपने अर्थ को अपने भीतर समाहित किए हुये है–'झड़ियों का खंड'. यहाँ के विशाल भू–भाग में वन, पहाड़ियाँ और झाड़ियाँ देखने को मिलती हैं.जब हम इन मनोरम दृश्यों को देखते हैं तो हमारा मन सहसा उसकी ओर खिंचा चला जाता है. इन दृश्यों की तरह ही झारखंड के लोग भी सीधे–सादे एवं अच्छे स्वभाव के होते हैं. वैसे तो यहाँ के लोग,अपनी धरती, अपनी संस्कृति से जुड़े पर्व अनेक प्रकार से मनाते हैं, लेकिन इन पर्वों में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रकृति की ही पूजा की जाती है जैसे– सरहुल, बढ़ और करमा. 'करमा' झारखंड में मनाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण लोक त्योहार है जिसमें प्रत्यक्ष रूप से प्रकृति की पूजा की जाती है.

झारखंड मूल रूप से आदिवासी जातियों एवं जनजातियों का राज्य है. यह कहना विवादास्पद नहीं होगा कि यहाँ एक दो जिले को छोड़कर, शेष सभी जिलों में आदिवासी समाज के लोग ही स्थायी–निवासी हैं. करमा पर्व कृषि और प्रकृति से जुड़ा पर्व है, जिसे झारखंड के सभी समुदाय हर्षोल्लास के साथ मानते हैं. इस पर्व को भाई–बहन के निश्छल प्यार के प्रतीक के रूप में भी माना जाता है. करमा त्योहार भाद्र मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी के दिन अनुष्ठानपूर्वक मनाया जाता है. करमा जीवन के कर्म के महत्व का पर्व तो है ही, साथ ही प्रकृति के सम्मान का भी पर्व है, विशेषकर आदिवासी समुदायों के सभी पर्व–त्योहारों और सामाजिक–सांस्कृतिक उत्सवों में प्रकृति के प्रति कृतज्ञता, आराधना एवं अटूट आस्था अनिवार्य विधान है; जैसे–सरहुल में सरई फूल, करमा में करम डाइर, कदलेटा में भेलवा की टहनियाँ, जीतिया में पीपल और हरियारी में हरे पेड़–पौधे की पूजा की जाती है.

करमा पर्व के दिन करम वृक्ष की टहनी गाड़ने के बाद, कोटवार द्वारा समुदाय के लोगों को करम कथा सुनने के लिये बुलाया जाता है. श्रोता एवं उपासक अपने–अपने करम दउरा या थाली में पूजन सामग्री सजाकर इसमें दीपक जलाते हैं. इसे सारू पत्ते से ढाँककर अखाड़े में लाते हैं और 'करम' के चारों ओर बैठ जाते हैं. दूसरी ओर करम अखाड़े में चारों ओर भेलवा, सखुआ या केंदु इत्यादि ला कर खड़ा कर दिया जाता है. कथा समाप्त होने के बाद प्रसाद वितरण किया जाता है. युवक–युवतियां करमा नृत्य और संगीत प्रस्तुत करते हैं. दूसरे दिन सुबह बेलवा वृक्ष की टहनियों को धान के खेतों में गाड़ दिया जाता है. ऐसा माना जाता है कि इससे फसल में कीड़े नहीं लगते हैं. झारखंड के सभी आदिवासी एवं मूल निवासी समुदायों द्वारा करमा अलग–अलग मान्यताओं के साथ मनाया जाता है. कर्म पूजा का आयोजन विभिन्न चरणों में पूरा होता है, जिसमें करमा के लिये जावा उठाना, करम की टहनी काटने जाते समय पूजन, करम डाल को अखाड़े में गाड़ने की प्रार्थना, करम कहानी की परंपरा, करम प्रवाहित करने या विसर्जित करने की पूजन विधि मुख्य हैं.

लोक कथा के रूप में प्रचलित करमा की कहानी ...

करमा की कहानी का कोई निश्चित शास्त्र नहीं है; यह जन–मानस में लोक–कथा के रूप में प्रचलित है. लोक–कथा के अनुसार किसी गाँव में करमा और धरमा नामक दो भाई थे. करमा अधिक धन कमाने के लिये व्यापार करने गाँव से बाहर चला जाता है. व्यापार कर वह बहुत धन लाता है और गाँव के बाहर आकर रुक जाता है और एक व्यक्ति से वह अपने भाई धरमा को यह खबर भिजवाता है कि वह वहाँ आकर परीछ कर (स्वागत) कर उसे घर ले जाए. संयोग से उस दिन धरमा पूजा कर रहा था. उसके घर–आँगन में कई अतिथि भी आये हुए थे. अतः पूजा बीच में छोड़कर वह अपने बड़े भाई को लेने नहीं जा पाया. काफी देर इंतज़ार करने के बाद करमा स्वयं घर आ जाता है. पूजा में व्यस्त लोगों में से कोई भी करमा की ओर ध्यान नहीं दे पाता. क्रोध में आपे से बाहर होकर, करमा पूजा को बाधित कर देता है करम डार (डाली/डाल) को उखाड़कर फेंक देता है और अपने भाई और गाँव वालों को बुरा–भला कहने लगता है. इस व्यवहार का परिणाम यह होता है कि 'करम देवता' करमा से नाराज हो जाते हैं. उसके खेत–खलिहान सूखने लगते हैं. कई प्रकार की बुरी घटनाएँ उसके साथ घटती हैं. स्थिति इतनी खराब हो जाती है कि उसके पास खाने के लिये कुछ नहीं बचता; यहाँ तक कि, पीने को पानी भी नहीं मिलता. करमा की हालत बहुत खराब हो जाती है और उसे कई प्रकार के संकटों का सामना करना पड़ता है. धरमा यह देख कर बहुत दुखी होता है और अपने बड़े भाई करमा को करम देवता की पूजा करने को कहता है. करमा को भी अपनी गलती का अहसास होता है और वह करम देव की पूजा नियम और अनुष्ठान पूरे गाँव के साथ करता है, जिससे करम देव प्रसन्न हो जाते हैं. करमा का सारा दुख समाप्त हो जाता है. करमा अपने भाई के साथ सुखी–सम्पन्न होकर रहने लगता है और हर वर्ष पूरे गाँव के साथ करमा पूजा धूम–धाम से मनाता है.

भारत के हर पर्व–त्योहार के पीछे कुछ–न–कुछ लोककथाएँ अवश्य होती हैं, जो वर्षो से हमारी संस्कृति में घुली–मिली चली आ रही हैं. करमा पर्व की कथा भी उनमें से एक है; जो कर्म और धर्म की शिक्षा देती है. जब मनुष्य अपने धर्म के अनुसार कर्म नहीं करता है तो ईश्वर उसे मूल प्रकृति से अलग कर देते हैं, मनुष्य को प्रकृति से जुड़े रहने के लिये अच्छे कर्म करने चाहिए. प्रकृति और मनुष्य एक दूसरे के पूरक हैं या यूं कहें, कि मनुष्य प्रकृति का एक हिस्सा है.अपने अस्तित्व के लिए उसे प्रति पल प्रकृति पर निर्भर रहना पड़ता है. व्यक्ति को कर्म द्वारा जीवन को मुकम्मल बनाने का प्रयास करते रहना होगा. कर्म के दौरान हम अपने धर्म से न भटकें, इसका भी ध्यान रखना चाहिए.

लोक–कथाएँ मिथकों और सत्य जीवन–गाथाओं का अद्भुत मिश्रण होती हैं. वस्तुतः मानव और प्रकृति के बीच बहुत गहरा सम्बन्ध है. दोनों एक–दूसरे के पूरक हैं. मानव अपनी भावाभिव्यक्ति के लिए प्रकृति की ओर देखता है और उसकी सौन्दर्यपरक जिज्ञासा प्राकृतिक सौन्दर्य से विमुग्ध होकर प्रकृति में भी सचेत सत्ता का अनुभव करने लगती है. यह किसी भी स्थान–विशेष की संस्कृति, वहाँ की मान्यताओं और परम्पराओं को जानने का अहम अंग होती है. प्रकृति,वनस्पति और त्योहारों का आयोजन हमें हमारी प्रकृति से जुड़ने की प्रेरणा देता है. करमा त्योहार इसी का साक्ष्य है, जो झारखंड के लोगों की जीवन–शैली, मान्यताओं और प्रकृति–प्रेम की अनिवार्यता को बड़ी सादगी से व्यक्त करता है.

ऋषि शंकर चौधरी
क्षे.का., मदुरै

हमारी शिबपुर शाखा, क्षे.का., हावडा के खजांची **श्री ए. पी. घोष** ने शाखा के लॉकर रूम में ग्राहक द्वारा भूलवश छोड़ा गया बहुमूल्य ज्वेलरी बॉक्स शाखा प्रबंधक के पास जमा करवाया.

Recently of our colleagues, **Ms. Ashna Rana**, Manager, Mahabir Chowk Branch, Ranchi while returning from bank, one culprit snatched her mobile phone and ran away. But Ms. Rana did not give up and chased the culprit. She not only got hold of the culprit but also took the perpetrator to the nearest police station and handed him to the police authorities. This act of bravery on the part of Ms Rana was duly appreciated by local police station, FGM, Kolkata and RH, Ranchi. Recently she has been felicitated by Director General of Police Shri D.K. Pandey and she has been given a letter of appreciation signed by DG of Police, Jharkhand.

एटीएम गार्ड की सतर्कता ने न सिर्फ बैंक के ग्राहकों को बल्कि अपने बैंक को भी इस खतरे से बचा लिया.

यह क्षेत्रीय कार्यालय, बेलगावी के बेलगावी शहर के अंतर्गत माधवपुर वड्गाम शाखा की घटना है, जहां 23/05/2016 को एक अपरिचित व्यक्ति ने शाखा के एटीएम में स्किमिंग उपकरणों की मदद से कार्डों के डाटा चुराने का प्रयास किया. सीसीटीवी चित्रों के अनुसार वह ढके हुए सर वाला व्यक्ति जैकेट और रुमाल से मुंह ढके हुए था. उसने 19:24 बजे को एटीएम के कार्ड रीडर के ऊपर एक स्किमिंग उपकरण एवं की के ऊपर एक छोटा सा कैमरा लगाया और उसे 21:04 बजे निकाल कर ले गया. स्किमिंग उपकरण के माध्यम से उस एटीएम में प्रयोग होने वाले कार्डों के डाटा को कॉपी कर लिया जाता है. इस समयांतराल में लगभग 20 लोगों ने अपने एटीएम का प्रयोग किया एवं एटीएम देखभाल करने हेतु नियुक्त श्री अमीर हमज़ा साहेबलाल ने इस बात को नोट किया कि एटीएम में कुछ अलग से यह क्या लगाया गया है. परंतु 21:04 बजे के बाद उन उपकरणों को नहीं पाकर उसे शक हुआ तो उसने 24/05/2016 को शाखा प्रबन्धक के जरिये क्षेत्रीय कार्यालय को इस बारे में सूचित किया.

क्षेत्रीय कार्यालय के चैनल प्रबन्धक श्री दीपक बेहेरा और क्षेत्र सुरक्षाधिकारी श्री गुरु बी मरुवल्ली ने शाखा में लगाए गए सीसीटीवी विडियो फुटेज की जांच की तो उन्हें यह सारा मामला समझ में आया. उन्होंने तत्काल उन सभी ग्राहकों के खातों को अवरुद्ध किया जिन्होंने उस समयांतराल में एटीएम का प्रयोग किया था. अन्य बैंकों के खाताधारकों से संबंधी बैंकों को भी इस बारे में सूचित कर दिया गया. किसी भी खाते से राशि हस्तांतरण ना हो इसे सुनिश्चित किया गया, क्योंकि अमूमन एटीएम कार्ड के डाटा को चुराकर एटीएम कार्ड का क्लोन बनाने एवं उसका प्रयोग कर राशि हस्तांतरण में कुछ समय लगता है उससे पहले ही सभी को सतर्क कर दिया गया था. इस घटना की जानकारी व्हाट्स एप्प के माध्यम से पूरे क्षेत्र की शाखाओं को दे दी गई थी एवं सभी एटीएम देखभाल करने वालों को सतर्क रहने को कहा गया था, शाखा के प्रबन्धक ने शाहपुर थाना में इस मामले में प्राथमिकी भी दर्ज करा दी थी.

25/05/2016 को 19:20 बजे एटीएम देख भाल करने वाले **श्री अमीर हमज़ा साहेबलाल** ने देखा कि, वही जालसाज (अपरिचित) आदमी उसी ड्रेस में मुंह ढके हुए एटीएम में घुसा और स्किमिंग उपकरण लगाकर चला गया, उन्होंने इस बात की जानकारी शाखा प्रबन्धक को दी एवं शाखा प्रबन्धक ने क्षेत्रीय कार्यालय के चैनल प्रबन्धक श्री दीपक एवं क्षेत्र प्रमुख डॉ. अजित मराठे को दी, जिन्होंने सुरक्षा अधिकारी श्री गुरु बी मरुवल्ली को फोन कर इस मिशन की जिम्मेवारी सौंपी. सुरक्षा अधिकारी ने शाखा के लोगों एवं देखभाल करने वाले एटीएम गार्ड को दूर से उसपर कड़ी निगरानी रखने एवं पुलिस को सूचना देने को कहा एवं खुद पहुँच कर एटीएम को देखा. शाखा के लोग एवं क्षेत्रीय कार्यालय के लोग तथा पुलिस सादी ड्रेस में एटीएम पर नजर रखे हुए थे. ठीक 21:03 बजे वह जालसाज (अपरिचित) जो एटीएम के आस-पास ही मौजूद था आकर स्किमिंग उपकरणों को निकाल कर अपने झोले में डाल ही रहा था कि सुरक्षा अधिकारियों ने बाहर से शटर बंद कर दिया एवं पुलिस ने उसे रंगे हाथों पकड़ लिया.

जब पुलिस ने उससे पूछ-ताछ की तो उसने शहर के लॉज में अपने साथी के होने की बात बताई, पुलिस एवं सुरक्षा अधिकारियों ने उस लॉज को छापा मार कर ₹25,000/- की नकद राशि, 30-40 नकली एटीएम कार्ड, लैपटाप, स्किमिंग उपकरणों के साथ उसके साथी को भी गिरफ्तार कर लिया. अगले दिन सभी समाचारपत्रों में यह खबर प्रकाशित हुई. एटीएम गार्ड की सतर्कता ने न सिर्फ बैंक के ग्राहकों को बल्कि अपने बैंक को भी इस खतरे से बचा लिया.

Ms. Sarita Gokarn
the "Super Supermom of the match"

The Purvanchal Supermoms Team - The Winners

CRICKET On the eve of the Environment Day on 05.06.2016, a friendly match was played at Varanasi between the two teams of "Purvanchal Supermoms" and "Banaras Club Supermoms" at night. The Purvanchal Supermoms in greens scored 121 runs and then bundled up the opposition in just 89 runs to win the match by a margin of 32 runs. **Ms. Sarita Gokarn** from Varanasi Cantt. branch clinched the "Super Supermom of the match" title scoring 38 runs and scalping a wicket.

FOOT BALL Mr. Ryan D'souza (ex-international) was appointed as a selector for scouting players for the Indian (Under 17) Team for the U17 FIFA World Cup Football Championship to be held in the year 2017. Further, he was also appointed as Head Coach of the U-17 Maharashtra State Team for the Dr. B. C. Roy Trophy (National Championship) held at Bilaspur Chhattisgarh in February 2016.

Mr. Mrunal Tandel

Mr. Dion Menezes

Two of our stipendary players - **Mr. Mrunal Tandel** & **Mr. Dion Menezes** have represented Senior Maharashtra State Team for the Santosh Trophy National Football Championship 2016 at Margao (Goa) & Nagpur (Maharashtra). Maharashtra State Team reached the finals of the Championship and were silver medalist after 15 years.

Our Bank's football team got the 2nd RUNNERS-UP position at the 45th All India Hot Weather Football tournament 2016 (HARDLINE CUP) held at Mandi (H.P.) from 12-19th June,16.

HOCKEY Our Bank's stipendiary player **SURAJ KARKERA** is currently representing 'Junior India Hockey Team'. He is the first goalkeeper of Jr. India Team that won the gold medal at Johar Azlan Shah Cup at Malasiya. He was also the member of the silver medal winning team that won Junior Asia Cup, Hockey.

We are also proud to announce that 3 of our previous stipendiary players **Dewander Balmiki, Nitin Thimayya** and **S. K. Uthapa** represented India at the Rio Olympics in the men's hockey tournament.

RIFLE SHOOTING **Shivam Toriya,** Asst. Manager, Service Branch, Jabalpur bagged the Gold Medal in the Shooting Championship organized by the State Rifle Association, Madhya Pradesh for the year 2016.

Some of the Important Instruction Circulars issued during the Quarter

Sl. No.	Circular No.	Date	Department	Subject
1	00572	01/09/2016	CA&ID	Information System Audit Policy for the year 2016 -17
2	00588	21/09/2016	CA&ID	Management Audit Policy 2016-17
3	00589	21/09/2016	CA&ID	Concurrent Audit Policy 2016-17
4	00591	23/09/2016	COMPLIANCE	COMPLIANCE POLICY 2016-17
5	00505	07/07/2016	CPMSME	MANAGEMENT OF CREDIT PORTFOLIO - Switching of existing accounts from Base Rate to MCLR System
6	00510	13/07/2016	CPMSME	MANAGEMENT OF CREDIT PORTFOLIO - AMENDMENT IN CREDIT ENHANCEMENT GUARANTEE FOR SCHEDULED CASTES (CEGSSC)
7	00564	22/08/2016	CPMSME	Management of Credit Portfolio - Credit Guarantee Fund Scheme for Prime Minister Mudra Yojana (PMMY)
8	00571	31/08/2016	CPMSME	Management of Credit Portfolio - Revision in Marginal Cost of Funds based Lending Rate (MCLR) w.e.f. 01.09.2016
9	00523	21/07/2016	DIGITALBK	ATM POLICY FOR THE YEAR 2016-17 APPROVED BY THE BOARD
10	00567	24/08/2016	DIGITALBK	BRANCH IMPS CAMPAIGN (25-08-2016 TO 25-09-2016)
11	00568	25/08/2016	DIGITALBK	Bank Launches Unified Payment Application (UPI)
12	00535	28/07/2016	DIGITALBK	Discontinuation of Auto indent for Rupay Cards in PMJDY accounts
13	00569	01/09/2016	IBD	REVISION IN RATES OF INTEREST ON FCNR (B) AND RFC DEPOSITS
14	00598	29/09/2016	IBD	POLICY ON CONDUCT (REGULATION) FOR OFFICERS & CODE OF CONDUCT FOR EMPLOYEES WORKING IN FOREIGN BRANCHES/ OFFICES 2016-17
15	00599	29/09/2016	IBD	GRIEVANCE REDRESSAL POLICY 2016-17 FOR FOREIGN BRANCHES
16	00504	01/07/2016	PBOD	Monitoring & Control on accounts having large turnover and higher cash transactions
17	00551	04/08/2016	PBOD	RBI Master Directions on Receipt and Remittance of Treasure
18	00579	15/09/2016	PBOD	Policy on Bank Deposits for FY 2016-17
19	00580	15/09/2016	PBOD	Policy on Collection of Cheques/Instruments & Dishonour of Instruments 2016-17
20	00581	15/09/2016	PBOD	Customer Right Policy for FY 2016-17
21	00582	15/09/2016	PBOD	Revision in Grievance Redressal Policy of Bank
22	00583	16/09/2016	PBOD	Compensation Policy 2016-17
23	00565	22/08/2016	PBOD	Launch of Tier Scheme in Savings Accounts on Pan India Basis
24	00566	22/08/2016	PBOD	Comprehensive Salary Package for the employees of Goverment, Boards, Corporations, Autonomous Bodies and other associated entities
25	00570	31/08/2016	PBOD	Sovereign Gold Bonds 2016-17 - Series II (01st September,2016 to 09th September,2016)
26	00512	15/07/2016	RBD	INTERPRETATION OF CREDIT SCORE IN CREDIT INFORMATION REPORT (CIR) GENERATED THROUGH CIBIL FOR DUE DILIGENCE OF RETAIL LOANS
27	00290	04/08/2016	RMD	FUND TRANSFER PRICING POLICY 2016-17
28	00538	29/07/2016	RMD	POLICY ON LENDING TO REAL ESTATE SECTOR 2016-17
29	00590	22/09/2016	SSD	CAPITAL & REVENUE EXPENDITURE POLICY 2016-17
30	00509	28/07/2016	SSD	EXPENDITURE PROVISION - STATUTORY AUDIT OBSERVATIONS

ओड़िशा का लोक पर्व : रज-संक्रांति

ओड़िशा राज्य अपनी समृद्ध कला और विविध पर्वों के कारण प्रसिद्ध है. कृषि-प्रधान इस राज्य के ज़्यादातर तटवर्ती क्षेत्र के लोगों का प्रमुख और प्रधान पर्व रज-संक्रांति है. यह मूलतः एक कृषि-मित्तिक पर्व है जो आषाढ़ माह के प्रथम दिवस के साथ शुरू होता है. यह पर्व लगभग जून महीने में मनाया जाता है. यद्यपि हर एक पर्व किसी न किसी धार्मिक आस्था और विश्वास से जुड़ा हुआ होता है, फिर भी इसका मुख्य उद्देश्य आमोद-प्रमोद ही होता है. जीवन में रंगों की बहार लाना तथा नीरस जीवन में खुशी और आनन्द भरना पर्वों का एक अनोखा अभिप्राय भी है. सामाजिक सौहार्द, भाईचारा, पारस्परिक सहयोगिता के ज्वलंत प्रतीक होते हैं ये पर्व. आत्मानुशासन एवं आध्यात्मिक भावधाराओं का पवित्र संगम है यह पर्व.

पुराने दिनों में ज़्यादातर त्योहार कृषि-संबंधित होते थे या उनका मूल स्वरूप किसी न किसी कृषि कार्य से संबंधित हुआ करता था. लोगों की यह भी मान्यता रही है कि मानव जीवन के हर पहलू में दैवी शक्तियों का प्रभाव होता है और पर्वों का आयोजन उन्हीं दैवी शक्तियों के सम्मान में किया जाता है जो कि कृषि कार्यविधि को नियंत्रित करने के दृढ़ विश्वास का ही रूप है. रज-संक्रांति, अक्षय-तृतीया, गम्हा-पूर्णिमा, माण-बसा गुरुवार, नुआखाई आदि त्योहारों के रूप में भी यह विश्वास ओड़िशावासियों के जीवन में उतर आया है.

ज्येष्ठ माह के अंतिम दिवस को पहली-रज यानि प्रथम रज और आषाढ़ माह के प्रथम दिवस को रज-संक्रांति या मिथुन-संक्रांति के नाम से जाना जाता है. यहीं से बारिश के मौसम की शुरुआत होती है. समग्र ओड़िशा में रज-संक्रांति कृषि-वर्ष के आगमन को भी दर्शाता है. प्रचंड ग्रीष्म से तपती जमीन पर पहली बारिश की बूंद से मिले शीतल स्पर्श से न सिर्फ मन और काया को सुकून मिलता है बल्कि इससे धरती को उपजाऊ बनाने में मदद भी मिलती है. आषाढ़ माह के द्वितीय दिवस यानि रज-संक्रांति का अगला दिन भूमि-दहन के नाम से प्रसिद्ध है. मानसून के आगमन को रज-पर्व पालन का प्रतीक मान कर यह पर्व तीन दिनों तक मनाया जाता है. यहाँ तक कि ओड़िशा के कुछ प्रांतों में रज-पर्व चार दिन का भी होता है. चौथे दिन को बसुमती पूजा यानि 'धरती माता की पूजा' के रूप में मनाया जाता है. मान्यता है कि धरती तीन दिनों तक रजस्वला रहने के बाद इस दिन स्नान करती है. 'रजस्वला' शब्द से रजपर्व की उत्पत्ति हुई है. रजपर्व यानि धरती के उपजाऊ होने की आहट. इसी कारण चौथे दिन जमीन खोदना या किसी भी तरह खरोंच आदि से धरती को कष्ट पहुंचाना मना है. जैविक संकेतों से भरा यह पर्व बारिश का आगमन और धरती के उपजाऊ होने का सूचक है.

मध्य काल में इस पर्व ने मुख्यतः एक कृषि अवकाश के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की थी, जिसमें लोग कृषि कर्म प्रारंभ करने से पहले हर्षोल्लास के साथ भूदेवी की पूजा अर्चना कर खुशी मनाते थे. भूदेवी महाप्रभु जगन्नाथ जी की पत्नी के रूप में ख्यात हैं और उनकी एक चाँदी की प्रतिमा अभी भी जगन्नाथ जी के पार्श्व में पाई जाती है.

नारी शक्ति और मातृत्व का अनुभव दिलाता यह पर्व कुमारी लड़कियों के लिए खास खुशी और आनंद की सौगात ले कर आता है. लड़कियां स्वयं को तरह-तरह की वेश-भूषा और विविध शृंगार से सुसज्जित करती हैं और पैरों में आलता लगाती हैं. उन चार दिनों उन्हें कोई भी काम करने नहीं दिया जाता. झूला झूलना, घर-घर घूमना, स्वादिष्ट पकवानों जैसे कि पोड़-पीठा, चकुली पीठा, काकरा पीठा आदि का ज़ायका लेना ही उनका मुख्य कार्य रह जाता है. जबकि महिलाएं ताश, लूडो जैसे घर के अंदर खेले जाने वाला खेल में अपने आपको व्यस्त रखती हैं. गाँव में कबड्डी आदि खेलों का भी आयोजन किया जाता है जिसमें हिस्सा लेने तथा देखने में लोग पूरा दिन व्यतीत करते हैं. झूला झूलने के साथ-साथ लड़कियों द्वारा गाये जाने वाले लोकगीतों का भी आकर्षण रहता है.

इस पर्व के लिए गाये जाने वाले लोकगीत वस्तुतः प्यार, भाईचारा, आपसी सम्मान, सामाजिक व्यवस्था आदि को लेकर ही रचे गए हैं. जैसे:

बनस्ते डाकिला गज, बरषके थरे आसिछी रज,

आसिछी रज लो घेनि नुआ सजबाज़, बउल लो घेनि नुआ सजबाज़ ॥

अर्थात् जंगल में हाथी ने आवाज दी कि साल में एक बार फिर

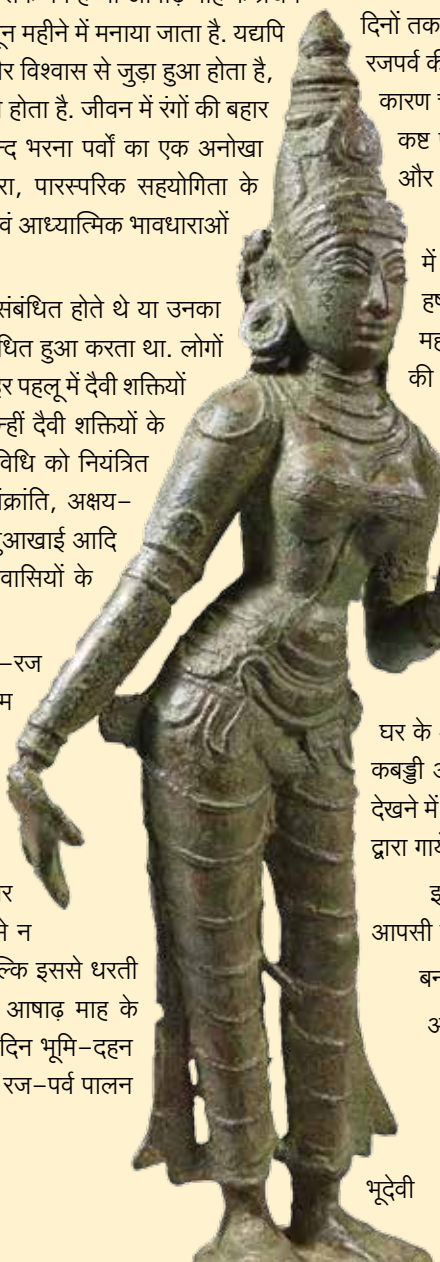

भूदेवी

रज–पर्व आया है, रज नए सजधज के साथ आया है, सहेली ! रज नये सजधज के साथ आया है॥

डोली डाके कट–मट, मो भाई मुंड रे सुना मुकुट, सुना मुकुट लो दिशे केडे झट–मट.

अर्थात झूला आवाज दे रहा है कि मेरे भाई के सर पर सोने का मुकुट है और वह कितना सुंदर झलक रहा है.

तात्कालिक होने के बावजूद, सुंदर रचना, भाव, अर्थ तथा शब्द–चयन के कारण यह गीत जन–मानस तक पहुँच गया है तथा इसे ओड़िशा के लोकगीत की मान्यता भी मिली है.

रज–संक्रांति के अंतिम दिन यानि बसुमती स्नान के दिन महिलाएं पेषण प्रस्तर (भू–माता के प्रतीक) को स्नान करा के हल्दी, फूल, सिंदूर आदि से सुसज्जित करती हैं. इसमें सभी प्रकार के मौसमी फलों को अर्पण किया जाता है. रज–पर्व के शुरू होने के साथ यानि पहली रज को घर आदि की सफाई होती है. तीन दिनों तक आवश्यक होने वाले मसालों आदि की पिसाई होती है ताकि उन दिनों कोई काम न करने पड़े. पारंपरिक विश्वास यह है कि जैसे बालिकाओं का रजस्वला होना उर्वरता का संकेत है, वैसे ही धरती रजस्वला बनती है. उड़िया हिन्दू परंपरा के अनुसार इस दौरान लड़कियां और धरती किसी भी कार्य से निवृत्त रहती हैं. कृषि मित्तिक समस्त कार्य बंद रहता है. धरती माता को उन दिनों पूर्ण विराम मिलता है. वस्तुतः यह पर्व कुमारी बालिकाओं का ही है, जो कि भावी मातृत्व का निदर्शन है.

इस पर्व की समाप्ति के साथ कृषक लोग फिर से अपने–अपने काम पर वापस जाने लगते हैं. बारिश का आना और कृषि कर्म का प्रारंभ – उन्हें एक पल भी आराम का मौका नहीं देगा. महिलाएं लड़कियां तो गृह कार्य में व्यस्त रहेंगी. जीवन चक्र का यह सिलसिला रज–पर्व के रूप में कुछ हद तक प्रदर्शित होता है. कठोर श्रम, आराम,जीवन में अवकाश की आवश्यकता, खुशियाँ, आमोद–प्रमोद, पारंपरिकता, सामाजिक बंधन, खान–पान, खेल–कूद, लड़कियों को स्नेह–सम्मान और सर्वोपरि जैविक संकेत यानि नवोन्मेष का अद्भुत पूर्व संगम है रज–पर्व. यहाँ तक कि रज पर्व में भाग लेने और इस परंपरागत त्योहार का हिस्सा बनने के लिए, अपनी जन्मभूमि से दूर रहने वाले लोग छुट्टियाँ लेकर घर आते हैं. साथ ही, यह पर्व एनआई एक्ट के तहत ओड़िशा में एक सरकारी अवकाश के रूप में मनाया जाता है. तो आइए इसी बहाने हम अपनी सुदृढ़, समृद्ध परंपरा को जी लें.

सुब्रत कुमार धल
क्षे. का., सम्बलपुर

शुभमस्तु

श्रीमती हेमलता राजन
महाप्रबंधक

श्री ए. के. जैन
महाप्रबंधक

श्री विनोद कुमार गाबा
उप महाप्रबंधक

श्री राम प्रकाश बेरी
उप महाप्रबंधक

श्री ए. के. शर्मा
उप महाप्रबंधक

श्री वी. के. जैन
उप महाप्रबंधक

श्री आर. राजाराम
उप महाप्रबंधक

हम आपके स्वस्थ एवं सुखद सेवानिवृत्त जीवन की कामना करते हैं.

अच्छे काम की शाबाशी !

दिनांक 25–04–2016 को वाराणसी क्षेत्र के रेलवे स्टेशन एटीएम के 1000 हिट पार करने तथा वाराणसी क्षेत्र की शाखाओं में एटीएम हिट्स के बेहतर प्रदर्शन के लिए केन्द्रीय कार्यालय के श्री देबज्योति गुप्ता, म.प्र.,डिजिटल बैंकिंग ने श्री ए. के. दीक्षित, क्षेत्र महाप्रबंधक वाराणसी तथा श्री योगेंद्र सिंह, क्षेत्र प्रमुख वाराणसी को बधाई दी तथा क्षेत्र के चैनल मैनेजर श्री अवधेश उपाध्याय, प्रबन्धक को पुष्प गुच्छ प्रदान कर सम्मानित किया.

राजस्थान की संस्कृति

राजस्थान भारत के सबसे आकर्षक और लुभावने राज्यों में से एक है जो भौगोलिक एवं सांस्कृतिक विविधतायुक्त है. राजस्थान का एक गौरवशाली इतिहास रहा है. राजस्थान की कलात्मक और सांस्कृतिक परंपराओं में प्राचीन भारतीय जीवन शैली प्रतिबिंबित है. यहाँ गांवों की एक समृद्ध और विविध लोक संस्कृति है जिसे अक्सर राज्य के प्रतीक की भांति चित्रित किया जाता है. राजस्थान के कई बहादुर राजाओं को कला और स्थापत्य-कला में उनकी रुचि तथा उनकी वीरता के लिए जाना जाता है. शास्त्रीय संगीत और अपनी अलग शैली के साथ विविध प्रकार के नृत्य राजस्थान की सांस्कृतिक परंपरा का हिस्सा हैं. इसी विविधता ने इस प्रदेश के लोक नृत्यों को भी विविधता प्रदान की है और अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग नृत्य विकसित किए. राजस्थान के प्रमुख लोकनृत्य इस प्रकार हैं-

घूमर नृत्य

यह पूरे राज्य में लोकप्रिय है तथा मांगलिक अवसरों व त्योहारों पर महिलाओं द्वारा किया जाता है. इसमें लहँगा पहने स्त्रियाँ गोल घेरे में लोकगीत गाती हुई नृत्य करती हैं. जब ये महिलाएँ विशिष्ट शैली में नाचती हैं तो उनके लहँगे का घेर एवं हाथों का संचालन अत्यंत आकर्षक होता है. लहंगे के घेर को कुंभ कहते हैं.

गैर नृत्य

यह होली के दिनों में मेवाड़ एवं बाड़मेर में खेला जाता है. यह पुरुषों का नृत्य है. गोल घेरे में इसकी संरचना होने के कारण ही इसे 'गैर' कहा जाता है. इसमें पुरुषों की टोली हाथों में लंबी डंडियां ले कर ढोल व थाली-माँदल वाद्य की ताल पर वृत्ताकार घेरे में नृत्य करते हुए मंडल बनाती है. इस नृत्य में तेजी से पद संचालन और डंडियों की टकराहट से तलवारबाजी या पट्टयुद्ध का आभास होता है. मेवाड़ एवं बाड़मेर में गैर की मूल रचना समान है किंतु नृत्य की लय, ताल और मंडल में अंतर होता है.

कालबेलिया नृत्य

"कालबेलिया" राजस्थान की एक अत्यंत प्रसिद्ध नृत्य शैली है. कालबेलिया सपेरा जाति को कहते हैं. अतः कालबेलिया सपेरा जाति का नृत्य है. इसमें गजब की लोच और गति होती है जो दर्शक को सम्मोहित कर देती है. यह नृत्य दो महिलाओं द्वारा किया जाता है. पुरुष नृत्य के दौरान बीन व ताल वाद्य बजाते हैं. इस नृत्य में कांच के टुकड़ों व जरी-गोटे से तैयार काले रंग की कुर्ती, लहंगा व चुनरी पहनकर सांप की तरह बल खाते हुए नृत्य की प्रस्तुति की जाती है. इस नृत्य के दौरान नृत्यांगनाओं द्वारा आंखों की पलक से अंगूठी उठाने, मुंह से पैसे उठाना, उल्टी चकरी खाना आदि कलाबाजियां दिखाई जाती हैं. केन्या की राजधानी नैरोबी में नवंबर, 2010 में हुई अंतर्राष्ट्रीय समिति की बैठक में यूनेस्को ने कालबेलिया नृत्य को अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि सूची में भी शामिल किया है. इस नृत्य को विशेष पहचान नृत्यांगना 'गुलाबो' ने दिलाई, जिन्होंने देश में ही नहीं विदेशों में भी अपनी कलाकारी दिखाई.

शेखावटी का गींदड़ नृत्य

यह शेखावटी का लोकप्रिय नृत्य है. विशेष तौर पर होली के अवसर पर यह किया जाता है. चुरु, झुंझुनूं, सीकर जिलों में इस नृत्य के सामूहिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं. नगाड़ा इस नृत्य का प्रमुख वाद्य है. नर्तक नगाड़े की ताल पर हाथों में डंडे ले कर उन्हें टकराते हुए नाचते हैं. नगाड़े की गति बढ़ने के साथ यह नृत्य भी गति पकड़ता है. इस नृत्य में साधु, सेठ-सेठानी, दुल्हा-दुल्हन, शिकारी आदि विभिन्न प्रकार के स्वांग भी होते हैं.

मारवाड़ का डांडिया नृत्य

मारवाड़ के इस लोकप्रिय नृत्य में भी 'गैर' व 'गींदड़' नृत्यों की तरह डंडों को आपस में टकराते हुए नर्तन होता है तथा यह भी होली के अवसर पर पुरुषों द्वारा किया जाता है, किन्तु पद संचालन, ताल-लय,गीतों और वेशभूषा की दृष्टि से यह पूर्णतया भिन्न है. इस नृत्य के समय नगाड़ा और शहनाई बजाई जाती है.

कामड़ जाति का विशिष्ट तेरहताली नृत्य

यह एक ऐसा नृत्य है जो बैठ कर किया जाता है. इस आकर्षक नृत्य में महिलाएँ अपने हाथों, पैरों व शरीर के 13 स्थानों पर मंजीरें बाँध लेती हैं तथा दोनों हाथों में बँधे मंजीरों को गीत की ताल व लय के साथ तेज गति से शरीर पर बँधे अन्य मंजीरों पर प्रहार करती हुई विभिन्न भाव-भंगिमाएं प्रदर्शित करती हैं. इस नृत्य के समय पुरुष तंबूरे की तान पर 'रामदेव जी' के भजन गाते हैं.

उदयपुर का भवई नृत्य

चमत्कारी प्रभाव एवं करतब के लिए प्रसिद्ध यह नृत्य उदयपुर संभाग में अधिक प्रचलित है. नाचते हुए सिर पर एक के बाद एक, सात-आठ मटके रख कर थाली के किनारों पर नाचना, गिलासों पर नृत्य करना, नाचते हुए जमीन से मुँह से रुमाल उठाना, नुकीली कीलों पर नाचना आदि करतब इसमें दिखाए जाते हैं.

जसनाथी संप्रदाय का अग्नि नृत्य

यह नृत्य जसनाथी संप्रदाय के लोगों द्वारा रात्रिकाल में धधकते अंगारों पर किया जाता है. नाचते हुए नर्तक कई बार अंगारों के ऊपर से गुजर जाता है. नाचते हुए ही वह अंगारों को हाथ में उठाता है तथा मुँह में भी डाल लेता है. यह नृत्य पुरुषों द्वारा ही किया जाता है.

जालोर का ढोल नृत्य

जालोर के इस प्रसिद्ध नृत्य में 4 या 5 ढोल एक साथ बजाए जाते हैं. सबसे पहले समूह का मुखिया ढोल बजाता है. तब अलग अलग नर्तकों में से कोई हाथ

में डंडे ले कर, कोई मुँह में तलवार ले कर तो कोई रूमाल लटका कर नृत्य करता है. यह नृत्य अक्सर विवाह के अवसर पर किया जाता है.

चरी नृत्य

राजस्थान के गाँवों में पानी की कमी होने के कारण महिलाओं को कई किलोमीटर तक सिर पर घड़ा (चरी) उठाकर पानी भरने जाना पड़ता है. इस नृत्य में पानी भरने जाते समय के आह्लाद और घड़ों के सिर पर संतुलन बनाने की अभिव्यक्ति है. इस नृत्य में महिलाएँ सिर पर पीतल की चरी रख कर संतुलन बनाते हुए पैरों से थिरकते हुए हाथों से विभिन्न नृत्य मुद्राओं को प्रदर्शित करती हैं. नृत्य को अधिक आकर्षक बनाने के लिए घड़े के ऊपर कपास से ज्वाला भी प्रदर्शित की जाती है.

कठपुतली नृत्य

इसमें विभिन्न महान लोक नायकों यथा महाराणा प्रताप, रामदेवजी, गोगाजी आदि की कथा अथवा अन्य विषय वस्तु को कठपुतलियों के माध्यम से प्रदर्शित किया जाता है. यह राजस्थान की अत्यंत लोकप्रिय लोक कला है. यह उदयपुर में

अधिक प्रचलित है.

गरासिया जनजाति का 'वालर' नृत्य

वालर गरासिया जनजाति का एक महत्वपूर्ण नृत्य है. यह घूमर नृत्य का एक प्रतिरूप है. इसमें माँदल, चंग व अन्य वाद्य यंत्रों की थाप पर नर्तक अपने कौशल का प्रदर्शन करते हुए थिरकते हैं.

चंग नृत्य

पुरुषों के इस नृत्य में प्रत्येक पुरुष के हाथ में एक चंग (एक प्रकार का वाद्य यंत्र) होता है और वह चंग बजाता हुआ वृत्ताकार घेरे में नृत्य करता है. इस दौरान एक वादक बाँसुरी भी बजाता रहता है और सभी होली के गीत व धमाल गाते हैं.

कच्छी घोड़ी नृत्य

कच्छी घोड़ी नृत्य में ढाल और लम्बी तलवारों से लैस नर्तकों का ऊपरी भाग दूल्हे की पारम्परिक वेशभूषा में रहता है और निचले भाग में बाँस के ढाँचे पर कागज़ की लुगदी से बने घोड़े का ढाँचा होता है. यह ऐसा आभास देता है जैसे नर्तक घोड़े पर बैठा है. नर्तक, शादियों और उत्सवों पर नाचता है. इस नृत्य में एक या दो महिलाएँ भी इस घुड़सवार के साथ नृत्य करती हैं. कभी-कभी दो नर्तक बर्छेबाज़ी के मुक़ाबले का प्रदर्शन भी करते हैं.

पनिहारी नृत्य

'पनिहारी' का अर्थ होता है पानी भरने जाने वाली. पनिहारी नृत्य, घूमर नृत्य के समान होता है. इसमें महिलाएँ सिर पर मिट्टी के घड़े रखकर हाथों एवं पैरों के संचालन के साथ नृत्य करती हैं. यह एक समूह नृत्य है और अक्सर उत्सव या त्योहार पर किया जाता है.

बमरसिया या 'बम' नृत्य

यह अलवर और भरतपुर क्षेत्र का नृत्य है और होली के अवसर पर किया जानेवाल नृत्य है. इसमें दो व्यक्ति एक नगाड़े को डंडों से बजाते हैं तथा अन्य वादक थाली, चिमटा, मंजीरा, ढोलक व खड़ताल आदि बजाते हैं और नर्तक रंग-बिरंगे फूंदों एवं पंखों से बंधी लकड़ी को हाथों में लेकर उसे हवा में उछालते हैं. इस नृत्य के साथ होली के गीत और रसिया गाए जाते हैं. बम या नगाड़े के साथ रसिया गाने से ही इसे बमरसिया कहते हैं.

हाड़ौती का 'चकरी' नृत्य

यह नृत्य हाड़ौती अंचल (कोटा,बारां और बूंदी) की कंजर जाति की बालाओं द्वारा विभिन्न अवसरों, विशेषकर विवाह के आयोजन पर किया जाता है. इसमें नर्तकी चक्कर पर चक्कर घूमती हुई नाचती है तो उसके घाघरे का लहराव देखने लायक होता है. लगभग पूरे नृत्य में कंजर बालाएं लट्टू की तरह घूर्णन करती हैं. इसी कारण इस नृत्य को चकरी नृत्य कहा जाता है. इस नृत्य में ढफ, मंजीरा तथा नगाड़े का प्रयोग होता है.

लूर नृत्य

मारवाड़ का यह नृत्य फाल्गुन माह में प्रारंभ हो कर होली दहन तक चलता

है. यह महिलाओं का नृत्य है. महिलाएँ घर के कार्य से निवृत्त हो कर गाँव में नृत्य स्थल पर इकट्ठा होती हैं एवं उल्लास के साथ एक बड़े घेरे में नाचती हैं.

घुड़ला नृत्य

यह मारवाड़ का नृत्य है जिसमें छेद वाली मटकी में दीपक रख कर स्त्रियाँ टोली बना कर पनिहारी या घूमर की तरह गोल घेरे में गीत गाती हुई नाचती हैं. इसमें धीमी चाल रखते हुए घुड़ले को नजाकत के साथ संभाला जाता है. इस नृत्य में ढोल, थाली, बाँसुरी, चंग, ढोलक, नौबत आदि मुख्य हैं. यह नृत्य मुख्यतः होली पर किया जाता है जिसमें चंग प्रमुख वाद्य होता है. इस समय गाया जाने वाला गीत है –

"घुड़लो घूमै छः जी घूमै छः, घी घाल म्हारौ घुड़लो ॥"

अरविंद कुमार
क्षे.का., उदयपुर

जगन्नाथ पुरी एवं रथ यात्रा

उड़ीसा राज्य में स्थित 'पुरी' क्षेत्र भगवान श्री जगन्नाथ जी की प्रमुख लीला-भूमि है. इस क्षेत्र को जगन्नाथ पुरी, पुरुषोत्तम पुरी, शंख क्षेत्र एवं श्रीक्षेत्र के नाम से भी जाना जाता है तथा जगन्नाथ जी सम्पूर्ण जगत के महाप्रभु माने जाते हैं. पुरी का जगन्नाथ मंदिर तो धार्मिक सहिष्णुता और समन्वय का अद्भुत उदाहरण है. भगवान जगन्नाथ की रथयात्रा प्रति वर्ष आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष की द्वितीया को जगन्नाथपुरी में होती है. यह रथयात्रा 'पुरी' का प्रधान पर्व भी है जिसे देखने के लिए देश-विदेश से लोग बड़ी संख्या में आते हैं. इस रथयात्रा का आयोजन पुरी के अतिरिक्त देश-विदेश में कई स्थानों पर भी होता है.

रथों का आकार-प्रकार: दस दिनों तक चलने वाले इस महोत्सव की तैयारी अक्षय तृतीया को श्री कृष्ण, बलराम तथा सुभद्रा के रथों के निर्माण कार्य से प्रारम्भ होती है. रथयात्रा प्रारम्भ होने तक प्रति दिन कोई न कोई धार्मिक अनुष्ठान आयोजित होते रहते हैं. बलभद्र जी और सुभद्रा जी के रथ जगन्नाथ जी के रथ से कुछ छोटे होते हैं.

जगन्नाथ जी के रथ में 16 पहिये होते हैं जो 13.5 मीटर ऊंचे होते हैं तथा इसमें लाल व पीले रंग के कपड़े का प्रयोग किया जाता है. कहा जाता है कि इस रथ की सुरक्षा विष्णु का वाहन गरुड़ करता है इसलिए यह रथ 'गरुड़ध्वज', 'कपिलध्वज' एवं 'नंदीघोष' के नाम से जाना जाता है. इस रथ पर लगे ध्वज को 'त्रैलोक्य मोहिनी' कहा जाता है.

बलराम जी का रथ 'तालध्वज' के नाम से जाना जाता है. इस रथ में 13.2 मीटर की ऊंचाई वाले 14 पहिए लगे होते हैं. यह रथ लाल, हरे रंग के कपड़े व लकड़ी के 783 टुकड़ों से बनाया जाता है. इस रथ को जिस रस्सी से खींचा जाता है, उसे वासुकी कहते हैं.

सुभद्रा जी के रथ को 'दर्पदलन' और 'पद्मध्वज' कहा जाता है. इस रथ को 12.9 मीटर ऊंचे 12 पहियों, लाले-काले कपड़ों के साथ लकड़ी के 593 टुकड़ों से बनाया जाता है. इस रथ को खींचने वाली रस्सी को 'स्वर्णचूड़ा' कहते हैं.

यात्रा का स्वरुप : रथयात्रा में सबसे आगे बलराम, उनके पीछे सुदर्शन चक्र और उनसे पीछे भगवान जगन्नाथ जी चलते हैं. सांयकाल तक ये तीनों ही रथ गुंडीचा मंदिर में पहुँचते हैं. अगले दिन भगवान रथ से उतर कर मंदिर में प्रवेश करते हैं और सात दिन तक वहीं रहते हैं. गुंडीचा मंदिर में इन नौ दिनों में श्री जगन्नाथ जी के दर्शन को 'आड़प-दर्शन' कहा जाता है.

रथयात्रा की पृष्ठभूमि : इस संबंध में विभिन्न कथाएं प्रचलित हैं. प्रचलित कथा के अनुसार द्वारिका में श्री कृष्ण रुक्मिणी आदि राज महिषियों के साथ शयन करते हुए एक रात निद्रा में अचानक राधे-राधे बोल पड़े. महारानियों को आश्चर्य हुआ. जागने पर श्री कृष्ण ने अपना मनोभाव प्रकट नहीं होने दिया. राधा की श्री कृष्ण के साथ रहस्यात्मक रास लीलाओं के बारे में रोहिणी जानती थीं, जिसको प्रभु ने इतनी सेवा निष्ठा और भक्ति के बाद भी नहीं भुलाया है. अन्य रानियों ने रुक्मिणी से राधा के बारे में जानकारी देने के लिए अनुरोध किया. महारानियों के हठ करने पर रुक्मिणी ने कहा-ठीक है, सुभद्रा को पहले पहरे पर बिठा दो, कोई अंदर न आने पाए, भले ही बलराम या श्रीकृष्ण ही क्यों न हों. कथा शुरू करते ही श्री कृष्ण और बलराम अचानक अंत:पुर की ओर आते दिखाई दिए. सुभद्रा ने उचित कारण बता कर द्वार पर ही रोक लिया. अंत:पुर से श्री कृष्ण और राधा की रासलीला की वार्ता श्रीकृष्ण और बलराम दोनों को ही सुनाई दी. उसको सुनने से श्री कृष्ण और बलराम के अंग-अंग में अद्भुत प्रेम रस का उद्भव होने

लगा. साथ ही सुभद्रा भी भाव-विह्वल होने लगीं. तीनों की ही ऐसी अवस्था हो गई कि पूरे ध्यान से देखने पर भी किसी को भी हाथ-पैर आदि स्पष्ट नहीं दिखते थे. सुदर्शन चक्र विगलित हो गया. उसने लंबा-सा आकार ग्रहण कर लिया. यह राधिका के महाभाव का गौरवपूर्ण दृश्य था.

अचानक नारद के आगमन से वे तीनों पूर्ववत् हो गए. नारद ने ही श्री भगवान से प्रार्थना की-'हे भगवान आप चारों के जिस महाभाव में लीन मूर्तिस्थ रूप के मैंने दर्शन किए हैं, वह सामान्य जनों के दर्शन हेतु पृथ्वी पर सदैव सुशोभित रहे'. एक अन्य कथा के अनुसार सुभद्रा के द्वारिका भ्रमण की इच्छा पूर्ण करने के उद्देश्य से श्री कृष्ण व बलराम ने अलग रथों में बैठकर रथयात्रा करवाई थी. सुभद्रा की नगर भ्रमण की स्मृति में यह रथयात्रा पुरी में हर वर्ष होती है. ऐसी मान्यता है कि भगवान जगन्नाथ अपने बड़े भाई बलराम एवं बहन सुभद्रा के साथ पुरी मंदिर से विशाल रथों से यात्रा कर अपनी मौसी के घर पर छुट्टियां बिताने जाते हैं.

एकता एवं आपसी भाईचारे का प्रतीक: रथयात्रा में पारंपरिक सद्भाव, सांस्कृतिक एकता और धार्मिक सहिष्णुता का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है. जगन्नाथ पुरी में आज भी रथयात्रा में जगन्नाथ जी को दशावतारों में से एक रूप माना जाता है जिनमें विष्णु, कृष्ण, वामन और बुद्ध भी हैं. अनेक कथाओं, विश्वासों और अनुमानों से यह सिद्ध होता है कि भगवान जगन्नाथ विभिन्न धर्मों, मतों और विश्वासों का अद्भुत समन्वय हैं. जगन्नाथ मंदिर में पूजा-पाठ, दैनिक आचार-व्यवहार, रीति-नीति और व्यवस्थाओं को शैव, वैष्णव, बौद्ध, जैन, यहाँ तक, कि, तांत्रिकों ने भी प्रभावित किया है. रथयात्रा के इस महोत्सव में जो सांस्कृतिक और

पौराणिक दृश्य उपस्थित होता है उसे प्राय: सभी देशवासी सौहार्द्र, भाई-चारे और एकता के परिप्रेक्ष्य में देखते हैं. उत्साहपूर्वक श्री जगन्नाथ जी का रथ खींचकर लोग अपने आपको धन्य समझते हैं. श्री जगन्नाथ की यह रथयात्रा सांस्कृतिक एकता तथा सहज सौहार्द्र की एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में देखी जाती है.

महत्व : संपूर्ण भारत में वर्ष भर होने वाले प्रमुख पर्वों-होली, दीपावली, दशहरा, रक्षा-बंधन, ईद, क्रिसमस और वैशाखी की ही तरह पुरी की रथयात्रा का पर्व भी महत्त्वपूर्ण है. ऐसा माना जाता है कि रथ शरीर है जिसमें आत्मा रूपी भगवान जगन्नाथ विराजमान रहते हैं. इस प्रकार यह रथयात्रा जीवन-यात्रा का प्रतीक है एवं शरीर तथा आत्मा के मेल की ओर संकेत करती है और आत्मदृष्टि बनाए रखने की प्रेरणा देती है. रथ का रूप श्रद्धा के रस से परिपूर्ण होता है. वह चलते समय शब्द करता है. उसमें धूप और अगरबत्ती की सुगंध होती है. इसे भक्त जनों का पवित्र स्पर्श प्राप्त होता है. शास्त्रों और पुराणों में भी रथयात्रा की महत्ता को स्वीकार किया गया है. पुराणों में कहा गया है कि रथयात्रा में जो व्यक्ति श्री जगन्नाथ जी के नाम का कीर्तन करते हुए गुंडीचा नगर तक जाता है वह जन्म-जन्मान्तर के चक्र से मुक्त हो जाता है और सीधे भगवान श्री विष्णु के उत्तम धाम को जाता है. जो व्यक्ति गुंडीचा मंडप में रथ पर विराजमान श्री कृष्ण, बलराम और सुभद्रा देवी के दर्शन दक्षिण दिशा को आते हुए करते हैं, वे मोक्ष को प्राप्त होते हैं. रथयात्रा एक ऐसा पर्व है जिसमें भगवान जगन्नाथ चलकर जनता के बीच आते हैं और उनके सुख-दुख में सहभागी बनते हैं.

समापन: आषाढ़ शुक्ल की दशमी के दिन वापसी की यात्रा शुरु की जाती है. इस यात्रा को बाहुड़ा यात्रा कहते हैं. इस दौरान पुन: गुंडीचा मंदिर से भगवान के रथों को वापस जगन्नाथ मंदिर तक लाया जाता है तथा बाद में प्रतिमाओं को पुन: गर्भ गृह में स्थापित कर दिया जाता है.

महाप्रसाद: जिस श्रद्धा और भक्ति से पुरी के मंदिर में सभी लोग बैठकर एक साथ श्री जगन्नाथ जी का महाप्रसाद प्राप्त करते हैं उससे 'वसुधैव कुटुंबकम' का महत्व स्वत: परिलक्षित होता है. इसे महाप्रसाद का नाम महाप्रभु बल्लभाचार्य ही के द्वारा मिला. कहा जाता है कि महाप्रभु बल्लाभाचार्य की निष्ठा की परीक्षा लेने के लिए उनके एकादशी व्रत के दिन पुरी पहुंचने पर मंदिर में ही किसी ने उन्हें प्रसाद दे दिया. महाप्रभु ने प्रसाद हाथ में लेकर कीर्तन भजन करते हुए दिन के बाद रात्रि भी बिता दी और अगले दिन उस प्रसाद को ग्रहण किया. इस प्रकार इस प्रसाद को महाप्रसाद होने का गौरव प्राप्त हुआ. केवल श्री जगन्नाथ जी के प्रसाद को ही महाप्रसाद के रुप माना जाता है जबकि अन्य तीर्थों के प्रसाद को सामान्यत: प्रसाद ही कहा जाता है. विभिन्न चरणों में प्रति दिन 88 प्रकार का भोग लगाया जाता है तथा त्योहारों के समय और अधिक प्रकार के व्यंजनों का भोग लगाया जाता है. भगवान जगन्नाथ की रसोई विश्वकी सबसे बड़ी रसोई है जिसमें 400 रसोइए, 200 भट्टियों में प्रति दिन 10,000 से भी अधिक लोगों के लिए भोग तैयार करते हैं.

पर्यटन के क्षेत्र में महत्व: पर्यटन की दृष्टि से यह क्षेत्र अत्यन्त ही प्रफुल्लित करने वाला है. यहाँ की मूर्ति कला, स्थापत्य कला और समुद्र का मनोरम किनारा पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए पर्याप्त है. जगन्नाथ जी के मन्दिर के अतिरिक्त उड़ीसा में ही कोणार्क का अद्भुत सूर्य मंदिर, भगवान बुद्ध की अनुपम मूर्तियों से सजी धौला-गिरि और उदय-गिरि की गुफ़ाएँ, जैन मुनियों की तपस्थली खंड-गिरि की गुफ़ाएँ, लिंग-राज, साक्षी गोपाल और भगवान जगन्नाथ के मंदिर दर्शनीय हैं. पुरी में चंद्रभागा का मनोरम किनारा, चंदन तालाब, जनकपुर और नंदनकानन अभ्यारण्य बड़े ही मनोरम और दर्शनीय हैं.

पी. सी. पाणिग्रही
के. का., मुंबई

Project Utkarsh

Project Utkarsh has made further progress in the new financial year. Utkarsh models have been rolled out in more no. of regions, a new batch of Change Leaders has been inducted to take the initiatives forward at field level, winners from the first round of Utkarsh Competition have been recognized & rewarded and we are in the process of creating a Union Bank Change Story! We present an elaborate update on each of the above in this issue of Union Dhara!

Change Leader forum

The 3rd batch of Change Leaders for Project Utkarsh was inducted from the Bank's staff after a selection process undertaken in June 2016. 22 candidates were selected to carry out the role of a Change Leader in the Utkarsh regions across the country along with the existing ones.

The new Change Leaders were extensively trained on Utkarsh models (Union Xperience, SARAL & ULP) over a 3-day program conducted at Staff College, Bengaluru. At the onset, they were given an overview of Project Utkarsh which was followed by dedicated sessions for each of the Utkarsh models. The program was a mix of classroom training and problem solving sessions through case studies.

On the final day of the forum, Change Leaders from the 1st & 2nd batch were invited to share their experiences – challenges as well as success stories - with the new batch. Based on these experiences, the fresh batch was also trained to tackle real life scenarios in branches / units through role plays. They were also given a session on soft skills by an external expert who conducted exercises on team building and self improvement.

A mix of senior & new Change Leaders were finally allocated across the Utkarsh regions to ensure mentoring of new ones by the seniors for taking the initiatives forward.

Utkarsh Blockbuster Grand Ceremony

The Utkarsh Blockbuster Grand Ceremony was organized to felicitate the winners of the two rounds of Utkarsh competitions, the theme of which was Bollywood. The construct of the competition involved branches / units of Utkarsh regions competing with one another in identified business parameters. The team names were based on Bollywood blockbuster movies. The prizes included awards for the Best Branch, Best ULP and Best SARAL in each of the two rounds. Also up for grabs was the award for the Best Utkarsh Region for each round.

The event was held in Mumbai on June 24, 2016 and was attended by ~75 people including our Chairman, Executive Director, Corporate GMs, Zonal Heads & Regional Heads of regions already under Utkarsh, winning branch / unit heads and Change Leaders associated with these winning units. Amidst the felicitation of winners, the event was also graced by professional artists who mesmerized the crowd with their entertaining & unique performances.

The winners were applauded by our top management for their good work and efforts for fruitful implementation of Utkarsh models in their respective units. GM BPT, Shri H. N. Saxena announced the next round of competition – Utkarsh Olympics – which would commence from August 2016.

Union Bank Change Story

Our Bank is in the process of creating a change story unique to our organization which will help emanate a uniform message of change among employees.

The story will capture the need for change, initiatives taken by our Bank to bring about the change, how we are doing it, where this wave of change will lead us to and what are the benefits for all of us.

The first round of discussions for creating the Change Story was held in Mumbai with our top management. The discussions were led by our Chairman who was supported by a group of General Managers to share & garner inputs for the story.

Our strength areas, challenges and organization & employee aspirations were discussed at length. Our Bank has already launched a multitude of initiatives under Project Utkarsh to cover these areas, but it is important to resonate a uniform spirit of change among all employees.

We are now in the process of conducting Focus Group Discussions with groups of field personnel to gather their inputs and thoughts so as to give the Union Bank Change Story its final shape.

Region Launch

Project Utkarsh will be launched in 7 more regions on 1st August 2016 - RO Bangalore, RO Ahmedabad, RO Baroda, RO Pune, RO Nagpur, RO Kanpur and RO Mumbai (N).

With this, Utkarsh will now cover ~500 branches, 26 ULPs and 14 SARALs while also covering an employee base of about 7000 employees across the Bank.

Project Utkarsh will be launched in total 27 regions across India by the end of FY 2016-17.

Aparna Kutumbale
Central Office. Mumbai

कार्टून कोना

यूनियन धारा - वार्षिक प्रतियोगिताएं

साथियो,

हमारी वार्षिक प्रतियोगिताओं की घोषणा हम अपने इस जून–2016 अंक में कर रहे हैं. सहभागिता के नियमों और पुरस्कारों का विस्तृत विवरण इस प्रकार है :

सामान्य नियम :

1. ये प्रतियोगिताएं सिर्फ यूनियन बैंक के कर्मचारियों के लिए हैं. **बाहरी व्यक्ति, बैंक के सेवानिवृत्त कर्मचारियों तथा बैंक कर्मचारियों के रिश्तेदारों से प्राप्त प्रविष्टियां स्वीकार नहीं की जाएंगी.**
2. प्रविष्टि हिंदी अथवा अंग्रेजी में भेजें. यह मूल होनी चाहिए और इसके मूल होने का हस्ताक्षरित घोषणा–पत्र संलग्न किया जाना चाहिए.
3. अपने नाम, पदनाम, तैनाती स्थान एवं बैंक खाता क्रमांक (शाखा के नाम के साथ) का उल्लेख अलग कवरिंग पत्र पर ही करें.
4. **एक प्रतिभागी को एक खण्ड के लिए एक ही प्रविष्टि** की अनुमति दी जाएगी.
5. फोटो–प्रतियोगिता के अलावा हर प्रविष्टि चार प्रतियों में, फुलस्केप शीट के एक तरफ दोहरे स्पेस में टाइप करके अथवा एक शीट पर एक तरफ बड़े अक्षरों में लिखकर हमें भेज दें. अस्पष्ट प्रविष्टियां और निर्धारित शब्द/वाक्य–सीमा से अधिक की प्रविष्टियों को अयोग्य ठहराया जाएगा. **फोटो प्रतियोगिता के लिए फोटो की केवल प्रिंट कापी प्रेषित करनी होगी, न की सॉफ्ट कापी.**
6. प्राप्त प्रविष्टियां वापस नहीं की जाएंगी. अपर्याप्त प्रविष्टियां प्राप्त होने पर पुरस्कार नहीं दिये जाएंगे.
7. नियमों के अनुरूप न होने पर प्रविष्टियां अस्वीकृत की जाएंगी. प्रविष्टियां इस तरह प्रेषित करें कि वे अंतिम दिनांक से पूर्व हमें प्राप्त हो जाएं.
8. साहित्यिक चोरी के मामलों को गंभीरता से लिया जाएगा.
9. निर्णायकों का निर्णय अंतिम और बाध्यकारी होगा और इस सम्बन्ध में कोई पत्राचार नहीं किया जाएगा.
10. सभी प्रविष्टियां **'संपादक, यूनियन धारा, केन्द्रीय कार्यालय, 11 वीं मंजिल, यूनियन बैंक भवन, 239, विधान भवन मार्ग, नरीमन पॉइंट, मुंबई – 400 021'** को प्रेषित करें.

Dear colleagues,

We are announcing our annual contests in this issue i.e. June–2016. Here are the details of rules for participation & the prizes.

General Rules

1. These contests are open only to the employees of Union Bank of India. Entries from outsiders, retired employees and those received from relatives of the employees will not be accepted.
2. The entry can be sent either in Hindi or in English or for both the sections separately. It should be original and a signed declaration to that effect should accompany the entry.
3. The name, designation, place of posting & bank account number with name of the branch, of the participant should be given only on the separate covering letter to the entry.
4. Only one entry for any given contest in each section per participant will be permitted.
5. Except photo contest, each entry should be sent in quadruplicate (4 copies), typed in double–space on one side of a foolscap sheet or written neatly and legibly on one side of a foolscap sheet in block (capital) letters only. Illegible entries and those exceeding the prescribed words/lines limit will be disqualified. For photo contest, send only the hard copy (print) of the photo and not the soft copy file.
6. Submitted entries will not be returned. Prizes will not be awarded in case of insufficient entries.
7. Entries not adhering to the rules will be summarily rejected. The entries should be posted well in advance so as to reach us before the due date to avoid disqualification.
8. A strong view will be taken in the case of plagiarism.
9. The decision of the judges will be final and binding and no correspondence on the subject will be entertained.
10. All entries should be addressed to "Editor, Union Dhara, Central Office, 11th Floor, Union Bank Bhavan, 239, Vidhan Bhavan Marg, Nariman Point, Mumbai – 400 021".

प्रतियोगिता क्रमांक CONTEST NO. 139 द्वितीय तिमाही Second Quarter

शीर्षक दें / Coin A Caption

प्रतियोगिता क्रमांक CONTEST NO. 140 तृतीय तिमाही Third Quarter

चित्रों में सामंजस्य स्थापित करते हुए कविता लिखें

Relate the pictures and compose a poem

यूनियन धारा की वार्षिक प्रतियोगिताएं : 2016-2017 'UNION DHARA' CONTESTS : 2016-2017			
मुख्य प्रतियोगिताएं/MAIN CONTESTS			
प्रतियोगिता क्रमांक Contest No.	तिमाही QUARTER	विषय SUBJECT	अंतिम तिथि LAST DATE
138	प्रथम तिमाही First Quarter जून 2016	''वसंत'' पर फोटोफीचर भेंजे Send a Photo-feature on "SPRING"	31.12.2016
139	द्वितीय तिमाही Second Quarter सितंबर 2016	शीर्षक दें Coin-A-Caption	31.01.2017
140	तृतीय तिमाही Third Quarter दिसंबर 2016	चित्रों में सामंजस्य स्थापित करते हुए कविता लिखें Relate the pictures and compose a poem	30.04.2017
141	चतुर्थ तिमाही Fourth Quarter मार्च 2017	भारत की अंतरराष्ट्रीय छवि International Image of India	31.07.2017
अतिरिक्त प्रतियोगिताएं/ADDITIONAL CONTESTS			
----	प्रथम तिमाही First Quarter जून 2016	भारत से प्रतिभा पलायन Brain Drain from India	31.12.2016
----	द्वितीय तिमाही Second Quarter सितंबर 2016	"ग्रामीण विकास और बैंक" को ध्याा में रखते हुए घोषवाक्य लिखें Write a slogan relating to "Rural Development & Bank"	31.01.2017
----	तृतीय तिमाही Third Quarter दिसंबर 2016	"यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस" पर चार पंक्तियों की कविता लिखें Write a four-liner verse on "Unified Payment Interface"	30.04.2017
---	चतुर्थ तिमाही Fourth Quarter मार्च 2017	राष्ट्रीय सुरक्षा और परिवहन सुविधाएँ National Security & Transport Facilities	31.07.2017

मुख्य प्रतियोगिताएं/Main Contests

प्रतियोगिता क्रमांक 138 - ''वसंत'' पर फोटो-फीचर भेजें.

इस प्रतियोगिता में आपको वसंत ऋतु से संबंधित कम-से-कम 15 फोटो भेजते हुए साथ में ए-4 आकार के काग़ज पर उपयुक्त विषय से संबंधित जानकारी 1-2 पैराग्राफ्स में भेजनी है. (60% फोटो + 40% लिखित जानकारी).

Contest No.138 - Send a Photo-feature on the theme "SPRING".

In this contest you have to send us at least 15 photographs pertaining to the theme "Spring" along with a detailed information in 1-2 paragraphs written on the captioned subject preferably on a A-4 size paper. (60% photographs + 40% text matter).

प्रतियोगिता क्रमांक 139 - शीर्षक दें

शीर्षक 15 शब्दों या 4 पंक्तियों से अधिक न हो.

Contest No.139 - Coin A Caption

Your caption should not exceed 15 words or 4 lines.

प्रतियोगिता क्रमांक 140 - चित्रों में सामंजस्य स्थापित करते हुए कविता लिखें

आपकी कविता 20 पंक्तियों की सीमा से अधिक न हो.

Contest No.140 - Relate the pictures and compose a poem

Your poem should not exceed the limit of 20 lines.

प्रतियोगिता क्रमांक 141 - "भारत की अंतरराष्ट्रीय छवि "

इस विषय पर आपके विचार हमें 200-225 शब्दों में लिखकर भेजें.

Contest No.141 - "INTERNATIONAL IMAGE OF INDIA "

Send us your views in 200-225 words only.

अतिरिक्त तिमाही प्रतियोगिताएं/ Additional Quarterly Contests

प्रथम (जून 2016)तिमाही - "भारत से प्रतिभा पलायन" आपके विचार हमें 200-225 शब्दों में लिखकर भेजें.

1st Quarter (June 2016) - Brain Drain from India -Send us your views in at least 200-225 words.

द्वितीय तिमाही (सितंबर 2016) - 'ग्रामीण विकास और बैंक' पर घोषवाक्य/स्लोगन लिखें

आपका घोषवाक्य/स्लोगन केवल 02 पंक्तियों का होना चाहिए.

2nd Quarter (September 2016)- Write a slogan on "Rural Development & Bank"

Your slogan should not exceed 02 lines.

तृतीय तिमाही(दिसंबर 2016) - "यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस"

आपके विचार हमें केवल चार पंक्तियों की कविता में लिखकर भेजें.

3rd Quarter (December 2016)- "Unified Payment Interface"

Convey us your views in a four-liner verse only.

चतुर्थ तिमाही (मार्च 2017) - "राष्ट्रीय सुरक्षा और परिवहन सुविधाएँ"

आपके विचार हमें न्यूनतम 200-225 शब्दों में लिखकर भेजें.

4th Quarter (March2017)- "NATIONAL SECURITY AND TRANSPORT FACILITIES"

Send us your views in at least 200-225 words.

संपादक
EDITOR

वर्ष 2008 में क्षेत्रीय कार्यालय, ठाणे से सेवा निवृत्त हुए हमारे एक अधिकारी श्री अशोक केलकर द्वारा अपनी सेवा निवृत्ति के पश्चात् अपनी सृजनात्मकता का परिचय देते हुए एक बेहतरीन कार्य को अंजाम दिया गया है. मीडिया तथा मराठी के साहित्य-प्रेमियों ने उनके इस अनूठे प्रयास की भूरि-भूरि प्रशंसा की है.

मराठी के आद्य कवि संत ज्ञानेश्वर तथा 'गीता' को उनके द्वारा प्राकृत मेंह ढालते हुए लिखी गयी 'ज्ञानेश्वरी' के प्रति संपूर्ण मराठी साहित्य-जगत तथा मराठी जनमानस में एक अनूठी पहचान और सम्मान है. इस गेय ग्रंथ का मराठी साहित्य में बहुत महत्व है. प्राकृत में लिखी गयी 'ज्ञानेश्वरी' को समग्र रुप से जानना, समझना आसान नहीं है. ऐसे में श्री अशोक केलकर जी ने 'ज्ञानेश्वरी' को जानने-समझने से लेकर उसके निहितार्थ को वर्तमान, सीधी-सादी समझने योग्य मराठी भाषा में गेय रुप में अनूदित किया है. यह बहुत ही बड़ा कार्य था. एक तो गीता का दर्शन और उसे सरल भाषा में अनूदित करना और वह भी गेय रुप में! अशोक जी को इस कार्य को अंजाम देने में तीन सालों से भी अधिक का समय लगा.अपनी लगन, मराठी भाषा तथा 'ज्ञानेश्वरी' के प्रति उनके प्रेम ने उन्हें इस बृहद् कार्य को पूरा करने के लिए शक्ति, प्रेरणा और ऊर्जा दी. आप केलकर जी से मो. 9619175761 या दूरध्वनि 25331587 पर संपर्क कर सकते हैं.

खारगर शाखा, नवी मुंबई, महाराष्ट्र से सेवा निवृति के उपरांत श्रीमती नयना कुलकर्णी द्वारा रचित काव्य-संग्रह 'उतराई' का प्रकाशन खारगर के ''मी मराठी माझी मराठी'' मंडल द्वारा दिनांक 23.04.2016 को किया गया. इस काव्य-संग्रह में उनकी चुनिंदा मराठी कविताओं के साथ-साथ कुछ अंग्रेजी कविताएँ भी सम्मिलित हैं.

यूनियन बैंक से सेवा निवृति के उपरांत करीब 8 वर्षों तक वित्त व औद्योगिक संसार से मैं जुड़ा रहा. मन में आया- बहुत हो गया-परिवार, गुरुवृन्द, समाज व देश से बहुत कुछ पाया है, इस लर्निंग, अर्निंग के बाद अब 'रिटर्निंग' का समय आ गया है.

गत एक वर्ष से हिन्दू हैरिटेज फ़ाउंडेशन (Hindu Heritage Foundation) से जुड़ा हूँ. इस फ़ाउंडेशन का मूल उद्देश्य यह है कि भारत में उच्च शिक्षा प्राप्त करने आए विदेशी छात्रों को भारतीय संस्कृति का ज्ञान कराया जाये, उन्हें पढ़ाई के दौरान अपनत्व महसूस हो, अच्छा वातावरण मिले, मन व शरीर से स्वस्थ रहें तथा पढ़कर जब वापस अपने देश लौटें, तो अच्छे इंसान बनकर लौटें तथा भारतीय संस्कृति उनके दिल में बसे, जिसे वे अपने देश में बता सकें. भारत के गौरव के लिए इस उद्देश्य को एच.एच.एफ. कैसे पूरा करता है, उन गतिविधियों पर प्रकाश डालते हैं:-

1 करीब तीस हजार विदेशी विद्यार्थी भारत में हर वर्ष उच्च शिक्षा ग्रहण करने आते हैं. इनके स्वागत में एक उत्सव (Freshers Welcome) रखा जाता है, जहां उन देशों के राजदूतों को भी आमंत्रित किया जाता है. विदेशी छात्रों को अपने राजदूतों से मिलने व बात करने का अवसर मिलता है. विदेशी छात्र, जो अपने परिवार, समाज, देश, मित्रों आदि को छोड़कर आए हैं, उन्हें यहाँ अपना-सा प्रतीत होता है. दोनों पक्ष अपनी भाषा में अपने क्षेत्र के बारे में बात करके प्रसन्नता तथा आत्म विश्वास का अनुभव करते हैं. इस अवसर पर 2-3 घंटे का रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है. कुछ विदेशी छात्र/छात्राएं भी अपने देश की सांस्कृतिक झलकियाँ प्रस्तुत करते हैं. इसमें बड़े रुचिकर ढंग से हिन्दी, संस्कृत, वैदिक, योग, शास्त्रीय नृत्य व संगीत तथा भारतीय व्यंजनों के बारे में प्रारम्भिक जानकारी दी जाती है. नाश्ते व खाने में भारतीय व्यंजन ही परोसे जाते हैं. एच.एच.एफ. की टीम तथा विदेशी छात्रों में विश्वास एवं समन्वय का वातावरण बनता है जो वर्षों तक काम आता है.

2. यही छात्र जब अध्ययन पूरा कर वापस अपने वतन लौटते हैं तो उन्हें भावभीनी विदाई दी जाती है. उन्हें भारतीय संस्कृति के अध्ययन का प्रतीकात्मक प्रमाण पत्र दिया जाता है, जो उनकी जीवन भर की धरोहर बनता है. ऐसे उत्सवों में सरकारी तथा गैर सरकारी उच्च अधिकारियों की भी उपस्थिती रहती है.

3. भारत के छात्र, जो विदेश में पढ़ने जाते हैं उनमें तथा भारत से पढ़कर गए विदेशी छात्रों में संपर्क रहता है जिससे कड़ी टूटने नहीं पाती तथा संबंध बना रहता है.

इन सब कार्यक्रमों के पीछे एक मकसद यह है कि वे छात्र अपने देश के अच्छे नागरिक बनें.

इस संस्था से जुड़ने के बाद मुझे देश-विदेशों के प्रमुखों, राजनीतिज्ञों तथा बुद्धिजीवियों से मिलने तथा उनको सुनने का अवसर मिला. इसे मैं ईश्वर द्वारा दिया गया सेवा-निवृत्त जीवन का एक सुअवसर मानता हूँ.

एम. सी. राव
सेवानिवृत्त

हेल्थ टिप्स

प्याज

रंग भेद से प्याज की दो जातियाँ होती हैं–लाल और सफेद. सम्पूर्ण भारतवर्ष में सब्जी के रूप में इसका प्रयोग किया जाता है. प्याज के कंद में प्रोटीन कार्बोहाइड्रेट, कैल्शियम, लौह, विटामिन 'ए','बी' तथा 'सी' होते हैं. प्याज में सल्फर की भी भरपूर मात्रा होती है, जो हानिकारक तत्वों को शरीर से बाहर निकालने में मददगार होती है. छोटी–मोटी बीमारियों के लिए हम घरेलू नुस्खों का प्रयोग बरसों से करते आ रहे हैं.आश्चर्य की बात है कि ये घरेलू नुस्खे हमारे स्वास्थ्य को बेहतर बनाए रखने में उतने ही कारगर भी होते हैं. प्याज़ के घरेलू नुस्खे भी कुछ ऐसे ही हैं.

- प्याज के बीजों की चाय अनिद्रा रोग को दूर करती है. चिड़चिड़े बच्चों को यह लाभ पहुँचाती है.
- इसको सिरके में पीसकर चाटने से गले के रोग मिटते हैं.
- इसके कंद को कुचलकर सुंघाने से मूर्छा और हिस्टीरिया से होने वाली बेहोशी दूर हो जाती है.
- प्याज के रस को गरम कर 2–4 बूंद कान में डालने से कर्णशूल मिटती है.
- छोटे बच्चों को कफ रोगों में प्याज के 5–10 मि.ली. रस में 10 ग्राम शक्कर मिलाकर देनी चाहिए.
- मध्यम मोटाई का एक प्याज, काली मिर्च बुरककर दो बार खाने से दुष्ट वायु आदि से पैदा हुआ ज्वर छूट जाता है.
- दर्में में भी इसके काढ़े को 40–60 ग्राम की मात्रा में सुबह–शाम पिलाने से लाभ होता है.
- प्याज के रस के सेवन से या कच्चा प्याज खाने से आंतों की क्रिया शक्ति बढ़ती है. दस्त साफ होता है.
- प्याज का 10–20 मि.ली. ताजा रस दिन मे तीन बार, तीन महीने तक पीने से पथरी गलकर निकल जाती है और पेशाब साफ होता है.
- प्याज का काढ़ा पिलाने से पेशाब की जलन भी मिटती है.
- यह रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के साथ ही हड्डियों को मजबूत बनाए रखता है.
- ठंड के कारण अगर जोड़ों में बहुत दर्द हो रहा हो तो प्याज के रस में सरसों का तेल मिलाकर मालिश करने से फायदा होगा.
- नाक से खून आने पर प्याज सूंघना ही एक बेहतरीन इलाज है.
- मानसिक तनाव और डिप्रेशन में भी प्याज का फायदा होता है. इसमें पाये जाने वाले फोलेट तत्व आपके मूड को बेहतर बनाए रखते हैं.
- बुखार,जुकाम,पुरानी खांसी में इसका नित्य प्रयोग लाभदायक है
- गांठ, फोड़े, फुंसी, कंठमाला इत्यादि रोगों पर इसको घी में तलकर बांधने से अथवा इसके रस को लगाने से अच्छा लाभ होता है.
- प्याज का ताजा रस शरीर पर मलने से लू का प्रभाव तुरंत समाप्त हो जाता है.
- हवा से फैलने वाले रोगों के उपद्रवों से बचने के लिए प्याज काट कर पास में रखना चाहिए या दरवाजे पर बांध देना चाहिए.

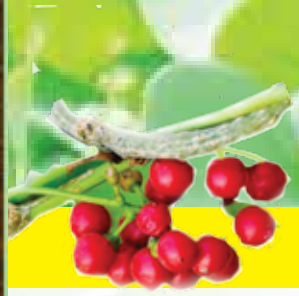

चरक का कोना

गिलोय

अमृता, अमृतल्ली अर्थात कभी न सूखने वाली गिलोय, बड़ी लता रूपी मोटी झाड़ी है. यह समुद्र तल से लगभग 1000 फीट की ऊँचाई तक पाई जाती है. कुंतलाकार क्रम में यह जिस वृक्ष पर चढ़ती है उसी वृक्ष के कुछ गुण भी अपने अंदर समाहित कर लेती है, इसीलिए नीम वृक्ष पर चढ़ी गिलोय श्रेष्ठ मानी जाती है.

यह त्रिदोषात्मक है. स्निग्ध होने से वात, तिक्त कषाय होने से कफ और पित्त का शमन करती है. यह कुष्ठघ्न, वेदनास्थापन, तृष्णा निग्रहण, दीपन, पाचन, पित्तसारक और कृमिघ्न है. यह हृदय को बल देने वाली, रक्त विकार तथा पांडु रोग में गुणकारी है. कास, दौर्बल्य, प्रमेह, मधुमेह और त्वचा के रोगों में तथा कई प्रकार के ज्वर में उत्तम कार्य करती है. आधुनिक चिकित्सा–शास्त्रियों के विचार से गिलोय सूक्ष्मतम विषाणु समूह से लेकर स्थूल कृमियों तक पर अपना प्रभाव दर्शाती है. क्षय रोग उत्पन्न करने वाले माइक्रोबक्टेरियम ट्यूबर–क्लॉसिस (tuber culosis) जीवाणु की वृद्धि को यह सफलतापूर्वक रोकती है. शरीर के जिस भाग में भी ये जीवाणु शांत अवस्था में पड़े हों, गिलोय वहीं पर पहुँचकर उनका नाश करती है.

- गिलोय रस में त्रिफला मिलाकर क्वाथ बनाकर पीपल चूर्ण व शहद मिला कर प्रातः–सायं सेवन करते रहने से नेत्रों की ज्योति शीघ्र बढ़ जाती है.
- वमन–धूप में घूमने फिरने से हो या पित्त प्रकोप से हो, गिलोय स्वरस 10–15 ग्राम में 4–6 ग्राम तक मिश्री मिलाकर प्रातः–सायं पीने से वमन शांत हो जाती है.
- इसके 20–30 ग्राम क्वाथ में 2 चम्मच मधु मिला के दिन में तीन–चार बार पिलाने से कामला रोग मिटता है.
- हरड़, गिलोय, धनिया तीनों को समभाग 20 ग्राम लेकर आधा किलो पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ में गुड़ डालकर प्रातः सायं सेवन करने से सब प्रकार के अर्श नष्ट होते हैं.
- ताजी गिलोय 18 ग्राम, अजमोद 2 ग्राम, छोटी पीपल 2 नग, नीम की सीकें 2 नग– इन सबको कुचलकर रात्रि को 250 ग्राम जल के साथ मिट्टी के बर्तन में रख दें, प्रातः छानकर इसी पानी के साथ पिला दें. 15 से 30 दिन तक सेवन से पेट के सब रोग दूर होते हैं.
- असगंध, गिलोय, शतावर, दशमूल, बलामूल, अड़ूसा, पोहकरमूल तथा अतीस को समभाग लेकर बनाये गये क्वाथ की 50–60 ग्राम मात्रा को सुबह–शाम सेवन करने से राजयक्ष्मा नष्ट होता है. पथ्य–केवल दूध अथवा मांसरस.
- गिलोय के 10–20 ग्राम रस के साथ गुड़ का सेवन करने से बकोष्ठ मिटता है. मिश्री के साथ सेवन करने से पित्त के उपद्रव मिटते हैं. मधु के साथ सेवन करने से कफ मिटता है. सोंठ के साथ सेवन करने से आमवात मिटता है. काली मिर्च और सुखोष्ण जल के साथ सेवन करने से हृदय शूल मिटता है. इसका प्रयोग व्याधिनुसार सात दिनों तक नियमित रूप से करना चाहिए.

अनीता भोबे
के.का.,मुंबई

लोक संस्कृति एवं आस्था का पर्व- छठ

ऐसे तो आजकल छठ पर्व पूरे भारत में मनाया जाने लगा है लेकिन देखा जाए तो यह अब भी बिहार एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश के प्रमुख पर्वों में से एक है. यह पर्व पूर्णतः लोकसंस्कृति एवं नागरिकों की आस्था से जुड़ा हुआ है. बिहार में छठपूजा, सूर्यपूजा के रुप में हिंदी माह के अनुसार कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष के षष्ठी एवं सप्तमी को मनाया जाता है. जैसा कि हम जानते हैं, सूर्योपासना हमारी सांस्कृतिक विरासत है. यह महापर्व आज भी हमारी संस्कृति, आस्था और श्रद्धा का प्रतीक है. प्रकृति पूजा की संस्कृति वाले हमारे देश में सूर्यपूजा का इतिहास वैदिक काल से ही है. ऐसी मान्यता है कि इस व्रत की शुरुआत मगध राज्य से हुई है. पुराणों में, शास्त्रों में एवं धर्मग्रंथों में सूर्योपासना वर्णित है. एक और मान्यता के अनुसार लंका विजय के बाद रामराज्य की स्थापना के दिन कार्तिक शुक्ल षष्ठी को पुरुषोत्म श्रीराम एवं माता जानकी ने सूर्योपासना की थी एवं सप्तमी को सूर्योदय के समय पुनः अनुष्ठान कर सूर्यपूजा की. महाभारत काल में भी अंग नरेश दानवीर कर्ण द्वारा प्रातःकाल अर्घ्य देकर सूर्यपूजा एवं द्रौपदी द्वारा भी सूर्यपूजा का उल्लेख मिलता है. आधुनिकता व भौतिकता की चकाचौंध में भी यह पर्व हमारी सनातनी विरासत, परंपराओं, श्रद्धा और निष्ठा की मजबूत मिसाल है. यह लोक आस्था का महापर्व है.

हम प्राचीन काल से "तमसो मा ज्योतिर्गमय" को चरितार्थ करते रहे हैं. उसी कड़ी में है सूर्य पूजा अर्थात् प्रकाश की उपासना, उजाले का पूजन. सूर्य संपूर्ण संसार के प्रकाशक हैं. इनके बिना सर्वत्र अंधकार है. हम भारतीय मूलतः सूर्य संस्कृति के ही उपासक हैं.

'छठ' शब्द षष्ठ का अपभ्रंश रूप है. वैसे हमारे लोकगीतों में 'छठ माता' का जिक्र होता है तथा मान्यताओं में कुछ जगह इन्हें ब्रह्मा की मानस पुत्री एवं सूर्य की बहन के रूप में प्रदर्शित किया गया है. शास्त्रों में सूर्य को 'सविता' अर्थात उत्पन्न करने वाला कहा गया है. मूलतः सूर्य से पहले उदित होने वाली आभा का नाम सविता है. अथर्ववेद के अनुसार सूर्य जगत के नेत्र हैं, जिनके उदय होने पर समस्त प्राणी जागृत हो जाते हैं. ऋग्वेद के अनुसार चराचर जगत का प्राणस्वरूप होने के कारण सूर्य ही विश्व की आत्मा हैं तथा ऋग्वेद में इन्हें दुःस्वप्न का नाशक कहा गया है. ज्योतिष शास्त्र के अनुसार सूर्य ग्रहराज हैं. सूर्य की हजारों रश्मियों में से तीन सौ रश्मियां पृथ्वी पर, चार सौ रश्मियां पितृलोक पर तथा तीन सौ रश्मियां देवलोक पर प्रकाश फैलाती हैं. अतः नवग्रह पूजन में सर्वप्रथम सूर्य के पूजन का विधान है. यह कालचक्र तथा ऋतुचक्र के नियामक हैं. इन्हीं से दिन-रात, पल, मास, पक्ष, संवत, शरद, ग्रीष्म आदि संभव हैं. वर्ष भर के पर्व त्योहार सूर्य चक्र के अनुसार होते हैं.

भगवान सूर्य अनेक नामों से विश्ववंदनीय हैं. इन्हें आकाश का रत्न, आरोग्य देवता, विकर्तन, त्वष्टा (भक्तों का दुखः दूर करने वाले), लोकप्रकाशक, प्रत्यक्ष देवता, दूरदृष्टा, सर्वदृष्टा, सूरज, लोकसाक्षी, विश्वचक्षु, लोकचक्षु, ग्रहेश्वर, त्रिलोकेश, कर्ता, हर्ता, तमिस्त्रहा, तपन, तापन, शुचि, सप्ताश्ववाहन, गभस्तिहस्त, सर्वदेवनमस्कृत, विवस्वत या विवस्वान, रवि, भानु, दिनकर, अंशुमाली या अंशुमान (किरण को धारण करने वाले), मार्तण्ड (क्योंकि ये जगत को अपनी ऊष्मा और प्रकाश से ओत-प्रोत कर जीवन प्रदान करते हैं), भास्कर, मरीचि, आदित्य या आदितेय (सूर्य की माता का नाम अदिति के कारण यह नाम पड़ा), काश्यप (सूर्य के पिता का नाम महर्षि कश्यप के कारण यह नाम पड़ा), दिवाकर, अर्क, तरणि आदि कहा जाता है.

यदि इस पर्व की उपासना की बात की जाए तो यह अत्यन्त अनुशासित तरीके से मनाया जाने वाला पर्व है. छठ पर्व के अवसर पर प्रकृति पूजा का यह अनुष्ठान कार्तिक शुक्ल पक्ष की चतुर्थी से प्रारम्भ होता है. इस दिन व्रती/परवैतिन/पवनी(व्रती को पुकारे जाने वाले नाम) नदी या सरोवर किनारे स्नान करते हैं. तत्पश्चात शुद्ध एवं शाकाहारी भोजन करते हैं, जिसे व्रती द्वारा केवल एक बार दिन में ग्रहण करने का विधान है. यह दिन 'नहा-खा' या 'नहाय-खाय' के रूप में जाना जाता है. पंचमी को दिनभर उपवास रखकर संध्या में स्नान कर व्रती पूजा करते हैं, तत्पश्चात मीठा प्रसाद खीर (गुड़ से बना हुआ) और रोटी खाते हैं. भोजन मिट्टी के चूल्हों तथा आम की लकड़ी से तैयार करने का विधान है. इस दिन को कई स्थानों में 'खरना' तथा कहीं-कहीं 'लोहण्डी' के नाम से जाना जाता है. चतुर्थी व पंचमी को व्रती के झूठे भोजन को परिजन प्रसाद के रूप में ग्रहण करते हैं.

महापर्व के दिन षष्ठी को निराहार व निर्जल रहकर शाम में कच्चे बांस से बुनी हुई टोकरी (जिसे दउरा कहा जाता है) में पूजा की सम्पूर्ण सामग्री सजाने के उपरांत घर का कोई पुरुष सदस्य उसे सिर पर रखकर पास की नदी/सरोवर के पास नंगे पाँव ही लेकर पहुंचता है तथा उसके पीछे-पीछे स्त्रियों का समूह मधुर स्वर में लोकगीत गाते हुए, ठेकुआ तथा फल जिसमें केला, ईख व नारियल महत्वपूर्ण एवं अन्य पूजन सामग्री कच्चे बांस से बने सूप में सजाकर तथा सूप के अग्र भाग में घी के जलते दीपक को रखकर घाट के किनारे सूर्यास्त के समय पहुंचते हैं. मान्यतानुसार, सूप से वंश-वृद्धि और वंश की रक्षा होती है, ईख अरोग्यता का सूचक है तो ठेकुआ समृद्धि का. व्रती द्वारा पानी में खड़े होकर अस्तांचलगामी सूर्य की ओर मुख कर के गंगाजल/नदी का पवित्र जल/दूध से अर्घ्य देने का विधान है जबकि प्रातःकालीन अर्घ्य उगते सूर्य को दिया जाता है. दूध या गंगाजल का अर्घ्य पीतल या तांबे के पात्र से होना चाहिए. चांदी, स्टील, कांच, व प्लास्टिक के पात्रों से अर्घ्य निषेध है. तत्पश्चात घर आकर महिलायें रात भर जागती हैं ताकि पूजा का दिया बुझने न पावे. वे रातभर भजन एवम् लोकगीत गाती हैं तथा सवेरे सूर्यदेव को अर्पण करने हेतु सूप व दउरा सजाने की तैयारी करती हैं.

अंत में चौथे दिन अर्थात् सप्तमी को संध्या के अर्घ्य स्थान पर जाकर षष्ठी की भांति उदीयमान सूर्य को अर्घ्यदान देकर, घाट पर पूजन कर, व्रती प्रसाद ग्रहण तथा वितरण करते हैं. तत्पश्चात घर आकर शुद्ध भोजन से पारण करते हैं. इसके साथ ही छठ/षष्ठ/सूर्यपूजा का चार दिवसीय महानुष्ठान सम्पन्न होता है.

छठ की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें भक्त और भगवान के बीच कोई नहीं होता, बल्कि भक्त भगवान के सामने होता है. कर्मकांड, पुरोहित और मंदिरों की कोई भूमिका नहीं होती. ऐसी परंपरा है कि इस पर्व में महिलाओं के साथ-साथ पुरुष भी इस पर्व को बढ़-चढ़कर मनाते हैं. कुछ लोग कष्टी व्रत करते हैं. इसमें व्रती द्वारा केवल हाथ जोड़ जल में खड़ा रह कर सूर्य की आराधना की जाती है. कुछ लोग सड़कों पर लेटकर सूर्य को नमस्कार करते हुए घाटों तक पहुचते हैं. इस व्रत के दौरान व्रती सुखद शय्या का त्याग कर धरती पर सोते हैं तथा सम्पूर्ण सात्विकता बरतते हैं.

कुछ व्रती मन्नत के अनुसार षष्ठी के रात में अर्घ्य देने के उपरांत एक विशेष अनुष्ठान करते हैं जिसे कोसी भरना या छठ माता की गोद भरना भी कहते हैं, जिसमें आँगन के एक हिस्से को गाय के गोबर से लीपकर रंगोली बनाकर ईख का

मंडप तथा मिट्टी का हाथी जिसके चारों तरफ दिया तथा हाथी की पीठ पर नैवैद्य तथा फल से भरी हुई मिट्टी की हांडी और मंडप के ऊपर पोटली में चावल बांधा जाता है. सप्तमी को अर्घ्य देने से पहले कोसी का विसर्जन किया जाता है. कई परिवार नदी या सरोवर किनारे ही कोसी भरते हैं.

ऐसी मान्यता है कि इस पर्व को एक बार शुरु करने के पश्चात छोड़ा नहीं जाता है. अतः जिस परिवार के सदस्य स्वयं इसे नहीं करते वे अपने इष्ट मित्रों एवं शुभचिंतकों को अपने बदले इस पर्व को सम्पन्न करने का अनुरोध करते हैं.

ऐसा माना गया है कि सूर्यपूजा से कई असाध्य रोगों से मुक्ति मिलती है तथा संतति (संतान प्राप्ति) होती है. सूर्य का प्रकाश रोगों को हरता है तथा निरोगी काया प्रदान करता है. यह पर्व, सूर्य की किरणों से सुख और स्वास्थ्य प्राप्त करने का है. शास्त्रों में वर्णित है कि मनुपुत्र राजा प्रियव्रत को इसी व्रत के प्रभाव से कुष्ठ रोग से मुक्ति मिली थी एवं यह कथा प्रचलित है कि भगवान श्री कृष्ण की आठवीं पत्नी जाम्बवती से उत्पन्न पुत्र साम्ब अपनी पत्नी के साथ सुबह की बेला में स्नान कर विहार कर रहे थे तभी गंगाचार्य ऋषि की नजर उन दोनों पर पड़ गयी. यह देख ऋषि आगबबूला हो गए और साम्ब को कुष्ठ रोग से पीड़ित होने का श्राप दे दिया. तब नारद मुनि ने श्राप से मुक्ति हेतु 12 स्थानों पर सूर्य मंदिर की स्थापना कर सूर्योपासना का उपाय बताया. तत्पश्चात साम्ब ने 12 माह में 12 जगहों पर सूर्य मंदिर और उससे सटे तालाबों का निर्माण किया था. वह स्थान हैं– देवार्क, पुण्यार्क, उलार्क, पंडार्क, कोणार्क, अंजार्क, लोलार्क, वेदार्क, मार्कण्ड्यार्क, दर्शनार्क, बालार्क, और चाणार्क.

ब्रह्मा पुराण के अनुसार सूर्य की एक दिन की पूजा सौ यज्ञों के अनुष्ठान से बढ़कर है. श्रीमद् भगवत् गीता में श्रीकृष्ण भगवान ने अर्जुन से ऋग्वेद का उदाहरण देते हुए कहा है कि सूर्य का अलग कोई अस्तित्व नहीं है. वह उदय बेला में सृष्टि के सृजनकर्ता ब्रह्मा, मध्यकाल में संहारकर्ता महेश और संध्याकाल में पालनकर्ता विष्णु का रूप हैं. अतः आदित्य दर्शन मेरे दर्शन के समान है. सूर्य के प्रखर अस्तित्व, निर्विवाद रूप से ही सभी प्राणियों का जीवन स्रोत है. यही कारण है कि वह प्रतिदिन अपने विराट स्वरूप का दर्शन देते हैं.

कुछ लोगों का मानना है कि चूंकि भारतीय लोक संस्कृति मूलतः कृषि पर आधारित है, अतः कार्तिक माह में खरीफ फसल तथा चैत्र मास में रबी की फसल तैयार होने के नवान्न से बने अन्य मौसमी खाद्य पदार्थ को समर्पित करने के पीछे अच्छी उपज के लिए प्रकृति को धन्यवाद देने की भावना छठ व्रत में परोक्ष रूप से रहती है.

छठ व्रत में प्रत्यक्ष रूप से सूर्य के प्राकृतिक रूप की पूजा के साथ ही सात घोड़ों पर सवार उनके मानवीकृत रूप की भी पूजा होती है. कुछ मान्यताओं के अनुसार ये सात घोड़े, सप्ताह के सात दिनों को इंगित करते हैं, जो बिना थके जीवन में गति के भाव को दर्शाता है, परंतु ऋग्वेद में कहा गया है कि सूर्य के रथ को ऐतश नामक एक घोड़ा खींचता है.

यह एकमात्र ऐसा पर्व है जिसमें ऐश्वर्य का कोई प्रदर्शन नहीं होता, न ही धन का प्रभाव, न कोई छुआ–छूत, न ही अमीर–गरीब. बस! केवल भगवान के समक्ष, भगवान के करीब. सभी के लिए एक ही नदी का घाट, एक ही सरोवर का किनारा. हर वर्ग की सामूहिकता से मानों समरस समाज की कल्पना जीवंत हो जाती है. इस छठ पर्व में सबको एक समान उपलब्ध हैं ये सूर्यदेवता. कुछ संस्थाओं तथा लोगों द्वारा जरूरतमंदों के बीच पूजन सामग्री का वितरण भी किया जाता है. राजा रंक के भेद को मिटाती यह पूजा सामाजिक समरसता की डोर को और मजबूत करती है. छुआ–छूत व भेदभाव को मिटाती है, क्योंकि सूर्य सबके हैं, हर धर्म, जाति, संप्रदाय, भाषा, क्षेत्र, देश के.

जहां कन्या भ्रूण हत्या आज सामाजिक समस्या बनी हुई है, वहीं इस पर्व में लोकगीतों के माध्यम से हम बेटी की चाहत सूर्यदेव से इस प्रकार करते हैं, जो आज की कुंठित सोच पर प्रहार है:–

रुनकी झूनकी बेटी मांगिला,
पढल पंडितवा दामाद हे छठी मैया, दर्शन दे द आपन...

आम तौर पर यह अवधारणा बनी हुई है कि उगते सूर्य को सभी लोग प्रणाम करते हैं, परंतु यह पर्व उस अवधारणा के विरूद्ध खड़ा है. यहाँ प्रथम अर्घ्य अवसान बेला पर ही दिया जाता है एवं दूसरा अर्घ्य सूर्योदय के समय. पहले, संध्या अर्घ्य हमें अपनी जड़ों से जुड़ने की सीख देता है. यह बताता है कि हमारे बुजुर्ग ही हमारी जड़ है जिनकी अवहेलना न करें बल्कि उन्हें प्रथम स्थान दें. कुछ धर्मग्रंथों में यह बताया गया है कि सूर्य शक्ति का मुख्य स्त्रोत उनकी पत्नी उषा एवं प्रत्यूषा है. छठ में सूर्य के साथ इन दोनों शक्तियों की संयुक्त आराधना होती है. प्रातःकाल में सूर्य की पहली किरण (उषा) और सांय काल में अंतिम किरण (प्रत्यूषा) को अर्घ्य देकर दोनों को नमन किया जाता है. साथ ही अस्त एवं उदय होते सूर्य को अर्घ्य देने का अर्थ है कि किसी के साथ हम समभाव से उत्कर्ष व अपकर्ष के साथ बने रहते हैं.

छठ के समय, विशेषकर बिहार की राजधानी पटना की छटा अनुपम होती है. सूर्यपूजा छठ की शुभ बेला पर पटना में गंगा किनारे जन–सैलाब का उमड़ना इस पर्व की सनातन आस्था को पुष्ट करता है. सूर्योपासना का एक लोकप्रिय गीत:–

"पटना के घाट पे हमहू अरगिया देवई हे छठी मैया,
हम न जाईब दुसर घाट देखब हे छठी मैया ..."

इस लोकगीत में व्रती के भक्ति हठ को दर्शाया गया है कि सूर्य को व्रती द्वारा अर्घ्य तो दिया जायगा पर वह घाट पटना का गंगा घाट ही होना चाहिये.

अर्घ्यदान या जलांजलि अर्थात् जल चढ़ाना, मात्र कर्मकांड नहीं वरन वैज्ञानिक क्रियाएं भी हैं. जल चढ़ाते समय तांबे के लोटे के किनारे पर चमकते सूर्य बिंब पर दृष्टि रखने से आंखों की ज्योति बढ़ती है. सूर्य नमस्कार के लाभ को योग द्वारा भी सिद्ध किया जा चुका है.

छठ में घर के अलावे यथाशक्ति स्वेच्छा से लोग नदी व सरोवर जाने वाले रास्ते की पूरी श्रद्धा से मिलकर सफाई करते हैं, ताकि नंगे पाँव नदी व सरोवर जाते समय व्रती को कोई कष्ट न हो. साफ–सफाई में सभी वर्णो व धर्मो के लोगों, सरकारी व सामाजिक संस्थाओं का भरपूर सहयोग रहता है. इस दौरान शुद्धता व सफाई का आलम ऐसा होता है कि मानो स्वच्छ भारत की कल्पना साकार हो उठी हो.

आधुनिक युग में लोक आस्था को समेटे यह पर्व अपनी पहचान तथा पवित्रता के लिए जगत प्रसिद्ध हो गया है. पूरे वर्ष इस पर्व के आगमन का इंतजार होता है. पूरे देश से बिहारवासी अपने पुश्तैनी घर पर पहुंचकर इस पर्व को सपरिवार मनाने का प्रयास करते हैं, हालांकि अब यह पर्व पूरे देश में मनाया जाने लगा है.

विवेक कुमार
मछुआटोली, पटना

Moulding Thermocol his way

Nilesh V. Joshi

Come September and it is the time for **Lord Ganesha Festival** ! This festival of the patron deity of the state is celebrated with great fervour and enthusiasm all over India. Big pandals with huge adorning sets for the "Bappa", loud music are the benchmark of today's modern Ganesh festival, especially in metros like Mumbai, Pune, et al. Friends, one of our colleagues challenges his imagination and patience to carve out very charming decorations out of thermocol pieces - be it a small swirling decorated wheel placed behind the Lord, an umbrella or a special type of lamp "Laman Diva" or even the replica of Palitana Jain Temple. Let me introduce you all to Shri Nilesh V. Joshi from Overseas Branch, Mumbai. Born and brought up in the lower middle class family, Nilesh fought against all odds since childhood to achieve a good recognition in the art world now. Joining the Bank as sub-staff in 1987, he was promoted as CTO in 2012. He was baptised into the faith of art during his early school days, thanks to his ardent love for the art and strong determination. Even though no one else in his family is related to this field, all his friends and family members always stood by his side and encouraged him. They are his true advisors, critics and PR team. This humble fellow takes life the way it comes and owes his success to Lord Ganesha. He is also very thankful to the Bank for providing avenues and support to nurture his art. In this candid interview, he describes in detail about his artistic passion.

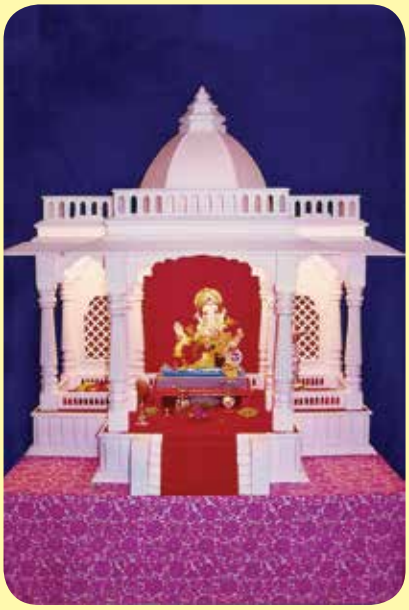

≈ For the very first time, who introduced you to this field?

During my childhood days, I used to observe one Shri Dasharath Panchal who used to decorate the pandal of the local Sarvajanik Ganeshotsav Mandal. Sometime, I also used to assist him. Afterwards I used to imitate him and give a try to cut out artistic images from the remainder thermocol pieces. It is true that 'practice makes a man perfect'. So slowly and steadily I honed the knack of cutting thermocol sheets to craft out pieces with delicate designs.

≈ When did you try to make the decoration for Lord Ganesha's idol for the first time on your own? How was it received in your locality?

When I was 12 years old, I made my first attempt to craft a decorative piece for our own Ganapati idol. I bought all the raw material like thermocol sheets, pins, fevicol etc. from my piggy bank's savings (My father used to give me some money which I used to store safely in my piggy). Though small yet attractive, everybody including our neighbours praised my efforts and encouraged me by inviting me to prepare decorations for their idols then onwards. My friends, especially Shri Amit Jain assisted me financially during these endeavours. Truly speaking, with their help only I started preparing these decorations on a large scale since 2001.

≈ When did you venture into your first major project of preparing decoration for Sarvajanik Ganeshotsav Mandal?

For the first time I gave a try preparing decoration for the Sarvajanik Ganeshotsav Mandal, Titwala. Here I chiselled out the traditional lamp "Laman Diva" from thermocol sheets and this earned me my very first award. I bagged prizes from the 3 different institutions.

≈ Tell us about the process for creating decorations for big pandals of Sarvajanik Mandals.

The committee members of these mandals approach me for carrying out decorations of their

pandal in advance. During meetings, we discuss and choose a suitable subject for the said decoration. The chosen subject highlights some social problem or current events. We require at least 10-12 days for preparing a jumbo decoration of 20x20 ft. We use strong wooden bottom strips/base to give adequate support for our structure so that it can stand during the entire period of the festival. For the entire set, we require thermocol sheets, coloured papers, fevicol glue and lots of pins, nails - this costs around 25,000/- to 30,000/- per set. The entire cost of the project is borne by the Mandal - some amount they give us as advance whiles the rest at the end. Here, my involvement is not to mint money but to suffice my inner urge. Our herculean task begins with sticking together thermocol sheets with fevicol according to height of the final structure. Then begins the designing - the design to be carved out is first traced/made on the long sheets of paper. Finally comes the main meticulous job of carving out the sheets minutely and artistically leaving behind the design. Then we paste coloured foil or paper from inside to give embossing effect to the carved out design. Finally the whole set is painted giving appropriate shadings. It is impossible to work alone on such a big project, hence Shri Rajesh Bapat and Shri Hrishikesh Khambekar assist me. Generally I take PL of 15 days before the festival and work overnight to complete the set. Once the festival is over, the decorated set is carefully dismantled so that it can be reused for other functions too.

≈ How many big projects have you handled till date? Amongst these, which one is your favourite?

Till date, I have completed around 30-35 big projects of decorating pandals for sarvajanik mandals. The project where we had displayed the original native house of Late Lokmanya Tilak at Chikhali is my favourite one. So also the replica of Palitana Jain Temples located on the Shatrunjay Hills.

≈ Tell us about your experience at the "Dream Mumbai Marathon Run" organized every year by Standard Chartered Bank.

Every year, our Bank's team participates in this Dream Run.

Apart from active participation in the run, my motto is to give out social message to the masses for the betterment of the society. This is also one of the ways of publicity for the Bank. One such message that riveted everyone's eyes was "Save a Girl Child" and I was specially praised by our ED sir.

≈ What's new in the hand?

Since I learnt that thermocol is one of the major pollutants, now I am trying out ecofriendly decorations wherein I have substituted thermocol by paper, be it hardboard, cardboard, etc. So saving our environment, causing less pollution is my top priority. There is a good response and people now demand eco-friendly decorations.

≈ Your hobbies?

I love doing science projects/working models for school children. Every year I am doing at least 20-25 such projects, out of which 5-6 bag the prizes. Though I prepare them for school students, I explain to them every detail thoroughly before handing over the project. Thus, next time these students also give a try at making one on their own. I love playing cricket and I represent our Bank. I also love buying branded apparels and quality perfume for me and my family.

≈ Your dreams?

Due to weaker financial position during my childhood, I could not join any art college or get training in this field; otherwise I could have produced better artwork. My ardent dream is to work under famous artists like Shri Nitin Chandra Desai.

'Union Dhara' wishes him all the Best in his future decorative endeavours. More power to his creative mind!

Supriya Nadkarni
Union Dhara, C.O.

CROSSWORD

Across

2. Two valuation reports from two independent valuers are required for U. Mortgage loan above ---- Lakh (10)
3. Housing loan product in which amount repaid can be withdrawn with certain stipulations is----------(9)
5. In the case of U. Home loan to NRIs, personal guarantee of a ---------- individual is a mandatory requirement (8)
7. Maximum quantum of loan under Union Home for new construction/ Purchase is---------- (7)
9. Maximum repayment period in the case of U. Miles loan for new four wheelers is --------- years (5)
10. Margin for old four wheeler under U. Miles is ----------percentage of the valuation of the vehicle (5)
13. For availing Mortgage Plus, the home loan borrower should have minimum --------months of satisfactory operation in his/her account (10)
14. Maximum moratorium period that can be given under U. Mortgage scheme is ----------months (4)
16. Under U. Miles age of second hand vehicle should not exceed -------years (5)
19. Maximum quantum of loan that can be sanctioned to Agriculturists under U. Mortgage is--------lakh (7)
21. Personal loan to a housing loan borrowers can be sanctioned by whom? (13)
22. Loan for purchase and repairs/ renovation of residential unit not older than ------- years, can be considered at Branch level (10)
25. The present outstanding in housing loan plus the proposed loan under Mortgage Plus should not exceed ---------- Percentage of the value of the property (8)
27. U. Miles loan for new Four-wheelers is sanctioned under---------- rate (8)
29. The SUDLIFE scheme that covers the life of our Retail loan borrowers except educational loan borrowers is ---- (12)

Down

1. The repayment method in which a lower EMI is remitted from the beginning and a lump sum at the end is ----------Repayment (7)
2. Minimum eligible age for availing a U. Home loan is --------years (9)
4. Maximum loan under Union Miles for second hand four wheeler is ---------- Lakh (6)
6. The maximum area of plot that can be purchased from private individuals in composite proposals under U. Home ---------- sq.ft (12)
8. Maximum loan Quantum in Mortgage plus is----------Lakh (11)
11. Minimum CIBIL Score for sanctioning Retail loans at Branch level is---------- (12)
12. One time lumpsum payment made into an account is called-------- (6)
15. In case of composite proposals under U. Home scheme, the minimum constructed area should be -----% of the area of plot (6)
17. Maximum age within which a home loan is to be repaid is ---------- years (7)
18. Margin for housing loans above 200 Lakh is ---------- percentage (10)
20. ---------- can be co-applicants in a housing loan only when they jointly own the property (8)
23. Home loan to persons with no standard income proof in S. Urban and Rural areas (9)
24. Maximum quantum of loan under U. Miles for new two-wheelers is---------- Lakh (3)
26. Apart from U. Home, in which retail loan product, processing charge is waived upto 31.03.2017? (10)
28. ---------- properties are not acceptable as security under U. Mortgage (5)

I. K. Venugopalan
Staff College, Bangalore

Accounts Starting With 66666

Some Moment of Truths

- The customer made a call to the Branch to ascertain the position of the draft he had sent along with the account opening form. On hearing the account number which starts with 66666, the Branch staff advised the customer that someone had cheated him in Dubai since the branch did not have such account. The shock and agony of the new NRI customer as well as the embarrassment of our Overseas Relationship Manager (ORM) who mobilized this account are understandable.
- A Customer having his accounts starting with 66666 approached a branch for issuance of cheque book has been replied by the branch officials " Aapka Khata Dubai me khula hai cheque book wahi milega".

(The examples given above are with malice towards none. These feedbacks are given by the customers and are cited here to highlight the importance of imparting product knowledge to staff members. Knowledge is power and product knowledge will enable each staff to respond to customer's queries appropriately).

Background

Union Bank of India imprinted its first footprint in Gulf Region by establishing a Representative Office in Abu Dhabi, capital of UAE in December 2007. The purpose of setting up the office was primarily to concentrate on the UAE market and to build a strong NRI customer base for our domestic branches by way of providing information on our products and services to the Indian Diasporas living in UAE.

The Product

Our Bank has an excellent product in the form of Ready Kit which is provided to NRIs in GCC(Gulf Cooperation Council) locations while acquiring their S.B. accounts.

The kit contains Multi city cheque book, EMV chip enabled international debit card, PIN and an information booklet. The kit has a pre-printed account number prefixing with 66666299 (NRE Accounts) under the scheme code SBNOV & 66666288(NRO Accounts) under the scheme Code SBNOR.

Since the account number does not start with Branch SOL ID which is the standard practice when the account is opened in branches in India, many NRI customers and their family members have provided the feedback detailing the problems they encountered in the concerned branch when they went for transactions. In few cases, because the account number starts with 66666, the customer gets the reply that the account does not belong to the Branch. He is advised to make further query with the official where the account was opened. It is in this context, it is imperative to bring out the salient features of the product (i.e. account number starting with 66666) and also the system which is in place for opening such accounts.

The Marketing Strategy and Process Flow

- Presently 7 ORMs posted in different locations are approaching to the different Exchange House branches where potential customers are visiting for remitting money to India for savings and family maintenance. Apart from this they are visiting many other points of sales and attending other valued clients on call.
- The account opening forms completed in all respect along with relevant enclosures are dispatched to Centralized Account opening Cell (CAOC) attached with DFB & IBD vertical of Central Office, Mumbai, where in after scanning of all the documents accounts are activated in finacle in the Sol Id of NRI Mumbai and later transferred to the respective destination branches as selected by the customer. Then forms are physically dispatched to the concerned branches in India.

Advantages to the destination Branch

- The branch is thus getting a new NRI customer without any effort. The deposit accrued in the Saving Bank account is counted in the deposit of destination branch after transfer of the account by the Centralized Account Opening Cell (CAOC), Mumbai.
- With good customer service, the destination branches are likely to get more number of NRI accounts and deposits (low cost S.B. and Fixed deposits).

The Perception

The ORMs based in Dubai, Abu Dhabi and Sharjah are mostly acquiring low valued blue collared employee's accounts and there aren't any HNI's accounts. Many of the branches are ignorant of the future potential of such accounts.

The Reality

As on March-2016 approx 2.30 lacs such accounts are there with an outstanding balance of INR 942.71 Crores, averaging INR 40987/- per account and total of INR 1052.80 Crores of term deposit.

Out of 2.30 Lacs accounts approx 20000 accounts carries balance more than INR 1.00 lacs/accounts primarily in Samastipur, Gorakhpur, Kozikode, Azamgarh and Hyderabad Regions. Out of 15,696 accounts acquired in F.Y. 2015-16, 5051 accounts are having balance > INR 10,000/- each, 1121 accounts are having balance more than INR 1.00 lac each and

41 accounts more than INR 10.00 Lacs each.

The Role of Branches in post-sales service where such accounts are transferred

- Branches need to be empathic to the requirements of such customers when they visit the branch when they are in India on short vacations.
- Branches should entertain services related e-mails sent from our officcial e-mail IDs ubi.uae@unionbankofindia.com & abudhabi.uae@unionbankofindia.com or from the e-mail IDs of our ORMs updated in our corporate site www.unionbankofindia.co.in under international > Network > Overseas Branches > Abu Dhabi Representative Office. Any request sent from any other e-mail id MUST NOT be entertained.

Types of Services Requirement in such accounts

Balance Enquiry:- Our bank is providing miss call facility and m-passbook facility for balance enquiry. Customers visiting the branch should be educated and convinced/motivated to use these products.

Replacement of ATMs:- Expired and damaged ATM cards in NRE/NRO accounts are replaced by the Representative Office and ORMs upon request from the customers. The cards are activated through CAOC in Mumbai. Whenever a customer visits the base branch in India for replacement of expired/ damaged ATM card, a new card should be issued to the customer by the branch and the same should be activated as per normal branch procedure.

Issuance of Cheque Book:- When the customer approaches the base branch for issuence of a new cheque book, the request should be handled on priority basis.

Abu Dhabi Representative Office and ORMs also send customer's request for issuence of new cheque book to concerned branch by e-mail. These requests should also be handled on priority basis. Upon issuence, these cheque books should be sent to the NRI Branch, Mumbai other than the cases where it is categorically mentioned to deliver at Customer's residential address. From NRI Branch, Mumbai, these cheque books will be sent to Abu Dhabi Representative Office for onward delivery to the customer.

Activation of Dormant/Inactive Accounts:- This service can only be completed at branch level. Either customer himself approaches with relevant KYC details or they approach Abu Dhabi Rep Office/ORM for the same. Scanned copy of complete set of dormant account activation request along with duly attested KYC documents are sent to the branches by e-mail. These requests should be acted upon promptly and vigilantly.

Services offered by Representative office and ORMs Other than the 66666 accounts :-

I. Undertaking due diligence and documentation part of any retail loans originated by any of the branches in India.

II. Follow up for any loan accounts under stress category in India as and when referred by you.

III. Entertaining all types of services request for domestic as well as NRE/NRO accounts sourced from the India.

IV. Updating all the NRIs about monthly updates of FCNR accounts and changes in NRE/NRO Term Deposits rates from time to time.

V. Other types of financial advising for investment in third party products.

Mukesh Sharma
Abu Dhabi

Puppet Shows- The Union Bank way

After the bank nationalization in July 1969, the Lead Bank Scheme was conceived with the objective of opening more and more branches in the rural unbanked areas. Profits were not priority, but reaching out to the masses to provide financial help was. Our Bank was allotted the most backward districts of eastern UP - Varanasi, Ghazipur, Jaunpur & Azamgarh.

The average literacy rate in these districts was around 6-7%. The task of creating awareness about banking - both imbibing savings habit and also encouraging self employed to avail of loan facility - was an onerous one. The bank evolved a multi-pronged strategy of utilizing non-traditional media, such as puppetry, using mobile publicity vans with audio-visual and public address system and a generator. Thanks to Shri S. N. Surkund, the then AGM (Publicity) of our Bank for such an innovative idea.

A well experienced team of puppeteers from Rajasthan was hired and given some training at Indian Institute of Mass Communications. The bank staged more than 1500 puppet shows in these 4 districts in 2 years. Our Bank made a film based on puppet show and it was shown along with a full length feature film through rural publicity vans. A documentary film 'Madadgaar' (in Hindi) was also produced with lots of entertainment and message of bank, particularly to promote self employment. The film was dubbed in over 10 regional languages and shown through mobile rural publicity vans in rural areas served by Union Bank branches.

The advantages of liquidity when the money was kept in the bank - it is not only safe, it grows with interest and can always be withdrawn for any purpose was highlighted through these puppet shows. The bank was complimented by the then finance minister, Shri Y.B. Chavan, who also instructed other nationalized banks to adopt this strategy. This was the most effective rural publicity campaign implemented during the early 1970s by Union Bank.

Supriya Nadkarni
Union Dhara

दिनांक 27.06.2016 को बैंक की 14वीं वार्षिक सामान्य बैठक का आयोजन किया गया. बैठक में मंच पर मध्य में अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री अरुण तिवारी, उनके दोनों ओर बैंक के कार्यपालक निदेशक क्रमश: श्री राकेश सेठी एवं श्री विनोद कथूरिया, तथा अन्य कार्यपालकगण.

मार्च 2016 को समाप्त तिमाही के वित्तीय परिणामों की घोषणा करते हुये बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री अरुण तिवारी. साथ में हैं कार्यपालक निदेशक श्री राकेश सेठी एवं श्री विनोद कथूरिया.

दिनांक 01.06.2016 को अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री अरुण तिवारी ने केंद्रीय लेखापरीक्षा एवं निरीक्षण विभाग, मुंबई के नये परिसर का शुभारंभ किया. इस अवसर पर श्री तिवारी के साथ कार्यपालक निदेशक श्री विनोद कथूरिया, मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री अतुल कुमार, सी ए आई डी के महाप्रबंधक श्री आर. रामनाथन तथा अन्य कार्यपालकगण उपस्थित थे.

यूनियन बैंक द्वारा महाराष्ट्र सरकार हेतु ''इलेक्ट्रानिक सिक्योर्ड बैंक ट्रेज़री रिसीट'' की सुविधा मई 2016 में प्रारंभ की गई. कार्यपालक निदेशक श्री विनोद कथूरिया ने राज्य सरकार के प्रतिनिधियों श्री दिनेश कुमार जैन, डॉ. के.एच.गोविंदराज तथा डॉ एन.रामास्वामी को इस सुविधा संबंधी दस्तावेज़ सौंपे.

योग दिवस दिनांक 21.06.2016 के अवसर पर केंद्रीय कार्यालय, मुंबई के योग कक्ष में योगासन करते हुये अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री अरुण तिवारी एवं कार्यपालक निदेशक श्री राकेश सेठी. इस अवसर पर कार्यालय के अन्य स्टाफ सदस्यों ने भी योगाभ्यास किया.

कॉरपोरेट सोशल रिस्पांसिबिलिटी (CSR)

On the occasion of distribution of e-cycles at Varanasi on 01st May 2016 by honorable Prime Minister Sir, Sri Narendra Modi. In the photo PM Sir is talking with our Chairman Sir, Sri Bhola Prasad.

यूनियन बैंक सोशल फाउंडेशन द्वारा राजकीय वृद्ध एवं अशक्त गृह (महिला), दुर्गाकुंड, वाराणसी का जीर्णोद्धार कराया गया. जीर्णोद्धार किए गए परिसर का लोकार्पण करते हुए श्री अरुण तिवारी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक साथ में श्री विशाख जी, (आईएएस), सीडीओ, वाराणसी श्री आर. के. चौधरी, प्रमुख उद्यमी, श्री ए.के. दीक्षित, महाप्रबंधक, वाराणसी अंचल और श्री योगेंद्र सिंह, क्षेत्र प्रमुख, वाराणसी.

कार्यपालक निदेशक आदरणीय श्री विनोद कथूरिया जी के अहमदाबाद आगमन पर हमारे क्षेत्रीय कार्यालय अहमदाबाद द्वारा प्रधानमंत्री मुद्रा योजना के अंतर्गत एलसीवी (LCV) फाइनेंस कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें आदरणीय कार्यपालक निदेशक-श्री विनोद कथूरिया, क्षेत्र महाप्रबंधक अहमदाबाद-श्री एस. के. सिंह एवं क्षेत्र प्रमुख अहमदाबाद-श्री अशोक कुमार सिरोही द्वारा ऋण लाभार्थियों को ऑटो की चाभियां बाँटी गई.

हमारे क्षेत्रीय कार्यालय अहमदाबाद द्वारा मुद्रा योजना के तहत एलसीवी ऑटो फाइनान्स के अंतर्गत (बजाज के साथ टाई अप) ऋण लाभार्थियों को अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय आदरणीय श्री अरुण तिवारी के अहमदाबाद आगमन पर आयोजित कार्यक्रम में दिनांक-30.06.2016 को श्री तिवारी के हाथों ऑटो की चाभियां बाँटी गईं एवं इस अवसर पर उन्होंने हरी झंडी दिखाकर सभी ऑटो रवाना किए और प्रेस को संबोधित करते हुए मुद्रा के अंतर्गत एलसीवी फाइनान्स के महत्व को रेखांकित किया. इस अवसर पर महाप्रबंधक- श्री एस. के. सिंह, महाप्रबंधक- श्री के. पी. आचार्य एवं अन्य गणमान्यों की उपस्थिति रही.

विश्व पर्यावरण दिवस 05 जून 2016 को वाराणसी में जनमुख हिन्दी दैनिक द्वारा स्थानीय शहीद उद्यान, सिगरा में पर्यावरण जागरूकता और पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें लोक निर्माण विभाग, सिचाई एवं जल संसाधन राज्य मंत्री श्री सुरेन्द्र पटेल मुख्य अतिथि थे उसी कार्यक्रम में पर्यावरण जागरूकता पर संबोधित करते हुए श्री लाल सिंह, अंचल प्रमुख वाराणसी, मंच में विराजमान श्री सुरेन्द्र सिंह पटेल, लोक निर्माण विभाग, सिचाई एवं जल संसाधन राज्य मंत्री उ. प्र. सरकार, श्री आर. के. चौधरी, अध्यक्ष, वाराणसी विकास समिति एवं श्री उपेंद्र अग्रवाल, मण्डल प्रमुख, पंजाब नेशनल बैंक वाराणसी

कॉरपोरेट सोशल रिस्पांसिबिलिटी (CSR)

राजकोट जिले में दिनांक 08.06.2016 को सभी बैंकों द्वारा वित्तीय साक्षरता कैंप का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि श्री वैंकेया नायडू (केन्द्रीय शहरी विकास मंत्री), श्री जयंत सिन्हा (राज्य वित्त मंत्री), श्री अश्विनी कुमार (अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक देना बैंक), श्री इन्द्र पाल यादव (यूनियन बैंक राजकोट क्षे.प्र.) एवं बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे. कैंप में पीएमजेडीवाय, सामाजिक सुरक्षा योजना एवं वित्तीय साक्षरता के बारे में बताकर प्रधानमंत्री मुद्रा योजना के लाभार्थियों को यूनियन बैंक की ओर से चेक प्रदान किए गए.

क्षे. का. अहमदाबाद द्वारा मुद्रा योजना के तहत एलसीवी ऑटो फाइनान्स के अंतर्गत लाभार्थियों को अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री अरुण तिवारी द्वारा ऑटो की चाभियां बाँटी गईं एवं इस अवसर पर उन्होंने हरी झंडी दिखाकर सभी ऑटो रवाना किए. इस अवसर पर महाप्रबंधक – श्री एस. के. सिंह, महाप्रबंधक – श्री के. पी. आचार्य एवं अन्य गणमान्यों की उपस्थिति रही.

1. The organization set up in India on the lines of the one existing in U.K to look after the customer service issues Is :
a) BCSBI b) COPRA c) CDRF d) Banking Ombudsman e) CCCO

2. Under Pradhan Mantri Jeevan Jyothi Bima Yojana scheme, the life insurance cover is for how many years?
a) 2 b) 1 c) 3 d) 4 e) 5

3. The record of economic transactions between the residents of a country and the rest of the world in a particular period is called ----------
a) Balance of Trade b) Trade settlements c) Gross National Product d) Balance of Payments e) Trade Surplus

4. The agency which is involved in collecting, analyzing and disseminating information related to dubious financial transactions in the country is----------
a) Financial Action Task Force b) Economic Intelligence Agency
c) Financial Intelligence Unit d) Financial Stability Board e) Fraud Monitoring Cell

5. FCNR (Foreign Currency Non-Resident Deposit Account) deposits can be accepted for a minimum period of ---------
a) 6 months b) One Year c) 15 Days d) Three Year e) Three Months

6. Under which section of the Negotiable Instruments Act, a Paying Banker gets protection in respect of material alteration which was not visible with a naked eye?
a) Sec.88 of the N I Act b) Sec 90 of the N I Act c) Sec. 89 of the N I Act d) Sec. 67 of the N I Act e) Sec 91 of the NI Act

7. Indian Currency Rupee is in circulation in two more countries. One is Nepal and the other is----------
a) Bangladesh b) Burma c) Bhutan d) Sri Lanka e) Afghanistan

8. What is the limitation period, when Government wants to take legal action for recovery of its dues?
a) 12 Yrs b) No limitation period c) 30 Yrs d) 15 Yrs e) 3 Yrs

9. What is the date for final implementation of Basel III ?
a) 31.03.2018 b) 31.03.2019 c) 31.03.2022 d) 31.03.2017 e) 31.03.2020

10. What is the % of provision on standard Assets in case of Direct Agriculture and Direct MS Advances?
a) 0.40 % of outstanding b) 0.50% of outstanding
c) 0.75% of outstanding d) 1% of outstanding e) 0.25% of outstanding

11. When banks extend loans against Life Insurance policies, the charge created is :
a) Pledge b) Hypothecation c) Lien d) Assignment e) Mortgage

12. As per RBI guidelines no Bank can issue a DD without A/C payee crossing for ₹----- ---------- and above.
a) ₹10000/- b) ₹20000/- c) ₹50000/- d) No such Guidelines
e) ₹25000/-

13. The value of a gift that can be given by a Bank to its customers cannot exceed ₹----------
a) ₹500/- b) ₹100/- c) ₹250/- d) ₹1000/-
e) depends on the value of the customer to the bank

14. Hypothecation is defined in which Act ?
a) Indian Contract Act b) Banking Regulation act
c) SARFAESI Act d) RBI Act e) Indian Stamp Act

15. ATM failed transactions are to be resolved within a maximum period of ----------
a) 10 Working days b) 7 working days c) 3 Working days d) Within a fortnight e) 12 working days

16. TDS is deducted in a deposit account, if the interest in a year exceeds ₹----------
a) 12000/- b) 10000/- c) 15000/ d) 20000/- e) 50000/-

17. SB/CD accounts are to be treated as dormant account if there are no customer Induced transactions for ---------- months
a) 12 b) 24 c) 36 d) 18 e) 60

18. Under Consumer Protection Act, District Forum has a power to deal with cases up to ₹-------- Lakh
a)10 b) 20 c) 30 d) 50 e) 100

19. Under Sukanya Samriddhi yojana the maximum amount that can be deposited in a year in the account is :
a) ₹1 Lakh b) ₹1.50 Lakh c) ₹2.50 Lakh d) ₹50000/- e) ₹No limit

20. What is P 2 P Lending ?
a) Person 2 Person Lending b) Peer 2 Peer Lending
c) People 2 People Lending d) People 2 Person Lending
e) None of the above

I. K. Venugopalan
Staff College, Bangalore

30.07.2016 को अहमदाबाद में आयोजित कार्यक्रम में आदरणीय अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री अरुण तिवारी, महा प्रबंधक श्री एस.के. सिंह, उप महाप्रबंधक श्री के.पी. आचार्य. साथ में हैं यूनि–वन की प्रेसीडेंट श्रीमती नम्रता तिवारी एवं श्रीमती सुनीता सिंह, पूर्व सचिव यूनि–वन.

नेल्लूर क्षेत्र में दिनांक 03.06.2016 को आयोजित लघु वाणिज्य गाड़ी कैंप में बैंक के अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक श्री अरुण तिवारी और साथ में श्री के. चंद्रशेखर, महाप्रबन्धक , क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय, बेंगलूरु व श्री राम प्रसाद मिश्रा, क्षेत्र प्रमुख, क्षेत्रीय कार्यालय नेल्लूर.

नेल्लूर क्षेत्र में दिनांक 03.06.2016 को वित्तीय वर्ष 2016–17 की शाखा प्रबन्धकों की बैठक में उपस्थित स्टाफ सदस्यों को संबोधित करते हुए बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री अरुण तिवारी.

नेल्लूर क्षेत्र के तिरुपति में दिनांक 03.06.2016 को स्वयं सहायता समूह द्वारा बनाई गई वस्तुओं की प्रदर्शनी में उपस्थित बैंक के अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक श्री अरुण तिवारी.

कोलकाता स्थित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति(बैंक) कोलकाता के अध्यक्ष एवं सदस्यों के साथ संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उपसमिति के विचार–विमर्श कार्यक्रम में उपस्थित श्री सी. आर. पात्रा, उप महाप्रबंधक, क्षे. का. कोलकाता.

दिनांक 30.04.2016 को गृह मंत्रालय द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, आगरा का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया गया, जिसमें सुश्री प्रतिभा मलिक, उप निदेशक (कार्यान्वयन) उत्तर क्षेत्र, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग; श्री प्रकाश आर. गुप्ता, क्षेत्र प्रमुख, श्री कृष्ण चन्द्र सेठ माझी, उप क्षेत्र प्रमुख, श्री जी. आर. बागरा, मु. प्र. तथा राजभाषा प्रभारी श्रीमती सोनिया चौधरी उपस्थित थे.

दिनांक 06.05.2016 को क्षे. का., भोपाल के अंतर्गत जिला न्यायालय भोपाल शाखा का निरीक्षण गृह मंत्रालय के अनुसंधान अधिकारी श्री हरीश चौहान द्वारा किया गया . इस अवसर पर श्री बिशन दास, सहायक महाप्रबन्धक, शाखा प्रमुख श्रीमती मीता नेमा एवं सुश्री निधि सोनी, प्रबंधक (राभा) उपस्थित थे. हाल ही में श्री हरीश चौहान की पदोन्नति सहायक निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय के रूप मे हो गयी है.

दिनांक 13 मई 2016 को वाराणसी में शाखा प्रमुखों हेतु निवारक सतर्कता संगोष्ठी का आयोजन किया गया. इस अवसर पर डॉ. टी. एम. भसीन, सतर्कता आयुक्त, भारत सरकार द्वारा शाखा प्रमुखों को संबोधित किया गया. इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. टी. एम. भसीन, सतर्कता आयुक्त के अलावा मंच पर श्री अतुल कुमार, मुख्य सतर्कता अधिकारी, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया एवं श्री लाल सिंह, क्षेत्र महाप्रबंधक, वाराणसी उपस्थित थे.

दिनांक 13 मई 2016 को वाराणसी अंचल की अंचलीय सतर्कता समिति की बैठक की गई थी जिसमें श्री अतुल कुमार, मुख्य सतर्कता अधिकारी, केंद्रीय कार्यालय मुंबई ने सहभागिता की थी. इस अवसर पर श्री अतुल कुमार, मुख्य सतर्कता अधिकारी, केंद्रीय कार्यालय, श्री लाल सिंह, क्षेत्र महाप्रबंधक, वाराणसी अंचल, श्री कल्याण कुमार, उप महाप्रबंधक, सतर्कता विभाग, केंद्रीय कार्यालय, श्री राजन. पी. वायकुल, उप महाप्रबंधक, औद्योगिक संबंध, केंद्रीय कार्यालय एवं श्री उदय डी. अग्नि, सहायक महाप्रबंधक सतर्कता विभाग, केंद्रीय कार्यालय उपस्थित थे.

दिनांक 06.04.2016 को स्टाफ महाविद्यालय बेंगलूरू में अखिल भारतीय गृहपत्रिका संवाददाता सम्मेलन का आयोजन किया गया. सम्मेलन को प्राचार्य स्टाफ महाविद्यालय श्री अतुल कुमार एवं राजभाषा विभाग प्रमुख श्री रामगोपाल सागर (स.म.प्र. राजभाषा) ने संबोधित किया.

नेल्लूर क्षेत्र में आयोजित मुद्रा कैम्प में अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय द्वारा लाभार्थियों को मुद्रा ऋण का संवितरण किया गया.

क्षेत्रीय कार्यालय दिल्ली (उत्तर) के यूनियन बैंक एस.सी./एस.टी. एम्प्लॉईज़ वेलफ़ेयर एसोसिएशन. मुख्य अतिथि श्री आर.के चौधरी, म.प्र., दिल्ली अंचल, श्री एस के डे, उ.म.प्र., दिल्ली (द.एवं उ.) के स्टाफ सदस्य उपस्थित थे.

क्षेत्रीय कार्यालय नागपुर में अंतरर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन दि. 21.06.2016 को किया गया जिसमें सभी स्टाफ सदस्यों ने सहभागिता की.

दिनांक 14.04.2016 को ग्वालियर के यूनियन बैंक एस.सी./एस.टी. एम्प्लॉईज़ वेलफ़ेयर एसोसिएशन द्वारा डॉ. भीमराव अम्बेडकर की 125 वीं जयंती पर अम्बेडकर पार्क फूलबाग में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया. कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजव बासा, सहायक महाप्रबंधक, मुख्य शाखा तथा एसपीए शाखा के मुख्य प्रबन्धक विनय शंकर द्वारा डॉ. भीमराव अम्बेडकर की तस्वीर पर माल्यार्पण एवं दीप प्रैज्वलित किया गया.

दिनांक 04.04.2016 को बेंगलूरू में अखिल भारतीय वार्षिक राजभाषा समीक्षा एवं आयोजना बैठक का आयोजन किया गया जिसमें सभी क्षेत्रों के राजभाषा प्रभारियों ने प्रतिभागिता की. बैठक को महाप्रबंधक, बेंगलूरू के साथ साथ प्राचार्य स्टाफ महाविद्यालय श्री अतुल कुमार एवं राजभाषा विभाग प्रमुख श्री रामगोपाल सागर (स.म.प्र. राजभाषा) ने संबोधित किया.

क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद के नए परिसर का उद्घाटन करते हुए अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री अरुण तिवारी. साथ में महाप्रबंधक श्री एस. के. सिंह, श्री के. पी. आचार्य एवं अहमदाबाद क्षेत्र प्रमुख श्री अशोक कुमार सिरोही एवं अन्य गणमान्य.

दिनांक 06.06.2016 को दिल्ली अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट पर बैंक के नये ए टी एम का उद्घाटन अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री अरुण तिवारी द्वारा किया गया. इस अवसर पर क्षे.म.प्र. दिल्ली श्री ए. के. दीक्षित, क्षे. प्र. दिल्ली(द) श्री एस. के. डे सहित क्षेत्र के अन्य स्टाफ सदस्य भी उपस्थित थे.

इलाहाबाद मुख्य शाखा में यूनियन 24x7 कंफ़र्ट लॉबी का उद्घाटन दिनांक 14.05.2016 को सतर्कता आयुक्त डॉ टी. एम. भसीन द्वारा किया गया. इस अवसर पर क्षेत्र महाप्रबन्धक श्री लाल सिंह भी उपस्थित थे.

On 25.04.2016 E-Lobby of Karnal Main branch under Karnal Region was inaugurated by Executive Director Shri. Rakesh Sethi along with FGM, Delhi Shri R. K. Chaudhary.

मालवा मध्य प्रदेश के विशेष व्यंजन

दाल – बाटी – चूरमा

दाल : सामग्री : तुअर दाल 1 बड़ी कटोरी, लहसुन 4–5 कलियाँ, हींग आवश्यकतानुसार, राई 2 चम्मच, ज़ीरा 2 चम्मच, धनिया पाउडर 1 चम्मच, हल्दी पाउडर 1 चम्मच, मिर्च पाउडर स्वादानुसार, नमक स्वादानुसार, खाने का तेल 1 चम्मच, आमचूर पाउडर स्वादानुसार, गुड़ या शक्कर स्वादानुसार, हरा धनिया बारीक कटा हुआ.

विधि : सबसे पहले तुअर दाल को बनाने से पहले किसी बर्तन में भिंगोकर 2 घंटे के लिए रख लें. फिर प्रेशर कुकर में डालकर आवश्यकतानुसार पानी डालकर 1–2 सीटी तक पकायें. एक कढ़ाई में तेल डालकर उसमें राई, ज़ीरा, लहसुन की कलियाँ बारीक काटकर, धनिया पाउडर, मिर्च पाउडर डालकर भूने तथा भूनने के बाद इसमे उबली हुई दाल डालकर अच्छी तरह चलाएं, उबाल आने पर एक करछी में थोड़ा तेल या घी गर्म कर तथा थोड़ा हींग डालकर, इस मिश्रण को उबली हुई दाल में डालकर तड़का लगाएं और दाल को ढक दें. 5–7 मिनट उबलने पर इसमें गुड़ या शक्कर (स्वादानुसार) डालकर हिलाएँ. 5–10 मिनट पकायें फिर इसे उतार लें. इस पर बारीक कटा धनिया डालकर रखें. खट्टी–मिट्ठी दाल तैयार है.

बाफले

सामग्री : 3 कटोरी गेहूँ का आटा, 2 कटोरी शुद्ध घी, 1 चम्मच खाने का सोडा, 1 चम्मच अजवाइन, 1 चम्मच नमक, 1 चम्मच हल्दी पाउडर.

साथ ही बाफले पकाने के लिए आवश्यकता पड़ेगी गैस तंदूर की .

विधि : आटा, खाने का सोडा और अजवाइन, नमक मिलाकर इसमें 2 बड़े चम्मच शुद्ध घी मोइन के लिए डालकर गूँदे. इस गूँदे हुए आंटे को साफ हल्के कपड़े से ढककर 15 मिनट रख दें. एक भगोने में 1 चम्मच हल्दी पाउडर डालकर उबालें. पूर्व में गूँदे हुए आटे के 6 बराबर हिस्से कर अच्छे से मिलाकर गोले/पेड़े बना लें तथा पेड़े के बीच में हल्के हाथ से दबायें. इस बनाए गए गोले को खौलते पानी में डालें तथा 15 मिनट तक उबालें. जब सब गोले फूल कर ऊपर आ जाएँ तब उन्हें खौलते पानी से निकाल कर एक प्लेट में रख लें. गैस पर तंदूर रख कर गर्म करें तथा उबले हुए पेड़े/गोले तंदूर की जाली पर रख कर उन्हें सेकें. धीमी आँच पर सेंकने के बाद बीच–बीच में बाफलों को पलटते रहें. जब गोले फूल जाएँ तो उंगली से धीरे से दबाकर देखें यदि बाफले पूरी तरह पक गए होंगे तो दबाने पर टूटने लगेंगे. इन्हें साफ कपड़े से पोछकर, शुद्ध घी के कटोरे में डुबोएं दोनों तरफ पर्याप्त घी लगाएं. लीजिए आपके बाफले तैयार हैं.

चूरमे के लड्डू

सामग्री : आटा 2 कप, शुद्ध घी 1 कप, पीसी शक्कर 1 कप, 1 चुटकी नमक, इलायची पाउडर 2 चम्मच, किशमिश आवश्यकतानुसार, मिश्री आवश्यकता अनुसार, पिसे हुए बादाम 1 चम्मच, पिसे हुए काजू 1 चम्मच.

विधि : सर्वप्रथम नमक तथा घी का मोइन बनाकर आटा गूँथे, इस गूँदे आटे के मुट्ठे बना लें. एक कढ़ाई में शुद्ध घी डालकर गर्म कर लें. इसमें इन मुट्ठों को तल लें. ध्यान रखें की आँच धीमी ही रखें. तले हुए मुट्ठों को मिक्सी में पीस लें तथा आटा छन्नी से छान कर चूरमा बना लें. इस चूरमे को धीमी आँच पर 2 चम्मच घी डालकर भून लें. चूरमा भूनने के बाद ठंडा हो जाये तो पिसी शक्कर मिलाएँ (ध्यान रहे गर्म चूरमे में शक्कर न मिलाएँ नहीं तो शक्कर पानी छोड़ देगी और चूरमा सख्त हो जाएगा). इसके साथ ही पिसी इलायची पाउडर, मिश्री, किशमिश, बादाम, काजू का पिसा पाउडर मिलाएँ तथा लड्डू बनाएं. यदि लड्डू बांधने में दिक्कत आ रही हो तो थोड़ा दूध का छिड़काव करें और फिर लड्डू बनाएं. इन्हें आसानी से 8 से 10 दिन तक बिना फ्रीज के रखा जा सकता है.

अब दाल–बाफले और चूरमे के लड्डू तैयार हैं आप परिवार सहित इनका आनंद उठाएँ.

निधि सोनी
क्षे. का., इंदौर

आप की पाती
Opinion Gallery

SPREADING WINGS

The Hon'ble Chairman & Managing Director's perspective touching the critical issues in the Indian banking landscape is very informative. It is good that Union Bank is aiming to raise digital channels share in overall transactions to 75% by March 2017. Further, the launching of an offshore branch at Sydney in Australia recently has added another feather to its cap. The March 2016 issue of Union Dhara is as fabulous as all the previous issues with well packed contents to make a deeply engrossed reading. THANKS AND CONGRATULATIONS .....

Srinivasan Umashankar
Bank of Maharashtra, Nagpur

यूनियन धारा का दिसंबर 2016 अंक प्राप्त हुआ. इसके लिए सादर अभिवादन. जब कोई पत्रिका द्विभाषिक जारी होती है, तो इसकी विशेषता कई गुना बढ़ जाती है क्योंकि तब यह सभी विभागों एवं सभी वर्ग के कर्मचारियों के लिए लाभप्रद सिद्ध होती है. पत्रिका अपने आप में अत्यंत ही रोचक,आकर्षक एवम् महत्वपूर्ण जानकारियों से भरी हुई है. खास तौर से मानव संसाधन से जुड़े तथ्यों पर विशेष प्रकाश डाला गया है जो कि अत्यंत ही उपयोगी हैं. कविताएँ,रोचक कहानियाँ,आर्थिक परिदृश्य से जुड़ी रचनाएं कबिले तारीफ हैं. अंत में, पत्रिका के कवर पेज में जिस एकता को दर्शाया गया है,वह पत्रिक की उत्कृष्टता के लिए संपादकीय टीम की एकता का बोध कराती है. पत्रिका की उत्कृष्टता यूं ही बनाये रखें. पत्रिका के अगले अंक क इंतज़ार हमें बेसब्री से रहेगा.

सुरेश कुलकर्णी
स.म.प्र.,इंडियन ओवरसीज़ बैंक.चेन्नै.

अनगिनत मुश्किल रास्तों की यात्रा करने के बाद भी इस पत्रिका ने कहीं,कभी कोई उदासीनता या शिथिलता नहीं झलकने दी, यह मेरे लिए संतोष की बात रही. कई लोग जो मेरी यात्रा में मेरे साथी रहे, उनकी रचनाओं को पढ़कर रोमांचित हो उठा. पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ मानक स्तर की हैं, निस्संदेह,इसके हर पृष्ठ पर संपादकीय कौशल झलकता है. यूनियन धारा को हर समय पुरस्कार और सम्मान प्राप्त होता रहे, ऐसी मेरी शुभकामना है.

हेमंत कुमार भट्ट
सेवा निवृत्त, यूनियन बैंक

Thank you very much for giving nice coverage for my paper collage art. I am really touched by taking care of me even after retirement of 10 years.

ASHOK S. OULKAR
Belgaum

मुझे आप नियमित रूप से कृपापूर्वक यूनियन धारा की प्रति भेज रहे हैं, इसके लिए बहुत आभार. पत्रिका की सामग्री सुरुचि पूर्ण और पठनीय होती है, इसलिए इसकी प्रतीक्षा भी रहती है. पुनः आभार, शुभकामनाएँ.

आनंद जोशी
डिप्टी एडिटर,राजस्थान पत्रिका, जयपुर

Union Dhara, R. N. 27989/76

झाँकता है व्योम से रवि,
गिरि शृंखलाओं से,
उतर रही है पवन, बादलों के आँचल से,
मद्धिम-मद्धिम;
इन वादियों में, घाटियों में,
बिखरी है,
नयनाभिराम हरियाली,

प्रकृति की सुखद-सम्पदा-
सुरम्य, मनोहर, मतवाली,
शून्य गगन में, मंद पवन है,
शांत सुरों का स्पंदन है,
मुक्त साधना के ठहरे पल,
हर मन्नत का ये वंदन है,
नितांत-शांत-एकांत-विश्रांत-सा...

रामगोपाल सागर
के.का., मुंबई

Printed and published by Savita Sharma on behalf of Union Bank of India and printed at SAP Print Solutions Pvt. Ltd. Lower Parel, Mumbai-400013 and published at Union Bank Bhavan, 239, Vidhan Bhawan Marg, Nariman Point, Mumbai-400021.
Editor -Savita Sharma.